आज़ादी का अमृत महोत्सव

शाश्वत ऊर्जा
इरेडा
IREDA
एक बार इरेडा सदैव इरेडा

अक्षय क्रांति

हिंदी को आगे बढ़ाना है,
उन्नति की राह ले जाना है।
केवल एक दिन ही नहीं,
हमने नित हिंदी दिवस मनाना है।

हिंदी दिवस की शुभकामनाएं

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा सदैव इरेडा

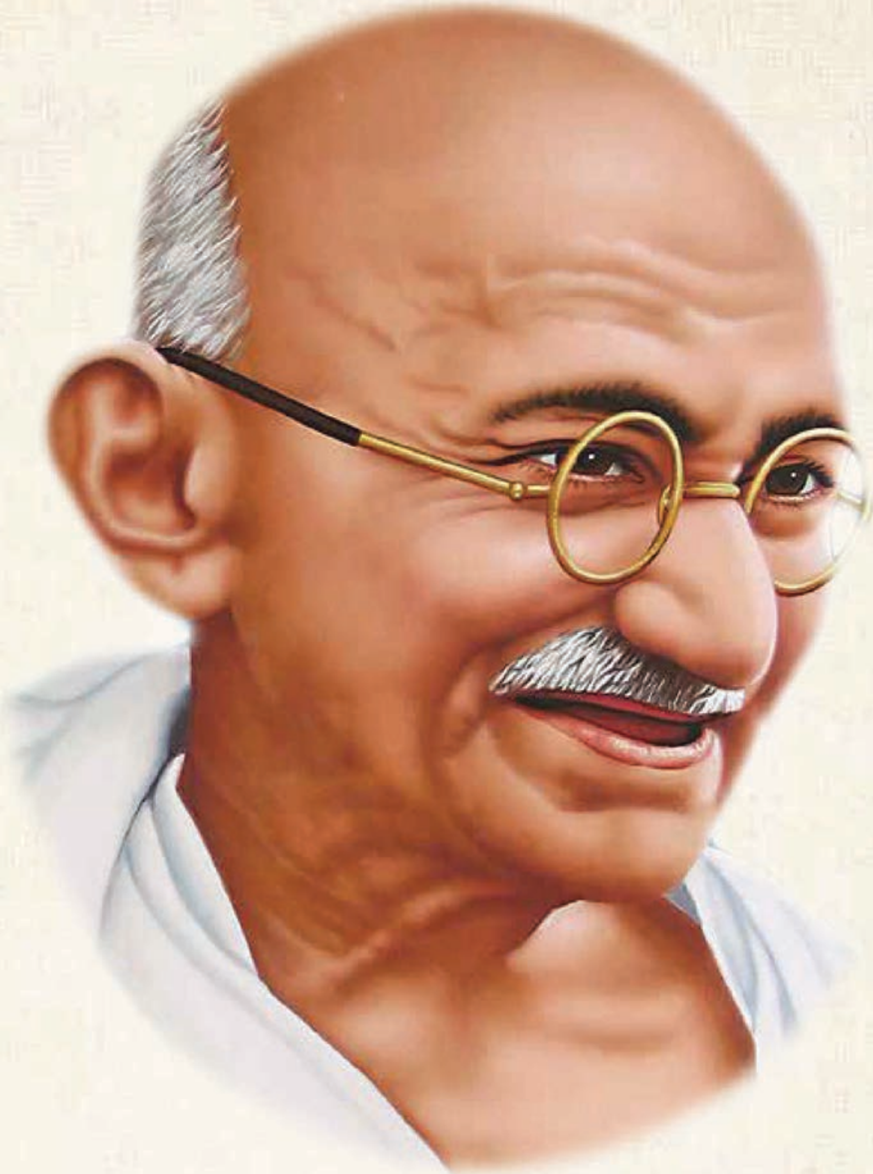

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

हिंदी दिवस
14 सितम्बर

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता

डॉ. पी. श्रीनिवासन
महाप्रबंधक (मा.सं.- नीति एवं रणनीति गतिविधि)

संपादक

श्री नरेश वर्मा
उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन - प्रशासन)

सह-संपादक

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

विशेष सहयोग

श्री आलर कुल्लू, उप प्रबंधक (राजभाषा)
श्रीमती शशि बाला पपनैं, सहायक प्रबंधक (जनरल)
सुश्री तुलसी, वरि. निजी सचिव

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा सदैव इरेडा

नरेन्द्र मोदी (प्रधान मंत्री)

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

हिंदी दिवस
14 सितम्बर

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

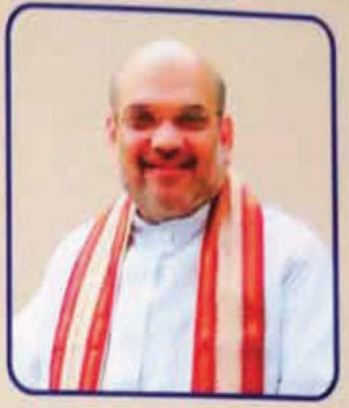

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

आर. के. सिंह
R. K. SINGH

विद्युत मंत्री एवं
नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री
भारत सरकार
Minister of Power and
Minister of New & Renewable Energy
Government of India

Azadi Ka Amrit Mahotsav

सत्यमेव जयते

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भाषा किसी भी देश के सशक्त विकास और भाव अभिव्यक्ति का सबल माध्यम होती है। भाषाओं की दृष्टि से भारत एक समृद्ध देश है। हमारे देश की सभी भाषाएं और बोलियां हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक धरोहर हैं और इनका एक समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास रहा है। देश के नागरिक अपनी स्थानीय भाषा को मातृभाषा के रुप में स्वीकार करते हैं। यह उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को जन संपर्क की भाषा के रुप में अधिकांश जन मानस की भाषा मानते हुए 14 सितम्बर 1949 को भारत संघ की राजकाज की भाषा, अर्थात राजभाषा के रूप में स्वीकार किया और उसके बाद से हर वर्ष इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हम प्रगतिशील भारत के 75 वर्ष पूरे होने और अपनी संस्कृति तथा उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को याद करने के लिए आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। इस अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर राष्ट्रीय एकता की प्रतीक राजभाषा हिंदी तथा हिंदी दिवस का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी कार्य-संस्कृति में राजभाषा हिंदी का समावेश करते हुए सामाजिक और सरकारी कामकाज की हिंदी के अंतर को कम करें और सरकारी कामकाज में आम बोलचाल की भाषा के शब्दों का प्रयोग करें। सरकार की बात जनता तक आम बोलचाल की भाषा में पंहुचे, इसके लिए हमें प्रशासनिक हिंदी को सरल और सहज बनाने पर ध्यान देना होगा जिससे सरकार की नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों को आम जन तक प्रभावी रुप से पहुंचाया जा सकेगा।

मैं, मंत्रालय के साथ-साथ सभी प्रशासनिक नियंत्रणाधीन कार्यालयों में कार्यरत समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों से यह अपील करता हूं कि आप हिंदी को मात्र औपचारिकता तक सीमित न रख कर अपने दैनिक सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करते हुए अपने संवैधानिक दायित्वों का पालन करें।

एक बार फिर से हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय तथा इसके सभी प्रशासनिक नियंत्रणाधीन कार्यालयों के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद ! जय भारत !

(आर.के. सिंह)

नई दिल्ली
14 सितम्बर, 2022

Atal Akshay Urja Bhawan, Opp. CGO Complex, Lodhi Road, New Delhi-110003
Tel.: +91-11-20849102, 20849103, Fax : +91-11-20849101 E-mail : raj.ksingh@gov.in

भगवंत खुबा
ಭಗವಂತ ಖೂಬಾ
BHAGWANTH KHUBA

सत्यमेव जयते

रसायन एवं उर्वरक एवं
नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री
भारत सरकार
Minister of State
Chemicals & Fertilizers and
New & Renewable Energy
Government of India

संदेश

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर सभी को मेरी हार्दिक बधाई ।

हमारा भारत सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषायी विविधताओं वाला देश है। हमारी संस्कृति के गोमुख से निकली सब भारतीय भाषाएं हमारी अपनी हैं। भाषायी एकता से ही राष्ट्र की अखंडता मजबूत होती है। हिंदी सदियों से राष्ट्रीय एकता का प्रतिनिधित्व करती आ रही है । आज हिंदी भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ ही भारत के संविधान में उल्लिखित भावात्मक एकता का मजबूत माध्यम भी है।

हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर 1949 को धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक परम्पराओं को जोड़ने वाली और अधिकांश देशवासियों द्वारा बोली व समझी जाने वाली हिंदी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया था। इसके लिए संविधान के भाग-17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक प्रावधान किए गए। देश की सभी प्रमुख प्रांतीय भाषाओं को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल करके उन्हें राष्ट्रीय महत्व की भाषाओं का दर्जा दिया गया।

हमारा भी यह कर्त्तव्य बन जाता है कि जिस प्रयोजन के लिए हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था, उस प्रयोजन को पूरा करने के लिए हम सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढाएं। निस्संदेह आज हिंदी का प्रयोग बढा है, लेकिन अभी आदर्श स्थिति नहीं है । आदर्श स्थिति तो तब होगी जब हम सरकारी कामकाज में स्वेच्छा से बेझिझक हिंदी का प्रयोग करेंगे, टिप्पणियां और मसौदे मूल रुप से हिंदी में ही लिखेंगे। यही भारत सरकार की राजभाषा नीति भी है और राजभाषा के संबंध में हमारा संवैधानिक दायित्व भी है।

तो आइए, हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर हम सब संकल्प लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रुप से पालन करेंगे और सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करके अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करेंगे।

पुन: हिंदी दिवस की शुभकामनाओं के साथ।

(भगवंत खुबा)

Chemicals & Fertilizers : Room No. 315, 'A'-Wing Shastri Bhawan, New Delhi-110001 Tel : 011- 23382364, 23383686, 23381768
Fax : 011-23381713, E-mail : mos-mocf@nic.in
New & Renewable Energy : Room No. 202, IInd Floor, 14 Block, CGO Complex, New Delhi - 110003, Tel. : 011-24360359

प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा

संदेश

इरेडा परिवार के मेरे प्रिय साथियों,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सबको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

हम गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा के कार्यान्वयन के बारे में समय–समय पर दिए गए दिशा–निर्देशों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे हैं। यह हर्ष का विषय है कि इरेडा में सरकारी काम–काज हिंदी में किए जाने में सतत रूप से प्रगति हो रही है और इसकी सराहना मंत्रालय, राजभाषा विभाग नराकास के द्वारा भी की गई है। हिंदी पखवाड़े में हिंदी प्रतियोगिताओं तथा हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया जा रहा है।

इरेडा में हिंदी कार्यान्वयन और अनुपालन से संबंधित गतिविधियों का आयोजन वर्ष भर किया जाता है। इन गतिविधियों से कार्यालय में हिंदीमय वातावरण का निर्माण होता है और कर्मियों की हिंदी के प्रति अभिरूचि जागृत होती है। इसी दिशा में इरेडा की 'ई–पत्रिका' कई वर्षों से प्रकाशित की जा रही है जिसमें विभिन्न साहित्यिक, सामाजिक–आर्थिक और राष्ट्रीय आयामों का समावेश कर हर अंक को नए रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। ई–पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं सभी इरेडा कर्मियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस पत्रिका को पढ़कर लाभान्वित हों और इसके आगामी अंक को और अधिक रोचक बनाने के लिए अपने–अपने लेखों रचनाओं का योगदान अवश्य दें। राजभाषा की गतिविधियों और इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन, राजभाषा के प्रति अपने अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों के सक्रिय सहभागिता का परिणाम है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश अमृत महोत्सव मना रहा है ऐसे में हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

मुझे विश्वास है इरेडा की 'ई–पत्रिका' 'अक्षय क्रांति' जहां एक ओर कार्मिकों को रचनात्मक क्षमता को प्रोत्साहन देती है वहीं दूसरी ओर हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करती है।

'अक्षय क्रांति' पत्रिका के आगामी ई–अंक हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें ...

राजभाषा कार्यान्वयन

क्या करें और क्या न करें / Do's & Don'ts

क्या करें	Do's
सुनिश्चित करें कि सभी सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञप्तियां, लाइसेंस, परमिट, नोटिस एवं निविदाएं आदि दस्तावेज राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुपालन में अनिवार्य रूप से द्विभाषी में जारी किए जा रहे हैं ।	Ensure that all documents like; General Orders, Rules, Notifications, Press Communiques, Licenses, Permits, Notice and Forms of Tenders are issued in bilingual in due compliance of Section 3 (3) of Official Language Act 1963.
फाइलों पर टिप्पणियां हिंदी में लिखें ।	Write notings on files in Hindi.
हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दें ।	Letter received in Hindi must be replied to in Hindi.
हिंदी में प्रेषित पत्रों पर हिंदी में ही हस्ताक्षर करें ।	Signature on Hindi letters must be in Hindi.
कार्यालयी पत्राचार में हिंदी में ही हस्ताक्षर करें ।	Put your signature in Hindi in Official correspondences.
हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान न रखने वाले कर्मचारियों को हिंदी प्रशिक्षण के लिए नामित करें ।	Nominate the employees for Hindi Training, who do not possess working knowledge of Hindi.
अपने विभाग के सभी साइन बोर्ड, बैनर, नाम पट्ट, विजिटिंग कार्ड, मोहरें आदि द्विभाषी (हिंदी, अंग्रेजी के क्रम में) तैयार कराएं ।	Prepare all Sign Boards, Banners, Name Plates, Visiting Cards, Rubber Stamps etc. of your department in bilingual (in order of Hindi & English)
सभी अग्रेषण पत्र, पावती, अनुस्मारक तथा अन्य छोटे-छोटे पत्र आवश्यक रूप से द्विभाषी में भेजें ।	All forwarding letters, acknowledgement, reminders and other small letters must be sent in bilingual.
सभी बैठकों में बातचीत/वार्तालाप हिंदी में करें ।	Discussion/Conversation in all meeting should be in Hindi.
हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं प्रतियोगिताओं में उत्साह पूर्वक भाग लें और अन्य सहकर्मियों को भी इनमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें	Participate enthusiastically in all Hindi Training Programmes, workshop & Competitions and encourage other colleagues for participation.
क्या न करें	**Don'ts**
किसी भी प्रकार के स्टेशनरी की छपाई केवल अंग्रेजी में न कराएं ।	Don't get printed any stationary in English Only.
हिंदी में प्राप्त या हिंदी में हस्ताक्षरित पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में न दें ।	Don't reply any letter in English received in Hindi or signed in Hindi.
कोई भी रबड़ की मोहर तथा विजिटिंग कार्ड केवल अंग्रेजी में न तैयार कराएं ।	Don't get printed the Rubber Stamps & Visiting Cards in English only.
सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने वाले कर्मचारियों को हतोत्साहित न करें ।	Don't Discourage the employees doing official work in Hindi

"हिंदी राष्ट्रीय एकता की कड़ी है।"
– डॉ. जाकिर हुसैन

इरेडा का मिशन

''स्थायी विकास के लिए अक्षय स्रोतों द्वारा ऊर्जा उत्पाादन, ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में आत्म निर्भर निवेश को प्रोत्साहित व वित्तापोषित करने वाली एक अग्रणी, प्रतिभागियों की हितैषी एवं प्रतियोगी संस्था के रूप में बने रहना।''

इरेडा के मुख्य उद्देश्य

क. नए एवं अक्षय स्रोतों के जरिए विद्युत और / या ऊर्जा का उत्पादन करने और ऊर्जा दक्षता के माध्यम से ऊर्जा का संरक्षण करने के लिए विशिष्ट परियोजना एवं योजना को वित्तीय सहायता प्रदान करना।

ख. अक्षय ऊर्जा एवं ऊर्जा दक्षता/संरक्षण परियोजनाओं में दक्ष एवं प्रभावी वित्तपोषण प्रदान करने के लिए अग्रणी संगठन के रूप में अपनी स्थिति को बनाए रखना।

ग. अभिनव वित्तपोषण द्वारा अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में इरेडा की हिस्सेदारी बढ़ाना।

घ. प्रणालियों, प्रक्रियाओं एवं संस्थानों में निरंतर सुधार के जरिए ग्राहकों को प्रदान की गई सेवाओं की दक्षता में सुधार करना।

ङ. ग्राहक संतुष्टि के माध्यम से प्रतियोगी संस्थान बनने का प्रयास करना।

गुणवत्ता नीति

इरेडा अपने उपभोक्ताओं को पूर्ण संतुष्टि एवं पारदर्शिता प्रदान करने के लिए दक्ष प्रणाली एवं प्रक्रियाओं के जरिए अक्षय ऊर्जा एवं ऊर्जा दक्षता/संरक्षण में अभिनव वित्त पोषण प्रदान करने के लिए एक अग्रणी संगठन के रूप में अपनी स्थिति कायम रखने के लिए प्रतिबद्ध है।
इरेडा गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के जरिए अपने उपभोक्ताओं को दी जाने वाली सेवाओं के गुणवत्ता में लगातार सुधार के लिए प्रयास करेगी।

गुणवत्ता उद्देश्य

क. – उपभोक्ता की पूर्ण संतुष्टि के लिए प्रयास करना।

ख. – क्षमता में निरंतर उन्नयन और कर्मचारियों के पेशेवर कौशलों में सुधार।

ग. – उपभोक्ताओं को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की दक्षता में सुधार।

घ. – प्रणालियों, प्रक्रियाओं एवं सेवाओं में निरंतर सुधार।

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	लेख रचिता श्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1	स्थिरप्रज्ञ	लेख	डॉ. पी.श्रीनिवासन	01
2	परहित	लेख	संगीता श्रीवास्तव	03
3	जन्नते कश्मीर की दीदार	यात्रा वृत्तांत	आलर कुल्लू	07
4	कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व – (सी.एस.आर) को समझना	लेख	पीयूष अग्रवाल	13
5	बेचारा रिटायर्ड व्यक्ति क्या करे ?	कविता	अशोक कुमार भिलवारिया	16
6	कनेक्टिंग पीपल टू नेचर	लेख	मीतू माथुर	18
7	नेताजी सुभाष चन्द्र बोस	लेख	प्रवीण कुमार झा	20
8	आजादी का अमृत महोत्सव	लेख	प्रसून कुमार झा	23
9	शहीदों की अमर कथा'	लेख	डॉ. हीरा मीणा	26
10	उलगुलान के महानायक 'धरती आबा' बिरसा मुंडा के बलिदान दिवस	लेख	आकांक्षा जी खोडा	30
11	'शहीदों की अमर कथा'	लेख	डॉ. गौतम कुमार मीणा	34
12	तकदीर	कविता	श्री गोकुलनन्दा बेहेरा	43
13	बदलाव	कविता	श्री गिरीश चन्द्र शर्मा,	44
14	पिता	कविता	जितेन्द्र मिश्रा	46
15	आजादी के अमृत महोत्सव में राजभाषा	लेख	प्रतीक साव	47
16	गर्व	लेख	रमेश चंद	51
17	मित्रता एक अनमोल रतन	कविता	मनीष कुमार देव	57
18	गर्मियों के मौसम के डाइट	लेख	ज्ञान प्रकाश रंजन	58

डॉ. पी.श्रीनिवासन
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

स्थिरप्रज्ञ

जीवन तब बेहतर होता है जब आप इसे अपने आस–पास हो रही घटनाओं पर केंद्रित नहीं करते बल्कि इसे अपने भीतर हो रही घटनाओं पर केन्द्रित करते हैं। हर छोटी–छोटी बात पर प्रतिक्रिया न देना जो आपको परेशान करती है, एक सुखी और स्वस्थ जीवन का पहला घटक है। हर बात का स्पष्टीकरण मिलना संभव नहीं है।

भगवद गीता स्थिर ज्ञान वाले व्यक्ति की विशेषताओं का वर्णन करती है। जिसका मन दुखों में अशांत रहता है, जो सुखों में उत्तेजित नहीं होता और जो आसक्ति, भय और क्रोध से मुक्त है – ऐसे व्यक्ति को स्थिर बुद्धि का ऋषि कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, एक सिद्ध आत्मा न केवल एक बाहरी संयम प्राप्त करती है बल्कि आंतरिक त्याग भी प्राप्त करती है। वह न केवल शरीर पर बल्कि मन पर भी पूर्ण नियंत्रण में रहता है। जब कोई अपने मन की सभी इच्छाओं को त्याग देता है और जब उसकी आत्मा संतुष्ट होती है, तो उसे स्थिर ज्ञानी, स्थिरप्रज्ञ कहा जाता है। स्थि का अर्थ है स्थिर और प्रज्ञा का अर्थ है ज्ञान। स्थिप्रज्ञ का तात्पर्य स्थिर ज्ञान वाले व्यक्ति से है, जिसने सत्य को भीतर से अनुभव किया है। उपरोक्त विवरण का अर्थ यह नहीं है कि स्थिर बुद्धि वाला व्यक्ति अपने जीवन का आनंद नहीं ले रहा है। दूसरी ओर, ऐसी विकसित आत्मा जीवन का अधिक आनंद लेती है क्योंकि उसे भीतर से आनंद मिलता है। उसका सुख लंबे समय तक चलने वाला है क्योंकि यह बाहरी वस्तुओं या बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करता है। यह सभी पर लागू होता है, चाहे उसका पेशा कुछ भी हो। क्या सभी के लिए इस अवस्था को प्राप्त करना संभव है? यह निश्चित रूप से कठिन है लेकिन संभव है। इसलिए कोई कोशिश कर सकता है। जब ऐसा रवैया किसी के जीवन में स्वतःस्फूर्त हो जाता है, तो वह निराशा से आशा की ओर बढ़ता है। वह संकट से आनंद की ओर बढ़ता है।

राम अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अयोध्या पहुंचे। दशरथ राम के राज्याभिषेक के लिए एक तारीख तय करते हैं और राम को इसकी घोषणा करते हैं। इस बीच, कैकेयी ने दशरथ को उनके द्वारा किए गए वादों के बारे में याद दिलाया और राम को चौदह साल के लिए जंगल में भेजने का आग्रह किया। जब राम को इसकी घोषणा की गई, तो वे उसी तरह से थे जैसे वे अपने राज्याभिषेक समाचार प्राप्त कर रहे थे। उन्हें श्मर्यथा पुरुष उत्तम (आदरणीय महान व्यक्ति) के रूप में वर्णित किया गया है, क्योंकि उनकी भावनात्मक स्थिरता हर स्थिति में स्थिर थी।

जब बुद्ध अपने शिष्य के साथ एक नाविक से नदी पार करने में उनकी मदद करने का अनुरोध कर रहे थे, तो नाविक ने उन्हें गंदी भाषा से गाली दी। व्याकुल शिष्य ने बुद्ध को समभाव में देखा। शिष्य बुद्ध से उनके रचित स्वभाव के बारे में पूछता है। बुद्ध ने अपना थैला अपने शिष्य को दिया और उससे कहा कि यदि उसने थैला स्वीकार कर लिया तो वह उसका थैला बन जाता है अन्यथा वह देनेवाला का ही होता है।

किसी भी स्थिति में भावनात्मक स्थिरता व्यक्ति को पूर्ण नियंत्रण देती है। नकारात्मक टिप्पणियां दुर्व्यवहार और चापलूसी सकारात्मक टिप्पणियां एक स्थिरता खोने का कारण नहीं होनी चाहिए। स्तुति या प्रतिकूलता को उसी मनःस्थिति में लेना चाहिए।

अगर आपको लगता है कि कुछ आपके नियंत्रण में है, तो परेशान न हों। अगर आपको लगता है कि कुछ आपके नियंत्रण में नहीं है, तो फिर आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। हमेशा खिलाड़ी होना चाहिए। हर खेल में दर्शक ही शोर मचाते हैं। अपने आप पर विश्वास करें और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें।

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

परहित

समाज के सभी प्रबुद्ध एवं विचारशील व्यक्ति इस मत से सहमत हैं कि प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह सम्पूर्ण समाज की बेहतरी के लिए यथासम्भव प्रयत्न करे। सभी व्यक्तियों के कल्याण में ही प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण छिपा है। किसी समाज का वृहत स्तर पर कल्याण होने से तात्पर्य उस समाज के प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण होने से है। किसी भी समाज का अस्तित्व समाज के सदस्यों पर ही टिका होता है। सदस्यों के सामाजिक सम्बन्धों के जाल को ही समाज कहते हैं अर्थात समाज का निर्माण ही सदस्यों के बीच की अन्तःक्रिया से होता है, इसलिए समाज एवं व्यक्ति दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। व्यष्टि स्तर पर व्यक्ति, तो समष्टि स्तर पर समाज। यदि कोई व्यक्ति किसी भी अन्य व्यक्ति के प्रति परोपकार या परहित की भावना के साथ व्यवहार करता है, तो अन्ततः वह ऐसा समाज के प्रति ही कर रहा होता है। मनुष्य में तो अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के आरम्भ से ही सहकारी प्रवृत्ति निहित है। उसने प्रारम्भ से ही दूसरों के दुःख–दर्द को अपना समझा है और सामूहिक स्तर पर सम्मिलित रूप से उसे दूर करने की कोशिश की है, साथ–साथ रहने की प्रक्रिया में पनपी आत्मीयता की भावना ने उसे एक–दूसरे के साथ भावनात्मक रूप से सुदृढ़ किया। आत्मीयता, लगाव, स्नेह, प्रेम, भाईचारा जैसी विशिष्ट मानवीय प्रवृत्तियाँ मनुष्य को प्रकृति की नैसर्गिक देन हैं। यदि कोई मनुष्य इस नैसर्गिक प्रवृत्ति को विकृत करने की कोशिश करता है, तो यह प्रकृति एवं मानव समाज दोनों के प्रति नैतिक दृष्टि से अपराध है। इन सबके बावजूद समाज के अनेक सदस्य अपने संकीर्ण स्वार्थों की पूर्ति हेतु समाज की अनेक मर्यादाओं का उल्लंघन करते हैं, उनमें से एक परहित की चिन्ता या परोपकार की भावना का त्याग करना भी है। परोपकार की भावना से रहित मनुष्य पशु या जड़ के समान है। परोपकार की भावना का सन्देश तो हमें जड़ एवं चेतन प्रकृति भी देती है–

"वृच्छ कबहुँ न फल भखैं नदी न सँचौ नीर।
परमारथ के कारनै साधुन धरा सरीर।।"

जड़ प्रकृति के अन्तर्गत सूर्य, चन्द्रमा, नदी, वायु आदि, तो चेतन प्रकृति के अन्तर्गत पेड़–पौधे अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरी के लिए अपना जीवन जीते हैं। मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों के कल्याण पर भी ध्यान दे। जो व्यक्ति दुःखी व्यक्तियों की करुण पुकार से अशक्त एवं असहाय व्यक्तियों की याचनापूर्ण करुण दृष्टि से विचलित या प्रभावित न हो, वह मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं

है। उसमें एवं पशु में अधिक अन्तर नहीं होता। व्यक्ति "स्व" की सीमित संकीर्ण भावनाओं की सीमा से निकलकर "पर" के उदात्त धरातल पर खड़ा होता है, इससे उसकी आत्मा का विस्तार होता है और वह जन–जन के कल्याण की ओर अग्रसर होता है। प्रकृति सृष्टि की नियामक है, जिसने अनेक प्रकार की प्रजातियों की रचना की है और उन सभी प्रजातियों में सर्वश्रेष्ठ प्रजाति मनुष्य है, क्योंकि विवेकशील मनुष्य जाति सिर्फ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह स्वयं से परे अन्य लोगों की आवश्यकताओं की भी उतनी ही चिन्ता करती है, जितनी स्वयं की। इसी का परिणाम मनुष्य की सतत विचारशील, मननशील एवं अग्रगामी दृष्टिकोण सम्बन्धी मानसिकता के रूप में देखा जा सकता है। प्रकृति के अधिकांश जीव सिर्फ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तक ही स्वयं को सीमित रखते हैं, अपनी एवं अपने बच्चों की उदरपूर्ति के अतिरिक्त उन्हें किसी अन्य की चिन्ता नहीं रहती, लेकिन मनुष्य स्वयं के साथ–साथ न सिर्फ अपने परिवार, बल्कि पूरे समाज को साथ लेकर चलता है एवं उनके हितों के प्रति चिन्तित रहता है। मनुष्य की यही भावना उसे भ्रातृत्व की भावना से जोड़ती है। विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास ही अन्ततः विश्व शान्ति एवं प्रेम की स्थापना को सम्भव कर सकता है। किसी भी समाज के सभी प्रबुद्ध व्यक्तियों का सपना एक ऐसे आदर्श समाज की स्थापना होता है, जहाँ मानव–मानव के बीच किसी प्रकार का कोई भेदभाव न रहे। मनुष्य की बस एक ही जाति हो मनुष्यता की, उसका सिर्फ एक ही धर्म हो इंसानियत का, उसका सिर्फ एक ही नारा हो मानवीयता का। समतामूलक एवं मानव के प्रति गरिमायुक्त व्यवहार जिस समाज की रग–रग में व्याप्त होगा, वह समाज धरती पर स्वर्गतुल्य हो जाएगा।

मानव के प्रति समानता एवं गरिमापूर्ण व्यवहार सिर्फ उस मानसिकता की उपज हो सकती है, जो वैश्विक स्तर पर सभी मनुष्यों को न केवल समान समझे, बल्कि मनुष्य–मनुष्य के बीच किसी भी प्रकार की असमानता को अतार्किक एवं हेय समझे। जो व्यक्ति जीव के अन्दर ही ईश्वर का अंश देखता है, मनुष्य को ईश्वर की साक्षात कृति समझता है, उसे न सिर्फ धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि वैज्ञानिक एवं भौतिकवादी दृष्टिकोण से भी मनुष्य–मनुष्य के बीच अन्तर करने का कोई औचित्य नजर नहीं आता। धार्मिक दृषटि से मनुष्य को ईश्वर की रचना या अंश मानने का श्रेष्ठ परिणाम यह होता है कि मनुष्य किसी भी मनुष्य को उचित सम्मान एवं गरिमा प्रदान करने के लिए नैतिक रूप से बाध्य रहता है। नैतिकता सम्बन्धी बाध्यता उसे व्यवहार में दूसरे मनुष्यों की चिन्ता, उनके हितों की पूर्ति हेतु सार्थक प्रयत्न करने की ओर अग्रसर करती है। वह मानव जाति में उत्पन्न होकर भी पशु के समान ही होता है। उसे प्रकृति की भूल के रूप में देखा जाना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को सामाजिक बहिष्कार के दण्ड से दण्डित किया जाना चाहिए, जिससे मनुष्य–मनुष्य के बीच की सहयोगात्मक आवश्यकता का उसे भी अनुभव हो सके। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए कदम–कदम पर उसे एक–दूसरे के सहयोग एवं समर्थन की आवश्यकता पड़ती है। पारस्परिक सहयोग एवं समर्थन देना ही एक–दूसरे की सहायता करना, परोपकार करना एवं आपसी परोपकार में निहित गुण– परोपकार दो प्रकार से किया जा सकता है– धन द्वारा व शरीर दवारा। इस रूप में त्यागी का महत्त्व दानी से अधिक होता है क्योंकि धनी व्यक्ति दान करता है क्योंकि उसके पास धन की कोई कमी नहीं होती। इस दान भावना में उसका स्वार्थ भी छिपा होता है किन्तु त्यागी व्यक्ति अपने शरीर को कष्ट देकर दूसरों का हित करता है। ऐसे में उसका अपना कोई स्वार्थ नहीं होता वरन वह तो अपनी आत्मा से प्रेरणा पाकर दूसरों की सहायता करता है। इस प्रकार परोपकार की सच्ची सार्थकता इसी में है कि वह स्वार्थ के वशीभूत न होकर दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करे। दूसरों का कल्याण करने से उसका अपना

कल्याण भी हो जाता है। जिस व्यक्ति का हृदय दूसरों के दुखों से दुखी नहीं होता, जिसके कानों में बीमार, अबलाओं, निर्धनों, बेसहारों की याचना भरी आवाज सुनाई नहीं पड़ती, जो दूसरों के कटे–फटे वस्त्र, नंगे शरीर नहीं देख पाता, जिसके हाथ–पैर दूसरों की सहायता के लिए नहीं बढ़ते, वह इन्सान नहीं, जानवर होता है, वह नर नहीं पशु, मूढ और मृतक समान है। यदि धन है तो निर्धनों में बॉटों, यदि बल है तो अबलाओं, गरीबों की सहायता करो, यदि मन है तो अज्ञानता दूर करो यदि हृदय है तो खुले हृदय से सबकी सहायता करो। जो "तन, मन, धन" से दूसरों की सहायता करता है, वही महान है। भर्तहरि ने भी लिखा है– "परोपकाराय सतां विभूतयः।" सुख–दुरूख की भाजीवन के उत्कर्ष का, सिर्फ एक सिद्धांत प्रेम समन्वय एकता ,ज्ञान और वेदांत। वनाओं में सम्मिलित होना है।

वृच्छ कबहुँ नहीं फल भखें, नदी न संचौ नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर।।

परोपकार के अनेक उदाहरण-

इतिहास एवं पुराणों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिनको पढ़ने से यह विदित होता है कि परोपकार के लिए महान व्यक्तियों ने अपने शरीर तक का त्याग कर दिया। पुराण में एक कथा आती है कि एक बार वृत्रासुर नामक महाप्रतापी राक्षस का अत्याचार बहुत बढ़ गया था। चारों ओर त्राहि–त्राहि मच गई थी। उसका वध दधीचि ऋषि की अस्थियों से निर्मित वज्र से ही हो सकता था। उसके अत्याचारों से दुरूखी होकर देवराज इन्द्र दधीचि की सेवा में उपस्थित हुए और उनसे उनकी अस्थियों के लिए याचना की। महर्षि दधीचि ने प्राणायाम के द्वारा अपना शरीर त्याग दिया और इन्द्र ने उनकी अस्थियों से बनाए गए वज्र से वृत्रासुर का वध किया। इसी प्रकार महाराज शिबि ने एक कबूतर के प्राण बचाने के लिए अपने शरीर का मांस भी दे दिया। सचमुच वे महान पुरुष धन्य हैं; जिन्होंने परोपकार के लिए अपसंसार के कितने ही महान् कार्य परोपकार की भावना के फलस्वरूप ही सम्पन्न हुए हैं। महान देशभक्तों ने परोपकार की भावना से प्रेरित होकर ही अपने प्राणों की बलि दे दी। उनके हृदय में देशवासियों की कल्याण–कामना ही निहित थी। हमारे देश के अनेक महान सन्तों ने भी लोक–कल्याण की भावना से प्रेरित होकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन "सर्वजन हिताय" समर्पित कर दिया। महान वैज्ञानिकों ने अपने आविष्कारों से जन–जन का कल्याण किया है।

परोपकार के लाभ-

परोपकार की भावना से मानव के व्यक्तित्व का विकास होता है। परोपकार की भावना का उदय होने पर मानव "स्व" की सीमित परिधि से ऊपर उठकर "पर" के विषय में सोचता है। इस प्रकार उसकी आत्मिक शक्ति का विस्तार होता है और वह जन–जन के कल्याण की ओर अग्रसर होता है। परोपकार भातृत्व भाव का भी परिचायक है। परोपकार की भावना ही आगे बढ़कर विश्वबन्धुत्व के रूप में परिणत होती है। यदि सभी लोग परहित की बात सोचते रहें तो परस्पर भाईचारे की भावना में वृद्धि होगी और सभी प्रकार के लड़ाई–झगड़े स्वतः ही समाप्त हो जाएँगे। ने शरीर एवं प्राणों की भी चिन्ता नपरोपकार से मानव को अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है। इसका अनुभव सहज में ही किया जा सकता है। यदि हम किसी व्यक्ति को संकट से उबारें, किसी भूखे को भोजन दें अथवा किसी नंगे व्यक्ति को वस्त्र दें तो इससे हमें स्वाभाविक आनन्द की प्राप्ति होगी। हमारी संस्कृति में परोपकार को पुण्य तथा परपीड़न को पाप माना गया है

"परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम"

परोपकार के विभिन्न रूप

परोपकार की भावना अनेक रूपों में प्रकट होती दिखाई पड़ती है। धर्मशालाओं, धर्मार्थ औषधालयों एवं जलाशयों आदि का निर्माण तथा भूमि, भोजन, वस्त्र आदि का दान परोपकार के ही विभिन्न रूप हैं। इनके पीछे सर्वजन हिताय एवं प्राणिमात्र के प्रति प्रेम की भावना निहित रहती है। परोपकार की भावना केवल मनुष्यों के कल्याण तक ही सीमित नहीं है, इसका क्षेत्र समस्त प्राणियों के हितार्थ किए जानेवाले समस्त प्रकार के कार्यों तक विस्तृत है। अनेक धर्मात्मा गायों के संरक्षण के लिए गोशालाओं तथा पशुओं के जल पीने के लिए हौजों का निर्माण कराते हैं। यहाँ तक कि बहुत–से लोग बन्दरों को चने खिलाते हैं तथा चींटियों के बिलों पर शक्कर अथवा आटा डालते हुए दिखाई पड़ते हैं। परोपकार में "सर्वभूतहिते रतः" की भावना विद्यमान है। गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाए तो संसार के सभी प्राणी परमपिता परमात्मा के ही अंश हैं; अतः हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम सभी प्राणियों के हित–चिन्तन में रत रहें। यदि सभी लोग इस भावना का अनुसरण करें तो संसार से शीघ्र ही दुरूख एवं दरिद्रता का लोप हो जाएगा।

उपसंहार-

परोपकारी व्यक्तियों का जीवन आदर्श माना जाता है। उनका यश चिरकाल तक स्थायी रहता है। मानव स्वभावतः यश की कामना करता है। परोपकार के दवारा उसे समाज में सम्मान तथा स्थायी यश की प्राप्ति हो सकती है। महर्षि दधीचि, महाराज शिबि, हरिश्चन्द्र, राजा रन्तिदेव जैसे पौराणिक चरित्र आज भी अपने परोपकार के कारण ही याद किए जाते हैं। परोपकार से राष्ट्र का चरित्र जाना जाता है। जिस समाज में जितने अधिक परोपकारी व्यक्ति होंगे, वह उतना ही सुखी होगा। समाज में सुख–शान्ति के विकास के लिए परोपकार की भावना के विकास की परम आवश्यकता है। इस दृष्टि से गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में यह कहना भी उपयुक्त ही होगा परहित सरिस धर्म नहिं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई। अर्थात्त परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है और परपीड़ा के समान कोई पाप नहीं हीं की।

रहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

परोपकार से बढ़कर कोई उत्तम कर्म नहीं और दूसरों को कष्ट देने से बढ़कर कोई नीच कर्म नहीं। परोपकार की भावना ही वास्तव में मनुष्य को "मनुष्य" बनाती है। कभी किसी भूखे व्यक्ति को खाना खिलाते समय चेहरे पर व्याप्त सन्तुष्टि के भाव से जिस असीम आनन्द की प्राप्ति होती है, वह अवर्णनीय है। किसी वास्तविक अभावग्रस्त व्यक्ति की निःस्वार्थ भाव से अभाव की पूर्ति करने के बाद जो सन्तुष्टि प्राप्त होती है, बह अकथनीय है। परोपकार से मानव के व्यक्तित्व का विकास होता है।

आलर कुल्लू
उप प्रबंधक (राजभाषा) इरेडा

जन्नते कश्मीर की दीदार

किसी भी देश या राज्य का विकास या प्रगति ज्ञान–विज्ञान, प्रौद्योगिकियँ, ऊर्जा, कृषि, कल–कारखाने, साहित्य आदि की रचनाएँ राजनीतिक और सैनिक बल, अध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक आदि तक ही सीमित नहीं रह सकते, बल्कि विकसित होते देश के मनसूबों का प्रभाव व्यक्ति के जीवन–शैली के विभिन्न पहलुओं पर भी दिखाई पड़ती है। इसी क्रम में सैर–सपाटे, पर्यटन, सहासिक यात्रायें भी इसी जीवन का हिस्सा है। देश–देशान्तर की साहसिक यात्रायें प्रत्येक व्यक्ति के करने की बात नहीं है। हमारा देश भारत विभिन्नताओं का देश है यहॉ एक से बढ़कर एक विश्व प्रसिद्ध दर्शनीय पर्यटन स्थान है।

साल 2012 की बात है, इरेडा द्वारा मुझे केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, सीजीओ काम्प्लेक्स, नई दिल्ली में तीन माह की पूर्णकालिक हिंदी अनुवाद की प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में नामित किया गया था। भारत सरकार के राजभाषा नियम और अधिनियम के अनुसार केन्द्र सरकार के मंत्रालयों, कार्यालयों और कम्पनियों आदि में कार्यरत् सभी हिंदी अनुवादकों के लिए तीन माह का प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक होता है, इसी तहत मुझे भी जनवरी–मार्च, 2012 वर्ष के लिए नामित किया गया था। प्रशिक्षण के प्रथम दिन हम–सब प्रशिक्षुओं के आपसी–परिचय के साथ प्रारंभ हुआ। मेरे साथ करीब–करीब तीस पैंतीस प्रशिक्षुगण थे जो भारत सरकार के नियंत्राधीन विभिन्न कार्यालयों मंत्रालयों और कम्पनियों से कोई अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, यूपी, राजस्थान, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, पंजाब आदि से आए थे। हमारे एक सह प्रशिक्षु श्री फूलसिंह लोधी, हिंदी अनुवादक, केन्द्रीय शिल्क एवं रेशम उत्पादन अनुसंधान पम्पोर, कश्मीर से भी आए हुए थे। वैसे तो रहनेवाले उज्जैन, मध्यप्रदेश जो विश्व प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर के लिए विख्यात है। यह महाकालेश्वर मंदिर भारत के बारह ज्योतिर्लिगों में से एक है। इस मंदिर का वर्णन पुराणों, महाभारत और कालिदास जैसे महान कवियों की रचनाओं में मिलता है।

श्री फूलसिंह लोधी जो कश्मीर से आये थे मेरी मित्रता हो गई, वे शालीनता, वाकपटुता, सौहार्दपर्ण व्यक्तित्व से परिपूर्ण। मित्रता बनाना आदमी का एक विशेष गुण है। मित्रता या दोस्ती दो या अधिक व्यक्तियों के बीच पारस्परिक लगाव का संबंध है। जब दो दिल एक–दूसरे के लिए सच्ची आत्मीयता से भरे होते हैं। यह स्वार्थ या परमार्थ या व्यवसाय आदि के लिए भी होता है।

अकसर लोग कहा करते हैं कि यदि इस धरती में कहीं जन्नत है, स्वर्ग है तो कश्मीर में ही है। किन्तु आये दिन समाचारों में टी.वी. चौनलों में समाचार मिलते ही रहते हैं कि पूंछ राजौरी में आतंकवादी घुसपैठ, श्रीनगर के आर्मी कैंप में आतंकवादी हमला, तीन आतंकवादी मारे गए, बदकिस्मत से गोली–बारी में कश्मीर के नागरिक मरे और तो और भारत और पाकिस्तान के बीच हाल ही के वर्षों में हुई युद्ध को कौन भूल सकता है ! सैकड़ों सैनिक युद्ध में मारे गए, कितनों के घर गृहस्थी उजड़ गई। ये जानकर, ये सुनकर भला कौन सिर में कफन बांधकर जम्मू–कश्मीर की वादियों का दर्शन करने चाहेगा ?

एक दिन सहसा ही मैंने कहा– "दोस्त फूलसिंह कब जन्नत का दीदार कराओगे?" "जब चाहो तब जन्नत का दर्शन करो। सचमुच कश्मीर जन्नत है। कश्मीर आने वाले किसी भी व्यक्ति को "अतिथि देवो भव" के रूप में माना जाता है। कश्मीरी लोग पर्यटकों को अतिथि मानते हैं। कश्मीरी लोगों के जीविका का प्रमुख साधन पर्यटन भी है।" यह कहकर बड़े प्रसन्न चित होकर फूलसिंह लोधी ने उत्तर दिया। उन्होंने आगे कहा "दोस्त इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प हो तो कश्मीर क्या पूरी दुनिया का भ्रमण किया जा सकता है इसके लिए अधिक रूपये पैसे की जरूरत का प्रश्न नहीं है। देशाटन देश–विदेश के अद्‌भुत प्राकृतिक दृश्यों और स्थानों को देखने का शौक है, तो वह बड़ी आसानी से लौह पथगामी (रेल), हवाई जहाज, मोटर साइकिल और कहीं घोड़े – खच्चर और कहीं पैदल चलकर भी मनोहर, मनोरम स्थानों की यात्रा किया जा सकता है।"

"अतिथि देवो भव–" आपका अतिथि बनकर जल्द ही आपके पास आनेवाला हूँ" मैंने बड़े अदब के साथ कहा।

फूलसिंह लोदी मुझे टोकते हुए कहा "घाटी के कुछ नौजवान, घाटी के कुछ लोग असमाजिक तत्वों का शिकार हो जाते हैं, उन्हें गुमराह और भ्रमित करके जेहाद और कश्मीर की स्वतंत्रता के नाम पर भारत सरकार के सैनिकों के विरूद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया जाता है, इस अराजकता में बाह्य और आन्तरिक शक्तियों के हाथ होने का भी संदेह किया जाता है।

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो में तीन महीने का गहन प्रशिक्षण पूर्ण होने और दीक्षान्त समारोह के उपरांत हम–सब अनुवादक प्रशिक्षुगण अपने–अपने कार्यक्षेत्र में वापस लौट कर अपने अपने कार्यालयी कार्यों के साथ ही साथ घर–गृहस्थी में भी लीन हो गए।

13 नवम्बर, 2013 का दिन आ ही गई मैं अपने खास मित्र शबनम के साथ जम्मू–कश्मीर के लिए हवाई मार्ग के द्वारा यात्रा के लिए पर्यटन योजना बनाकर ई–टिकट बुक कर दिया। हमारा हवाई टिकट इंडिगो एयरलाइन था, हम दोनों मित्र घरेलू हवाई अड्डा, पालम, नई दिल्ली पहुंच गए। पालम हवाई अड्डा पर एक से लेकर पॉच, छः प्रवेश द्वार। हम दोनों ने प्रवेश द्वार तीन में लगे लाइन में खड़े हो गए और अपनी–अपनी बारी का इंतजार करने लगे। हम दोनों ने अपनी–अपनी ई–टिकट और परिचय पत्र सुरक्षा कर्मी को दिखलाया। हमारी ई–टिकट में नाम और परिचय पत्र में नाम का मिलनकर हम दोनों को अन्दर प्रवेश करने की अनुमति दी गईं। अन्दर प्रवेश करने पर देखा कि एयर इंडिया, गो एयर, एयर एशिया, किंगफिशर, जेट एयरवेज आदि हवाई जहाजों के अलग–अलग टिकट काऊंटर बने हुए हैं।

दोस्त शबनम और मैं इंडिगो के काऊंटर के सामने लाइन में खड़े हो गए और बॉडिग पास लेने के

लिए लाइन में खड़े होकर अपनी बारी का बेसब्री से इंतजार करने लगे। सभी उम्र के यात्री गण कोई बच्चे, कोई जवान तो कोई हम उम्र के, कोई बुजुर्ग। सभी अनुशासित होकर कतार बद्ध होकर अपनी–अपनी वोडिंग पास और अपने बारी सामानों को काऊंटर के पास सामान वाहक हो देकर आगे बढ़ रहे थे। वॉडिग पास लेने की मेरी बारी आई मैंने अपनी ई–टिकट और परिचय पत्र दिखाया और कहा– "मैडम मुझे खिड़की वाली सीट दीजिएगा" काऊंटर में बैठी खूबसूरत, युवती कर्मी से अनुरोध किया।

हवाई जहाज की खिड़की वोडिंग पास मेरे हाथ में थमाते हुए, मुस्कुराते हुए एयर हॉस्टेस ने कहा "और मैं आपकी क्या सहायता कर सकती हूँ।"

आपका सामान पूछने पर मैं अपना एक छोटा बैग दिखलाया। उन्होंने कहा "इसे आप हवाई जहाज में अपने साथ ले जा सकते हो।" काउंटर में बैठी खूबसूरत एयर कर्मी के कोमल हाथों से प्राप्त वॉडिग पास, उनकी मीठी मुस्कान सचमुच में मेरा मन रोमांचित हो उठा, मन ही मन में सोचने लगा अब मेरा जन्नते कश्मीर की यात्रा का शुभ मुहूर्त है।

हवाई अड्डा के भीतर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी होती है। मजाल है कि कोई परिन्दा पार सके। सुरक्षा कवच का दूसरा घेरा पार करने के लिए मैं और दोस्त शबनम लाइन में अपनी–अपनी बारी का इंतजार करने लगे। हमारी कोट, जैकेट, पर्स, कमर बंद, आदि को स्क्रीनिंग मशीन में जॉच किया गया हमें भी मेटल डिडेकटर द्वारा सुरक्षा कर्मी ने बारीकी से जॉच किया और हमारे वॉडिग पास पर स्टैप लगाते हुए आगे जाने दिया।

हमने हवाई अड्डे के मुख्य प्रतीक्षालय में प्रवेश किया। प्रवेश करते ही मुझे ऐसा लगा कि यहॉ तो एक अलग ही दुनिया बसती है। किमती से किमती सामानों के दुकान, खाने–पीने की विभिन्न प्रकार के व्यंजनों के रेस्टोरेंट जिसमें दक्षिण भारतीय व्यंजन, इडली डोसा से लेकर पंजाब के छोले–पराठे मौजूद। साथ ही साथ में एक मधुशाला, जिसमें देशी–विदेशी ब्राण्ड की महंगी से महंगी शराब, बियर, वाइन आदि पेय पदार्थ की पूरी दुनियां इस हवाई अड्डे के परिसर में समाहित है। कोई यात्री चाय–कॉफी की चुस्की ले रहा, तो कोई नाश्ते–पानी में विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का आनन्द ले रहे हैं, तो कोई मधुशाला अनुभाग में मधुपान कर रहे हैं और अपने गणतव्य की ओर प्रस्थान करने के लिए अपनी–अपनी हवाई जहाज के उड़ान भरने की उद्घोषणा की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

गणतव्य स्थान की सफल यात्रा की कामना और प्रार्थना करने के लिए एक अलग से प्रार्थना कक्ष। प्रार्थना कक्ष हम दोनों को आकर्षित किया और हम भी प्रार्थना करने के लिए प्रेरित होकर सफल यात्रा के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

वॉडिग पास में मुद्रित इंडिगो हवाई जहाज के नम्बर और प्रस्थान द्वार के अनुसार प्रस्थान की घोषणा की गई।

"श्रीनगर जानेवाले यात्रीगण प्रस्थान द्वार संख्या 3 से प्रस्थान करें" उद्घोषणा करने पर श्रीनगर जानेवाले हम सभी यात्रीगण लाइन में खड़े हो गए और हमें एक बस में बैठाकर कुछ दूर में खड़ी हवाई जहाज में बोडिंग के लिए जे गए।"

हम सब कश्मीर यात्रीगण लाइन में फिर से खड़े होकर सीढ़ी से प्रवेश करते एयर होस्टेस द्वारा स्वागत मुद्रा में अभिनन्दन स्वीकार करते हुए हम सब यात्रीगण अपने–अपने आसन ग्रहण किये। मुझे तो मनमफिक खिड़की सीट मिल गया और हम दोनों अपनी अपनी बोली में बात–चीत कर रहे थे जिससे दूसरे यात्रीगण समझ नहीं पा सके।

शबनम ने कहा "आज मेरी जिन्दगी का एक विशेष दिन है, मैं पहली बार हवाई में सवार होकर पक्षी की तरह खुले आसमान में उड़ान भर रहा हूँ। नीले आसमान को चीरता हुआ, बादलों के साथ लुका–छिपी का खेल खेलूंगा। लम्बी और गहरी सांस लेते हुए खिड़की से झांकते हुए कहा "ठीक कहते हो दोस्त, पक्षी को खुले आसमान विचरन करते, करतव दिखलाते, तेज गति के उड़ते हुए देखकर ही अविष्कारक राइट बंधुओं ने स्वप्न और अरमान किया होगा कि हमें भी पक्षी की तरह आसमान में उड़ान भरना है। ये राइट बंधु ऑरविल और विलबर अमरीकन बंधु थे जिन्होंने 17 दिसम्बर 1903 को संसार की सबसे पहली सफल मानवीय हवाई उड़ान भरी जिसमें हवा से भारी विमान को नियंत्रित रूप से निर्धारित समय तक संचालित किया। लगातार प्रयास और प्रयोगिक के फलस्वरूप उन्होंने पहली उपयोगी दृढ़ पक्षी विमान तैयार किया। और इसी सिलसिला को जारी रखते हुए आज हमारे सामने अति आधुनिक विमान मौजूद है जिससे हम चन्द कुछ ही समय में हजारों किलोमीटर दूरी उड़ान भर सकते हैं।

हम दोनों के वार्तालाप के दौरान, अचानक ही मधुर आवाज मेरा ध्यान भंग कर दिया, खुबसूरत युवती ने माइक में उद्घोषणा की और अपने चालक दल सदस्यों की परिचय दी, मैं जुली चालक दल का वरिष्ठ कर्मी, मैं कश्मीरी ,हिंदी, अंग्रेजी और पंजाबी अच्छी तरह बोल और समझ सकती हूँ। हमारे विमान के विमान कप्तान है श्री उत्तम केरकेट्टा जो सिमडेगा, झारखण्ड के रहनेवाले हैं, सह कप्तान हैं, सुश्री दीपति जो दिल्ली की वासी है, कर्मीदल में सुश्री कमला हैं जो शिमला की है और एक सहकर्मी है वे दर्जिलिंग की निवासी हैं और विमान के सुरक्षा संबंधी नियमों की जानकारी दी। कुछ ही समय के बाद विमान के कप्तान ने विमान को बस की हवाई पट्टी पर अजगर सांप की तरह धीरे –धीरे रेंगाते हुए हवाई पट्टी पर कतार में गड़ी कर दिया और एटीएस से अपनी पारी आने पर उड़ान भरने के लिए प्रतीक्षा करने लगा। खिड़की से झांकते हुए मैं कई हवाई जहाजों को उतरते और उड़ान भरते हुए बड़े उत्सुकता से देख रहा था। बरबस ही मुझे बचपन के दिनों याद आ गया। मेरा गॉव सुदूर इलाका में बसा हुआ है गॉव के चारों ऊंचे–ऊंचे पहाड़ और जंगल हैं। आसमानों में कभी–कभी चिल–गिद्ध झुण्ड के झुण्ड उड़ान भरते रहते थे और किसी प्रकार की मृत पशु या जानवर के पड़े रहने पर खाने के लिए धरती पर उतरते हैं। मेरी मित्रमण्डली उन गिद्धो को भगाने की कोशिश करते तो गिद्ध जमीन पर कुछ दूर तक तेज रफ्तार से दौड़ते हुए आसमान में उड़ते थे, अब मुझे समझ में आ गया कि किस प्रकार राइट बंधुओं इन गिद्धों और चिल बाजों का गहन अध्ययन, अनुसंधान और प्रयोग करते हुए हवाई जहाज का अविष्कार किया।

हवाई यातायात संचालक से सिगनल मिलते ही कप्तान ने विमान की गति को तीव्र किया देखते ही देखते तीव्रगति से विमान दौड़कर आसमान में चौकड़ी भरने लगा। उड़ान भरने के कुछ समय पश्चात् एयर होस्टेस ने गर्मा–गरम चाय–कॉफी और जलपान परोसने लगे। एयर होस्टेस की सुन्दरता के बारे में तो कहना ही क्या ? विमान के पोशाक में तो और ही खूबसूरत लग रहे थे। नरम और कोमल हाथों से गरमा–गरम चाय कॉफी परोस रही थीं। हम दोनों मित्र चाय–कॉफी की चुस्की लेते हुए उड़ान भर रहे थे।

हवाई जहाज , धरती से उड़कर आसमान में लगभग 30–35 हजार फीट की ऊंचाई पर उड़न भर रहा था इसकी जानकारी कुछ समयान्तल में कप्तान देते जा रहे थे। मैं अपना कैमरा हाथ में थमे हुए और कुछ समयान्तल में उड़ते बादलों की तस्वीर ले रहा था। नीला आसमान, और उड़ते बादलों को हमारी हवाई जहाज चीरता हुआ, कभी मधुर ध्वनि, तो कभी कर्कश आवाज करता हुआ, कश्मीर की ओर उड़ भर रहा था। खिड़की से झांकते हुए मैं अद्‌भुत दृश्य दिखने लगा, ऊंचे ऊंचे पहाड़ और सफेद बर्फों से ढ़की पहाड़ों से धुंआ उड़ रहा था, सफेद बर्फ से ढंकी हिमालय पर्वत की श्रंखलाये, कहीं नदी, झरने बहने की रेखायें, अद्‌भुत वादियां जो मुझे उड़ते हवाई जहाज की खिड़की से ही मुझे यह मनोहर दृश्य, जो जन्नत से कम नहीं, जैसे किसी फिल्म में पहले टेलर दिखाया जाता है, उसके बाद बाकी पिकचर बाद में।

सहसा एयरहॉस्टेस ने माइक से उद्‌घोषणा की अब हम श्रीनगर पहुंचने वाले हैं और लैण्ड करेंगे अतः सभी यात्रीगण अपनी–अपनी सीट की पेटी बंध लें, शौचालय का प्रयोग करना वर्जित है, बत्ती धीमी की जाएंगी और विमान के कप्तान ने भी घोषणा किया अब हम लैण्ड करेंगे और विमान धीरे–धीरे नीचे की ओर उतरने लगा, इस दौरान श्रीनगर का नजारा भी अद्‌भुत दिखा, ऊंचे–नीचे पहाड़ों की वादियों के बीच बसा श्रीनगर अपने आप ही खूबसूरत दिख रहा था, कहीं–कहीं उच्चे उच्चे देवदार चीड़ आदि के पेड़, नदी–नले, झरने दिखाई दे रहा था, क्या ही अद्‌भुत प्राकृतिक दृश्य जो मन को मोह लिया, सचमुच जन्नते कश्मीर का दीदार आसमान से, हवाई जहाज की खिड़की से ही हो गया था, देखते ही देखते हवाई जहाज रनवे पर दौड़ने लगा, हमलोग श्रीनगर हवाई अड्डा पहुंच चुके थे। एयर हॉस्टेस ने हम सभी यात्रीगणों का इंडिगो विमान में यात्रा करने के लिए धन्यवाद दिया और आशा व्यक्त की हमें पुनः आपकी सेवा करने का अवसर देने का अनुरोध किया और कहा कि आप सभी यात्रीगणों का सामान बेल्ट नम्बर तीन में उपलब्ध करायी जाएगी, कृपया आप अपने सामान ले जाएं।

अब हम जम्मू कश्मीर की मिट्टी में कदम रख चुके थे, एयरपोर्ट के बाहर निकले, हमारे मित्र फूलसिंह लोदी हमारी पहुंचने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरा मोबाइल बजा।

"नमस्कार ! जन्नते कश्मीर में आपका स्वागत है लोदी जी ने कहा।

आपको मेरा नमस्कार ! मैंने प्रति उत्तर दिया। फूलसिंह लोदी के द्वारा मोबाइल से दिशा–निर्देश प्राप्त करते हुए हमदोनों यार एक मोटर कार में बैठ गए और श्रीनगर का नजारा देखते हुए, हैदरापुरा, बटमालू आदि और झेलम नदी के किनारे होते हुए, केसर नगरी,रेशम नागरी पंपोर पहुँच गए। कश्मीर के लोग गोरे चिकने, पके सेब की गाल लाल–लाल, महिलाओं की सुन्दरता की तो कहना ही क्या ? एक से बढ़ कर एक खूब सूरत। दोस्त गेट पर हमारा इंतजार कर रहा था। हम सब गले मिले, फिर अपने कार्यालय के विषय में बखान करते हुए और सरकारी निवास स्थान ले गए। वे अपने बाल–बच्चे और परिवार को घर में ही छोड़कर जन्नत में अकेला ही जीवन व्यतीत कर रहे थे।

शिल्क और रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, पम्पोर, कश्मीर में वैज्ञानिक यहॉ अनुसंधान के लिए आते रहते हैं, इस दौरान भी भारत के विभिन्न कार्यालयों से लगभग सात आठ वैज्ञानिक आए हुए थे। इनका भी दूसरा दिन कश्मीर यात्रा का कार्यक्रम था। हमें गुलमार्ग, सोनमार्ग भ्रमण करने का कार्यक्रम था किन्तु श्रीनगर के लाल चौक में धरना प्रदर्शन और बंदी के कारण हम जा नहीं सके और हमारा कार्यक्रम पहलगॉव जाने के लिए तय हुआ। हम अनंतनाग होते हुए पहला गाँव की ओर चल पड़े।

रास्ते मनमोहक ठंडी हवाएं बह रही थी, चालक हमें सेब के बगान, बर्फ से ढ़की पर्वत चोटियों को दिखलाते हुए पहलगॉव ले गए।

पहलगाम कश्मीर की खुबसूरत हिलस्टेशन में एक है, यह समुद्रतल से 2740 मीटर की ऊंचाई पर है। पहलगाम की यह वादियां भी कश्मीर का स्वर्ग है। यह अमरनाथ यात्रा का पहला पड़ाव है। इसके चारों ओर घने जंगल, बर्फ से ढ़की मनोहर घाटियॉ, यहॉ बहनेवाली लिद्दर नदी की कल–कल धारा और मनमोहक बना देती है। हमारी पूरी टीम की हरेक सदस्यों ने घुड़सवारी की। मैंने भी अपने जीवन में पहली बार घुड़सवारी करने का मजा लिया, सचमुच यह मेरे लिए एक चिरस्मरणीय दिन रहा था।

कश्मीर भ्रमण का दूसरा दिन रहा डल झील। डल झील सचमुच में दुनिया सबसे सुन्दर, मनमोहक और शांत और खूबसूरत झील है। डल झील को कश्मीर का दिल कहा जाता है। कहा जाता है कि डल झील में सैकड़ों पानी के झरने हैं, यहॉ का साफ और शांत पानी, मानो यहॉ आकर दुनिया ठहर गया हो। यहॉ आकर सिकारे की सवारी करके डल झील का भ्रमण नहीं करना अधूरा दर्शन है। इसके किनारे बसे हाऊस वोट जो पांच सितारा होटल से कम नहीं है, सभी सुख–सुविधाओं लैस ,यहॉ पर ठहरकर हनीमून मनाने के लिए और सुखद जगह और कहां हो सकता है। डलझील किनारे लगे दुकान, सिकारे में बाजार लगना, सिकारे में चाय–पानी का मजा लेना किसी अजुबे से कम नहीं है, सचमुच कहीं जन्नत है तो डलझील में भी है। इस डल झील का अद्‌भुत दृश्य और पीर पंजाल रेंज का मनमोहक वादियाँ। शायद इस दृश्य को देखकर ही जहांगीर ने फारसी में कहा था, 'गर फिरदौस बर रुए जमीं अस्त, हमीं अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्त' अर्थात अगर धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं पर है और सिर्फ यहीं पर है।

पीयूष अग्रवाल
उप प्रबंधक – वित्त एवं लेखा

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सी एस आर) को समझना

सी एस आर परियोजनाओं को शुरू करने के लिए कंपनियों पर वैधानिक दायित्व लागू करके कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कंपनी अधिनियम, २०१३ में सी एस आर को अनिवार्य प्रावधान के रूप में पेश करना , दुनिया के सामाजिक कल्याण गतिविधियों की दिशा में सबसे बड़े प्रयोगों में से एक था। इसने भारत को एकमात्र ऐसा देश बना दिया है जिन्होंने एक अधिनियम के तहत पंजीकृत कुछ चुनिंदा श्रेणियों की कंपनियों के लिए सी एस आर व्यय अनिवार्य बना दिया था। यह सी एस आर की पहल हमारे भारत देश को बदलने में एवं सतत विकास लक्ष्यों और सार्वजनिक–निजी भागीदारी की प्राप्ति की ओर अग्रसर करेगी। कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 135 के तहत सी एस आर के अनिवार्य प्रावधान 01.04.2014 से प्रभावी हो गए थे।

ज्ञात हो की वित्त संबंधी संसदीय स्थायी समिति की 21वीं रिपोर्ट ने सी एस आर प्रावधानों को कानून के रूप में लाने के प्रस्ताव के लिए मुख्य रूप से काम किया था। स्थायी समिति द्वारा यह देखा गया था कि वर्तमान अधिनियम के तहत कंपनियों द्वारा किए जाने वाले सी एस आर पर वार्षिक वैधानिक प्रकटीकरण के गैर–अनुपालन पर पर्याप्त जांच होनी चाइये। कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 135(4) धारा 135(1) के तहत योग्यता प्राप्त करने वाली प्रत्येक कंपनी को अपनी वार्षिक रिपोर्ट में बोर्ड द्वारा स्वीकृत सी एस आर से सम्बंधित सांविधिक प्रकटीकरण प्रस्तुत करने के लिए अनिवार्य करती है। कंपनी (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी पॉलिसी), नियम, 2014 (नियम 8) उस प्रारूप को निर्धारित करता है जिससे इस तरह की रिपोर्टें तैयार की जानी है। समावेशी विकास के महत्व को समझते हुए एवं व्यापक रूप से विकास के लिए भारत की यह अद्भुत खोज – सी एस आर को एक अनिवार्य हिस्से के रूप में मान्यता प्राप्त है। सी एस आर विकास प्रक्रिया में समाज के उन वर्गों को शामिल करने की हमारी दृढ़ प्रतिबद्धता को दोहराता है, जो अब तक विकास की मुख्य धारा से बाहर थे। इस राष्ट्रीय प्रयास के अनुरूप, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सी एस आर) को कॉर्पोरेट व्यवसाय की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला में सामाजिक, पर्यावरण और मानव विकास संबंधी चिंताओं को एकीकृत करने के लिए एक उपकरण के रूप में माना गया था। कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय ने व्यावसायिक उत्तर

दायित्वों की अवधारणा को मुख्य धारा में लाने की दिशा में पहले कदम के रूप में "कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, 2009 पर स्वैच्छिक दिशानिर्देश" जारी किए थे। इसे बाद में "व्यापार की सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक जिम्मेदारियों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशानिर्देश, 2011" के रूप में और परिष्कृत किया गया।

तत्काल पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष के दौरान निम्नलिखित में से किसी भी मानदंड को पूरा करने वाली कंपनी को कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 135(1) के तहत निर्दिष्ट कंपनी (सी एस आर नीति) नियम, 2014 के साथ पठित सी एस आर प्रावधानों का पालन करना आवश्यक हैरू–

- पांच सौ करोड़ रुपए या उससे अधिक की कुल संपत्ति (नेट वर्थ), या
- एक हजार करोड़ रुपये या अधिक का कारोबार (टर्न ओवर), या
- पांच करोड़ रुपये या अधिक का शुद्ध लाभ (नेट प्रॉफिट)

सी एस आर गतिविधियों पर खर्च का निर्धारण करने के उद्देश्य से औसत शुद्ध लाभ की गणना कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 198 के प्रावधानों के अनुसार की जाती जो कि कंपनी अधिनियम 2013 (सी एस आर नीति) नियम, 2014 के नियम 2(1)(एच) के तहत दी गई मदों को छोड़कर होती है। कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 198 एक कंपनी के शुद्ध लाभ की गणना करते समय किए जाने वाले कुछ अतिरिक्त ध विलोपन (समायोजन) को निर्दिष्ट करती है (मुख्य रूप से इसमें पूंजी गत भुगतान ध प्राप्तियां, आयकर, पिछले नुकसान का सेट–ऑफ शामिल नहीं है))। यह जानना महत्वपूर्ण है की अधि िनियम की धारा 135 के तहत शुद्ध लाभ की गणना – कर पूर्व लाभ (पी बी टी) का उपयोग करते हुए की जाती है।

अधिनियम की धारा 135(5) का पहला प्रावधान यह प्रदान करता है कि कंपनी स्थानीय क्षेत्रों और आसपास के क्षेत्र जहां यह उसका सञ्चालन होता है उन क्षेत्रों को वरीयता देगी। हालाँकि अनु सूची टप्प् में विदित कुछ गतिविधियाँ जैसे की युद्ध विधवाओं के लिए कल्याणकारी गतिविधियाँ, कला और संस्कृति, और इसी तरह की अन्य गतिविधियों,पर यह लागू नहीं होती है। हालाँकि सूचना और संचार के आगमन के साथ प्रौद्योगिकी (आई सी टी) और नए युग के व्यवसायों का उदय जैसे ई–कॉमर्स कंपनियां, प्रोसेस – आउटसोर्सिंग कंपनियों, और एग्रीगेटर कंपनियों, विभिन्न कंपनियों के स्थानीय क्षेत्र का निर्धारण करना कठिन बनाता जा रहा है।

अधिनियम की भावना यह सुनिश्चित करना है कि सी एस आर की पहल भारत की राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ मिलनसार हो कर वृद्धि हासिल करने की दिशा में कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी सतत हो एवं यूनाइटेड नेशंस के विकास लक्ष्य (एस डी जी) को संपूर्ण रूप से प्राप्त किया जा सके। इस प्रकार यह समझ आता है की अधिनियम में स्थानीय क्षेत्र को वरीयता केवल निर्देश स्वरूप है और अनिवार्य नहीं है। स्थानीय क्षेत्र वरीयता को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ संतुलित करने की आवश्यकता हैं एवं हमारी कंपनियों को इस कार्य में अग्रसर होना चाइये द्य

ज्ञात हो की अधिनियम की धारा 135 के अंतर्गत इरेडा के लिए वित्तीय वर्ष 2021–22 से सम्बंधित सी एस आर व्यय की आवश्यक राशि कुल 685.34 लाख रुपये थी। हालांकि बोर्ड एवं सी एस आर समिति की सर्वांगीण विकासात्मक सोच के कारण वास्तविकता में किया गया व्यय 872.93 लाख था। उक्त खर्चे में इरेडा द्वारा सी एस आर के अंतर्गत वित्त पोषित एक अनूठी पहल थ्थेरेपी ऑन व्हील्सष

भी शामिल है। यह प्रोजेक्ट कुल्लू स्थित एन जी ओ सेम्फिया फाउंडेशन द्वारा संचालित है। हाल ही में, इस प्रोजेक्ट को ष्जीरो प्रोजेक्टष पुरस्कार से मान्यता प्राप्त हुई है, जो नवीन प्रथाओं एवं विकलांग लोगों के लिए समावेश को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नीतियां को पुरस्कृत करता है। इरेडा ने नवंबर 2020 में उक्त फाउंडेशन को एक वातानुकूलित मोबाइल मेडिकल वैन प्रदान की थी जिससे विकलांग बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की चिकित्सा जैसे फिजियोथेरेपी, व्यावसायिक चिकित्सा, और भाषण चिकित्सा, प्रदान करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

अशोक कुमार भिलवारिया
पूर्व इरेडा

'बेचारा रिटायर्ड व्यक्ति क्या करे ?'
रिटायर व्यक्ति अगर देर तक सोया रहे तो....
'बीवी रू' अब उठ भी जाइये !
आपके जैसा भी कोई सोता है क्या ?
रिटायर हो गये तो इसका मतलब यह नहीं कि सोते ही रहियेगा....!

रिटायर व्यक्ति अगर जल्दी उठ जाये तो....
'बीवीरू' आपको तो बुढापे में नींद पड़ती नहीं,
एक दिन भी किसी को चौन से सोने नही देते हो,
5:30 बजे उठ कर बड़ बड़ करने लगते हो।
अब तो आफिस भी नहीं जाना है,
चुपचाप सो जाइये और सबको सोने दीजिए.....!

रिटायर व्यक्ति अगर घर पर ही रहे तो....
'बीवीरू' सबेरा होते ही मोबाइल लेकर बैठ जाते हो
और चाय पर चाय के लिए चिल्लाते रहते हो,
कुछ काम अपने से भी कर लिया कीजिए।
सब लोगों को कुछ न कुछ काम रहता है,
कौन दिनभर पचास बार चाय बना कर देता रहे।
यह नहीं होता है कि जल्दी से उठकर नहा धोकर नाश्ता पानी कर लें,
अब इनके लिए सब लोग बैठे रहें....!

रिटायर व्यक्ति अगर घर से देर तक बाहर रहे तो....
'बीवी रू' कहाँ थे आप आज पूरा दिन ?
अब नौकरी भी नही है,
कभी मुँह से भगवान का नाम भी ले लिया कीजिए...!

रिटायर व्यक्ति अगर पूजा करे तो...
'बीवी रू' ये घन्टी बजाते रहने से कुछ नहीं होने वाला।
अगर ऐसा होता तो इस दुनिया के रईसों में टाटा या बिल गेट्स का नाम नहीं होता,
बल्कि किसी पुजारी का नाम होता...!

अगर रिटायर व्यक्ति खाली समय में पैसा कमाने के लिए कुछ काम करे तो...
'बीवी रू' हर वक्त काम, काम काम, आपके पास अब नौकरी भी नही सिर्फ काम का नाटक उसी से सात फेरे ले लेने चाहिए थे। हम क्या यहाँ पर बंधुआ मजदूर हैं जो सारा दिन काम करें और शाम को आपका इंतजार करें...?

. रिटायर व्यक्ति अगर पत्नी को घुमाने के लिए ले जाए तो...
'बीवी रू' देखिये, सक्सेना जी अपनी बीबी को हर महीने घुमाने ले जाते हैं
और वो भी स्विट्जरलैंड और दार्जिलिंग जैसी जगहों पर,
आपकी तरह "हरिद्वार" नहाने नहीं जाते....!

रिटायर व्यक्ति अगर अपनी जिंदगी भर की बचत से नैनीताल,
मसूरी, गोवा, माउन्ट आबू, ऊटी जैसी जगहों पर घुमाने ले भी जाए तो....!'
'बीवी:' अपना घर ही सबसे अच्छा, बेकार ही पैसे लुटाते फिरते है।
इधर उधर बंजारों की तरह घूमते फिरो। क्या रखा है घूमने में ?
इतने पैसे से अगर घर पर ही रहते तो पूरे 2 साल के लिए कपड़े खरीद सकते थे...!
रिटायर व्यक्ति पुराने गानों का शौकक्रीन हो तो... !
'बीवी:' बुढ़ापे में गाने भाते हैं, कोई भजन या राम के नाम ही ले लिया करो.....!
रिटायर व्यक्ति अगर मन बहलाने के लिए फोन करे तो....!
'बीवी:' दिन भर फोन पर लगे रहते हो, हम तो नहीं करते किसी को.....फोन !
रिटायर व्यक्ति बन ठन कर घर में रहे तो....!
'बीवी:' बुढ़ापे में क्या सिंगार करते हो, घर में बहुएं क्या कहेंगी...!
'वाह रे! रिटायर आदमी'
बेचारा रिटायर्ड आदमी

मीतू माथुर बधवार
अनुवादक (राजभाषा विभाग)
सेल निगमित कार्यालय,

कनेक्टिंग पीपल टू नेचर

"मत भूलो कि धरती तुम्हारे पैरों को महसूस करके खुश होती है और हवा तुम्हारे बालों से खेलना चाहती है।" – खलील जिब्रान

प्रकृति के साथ मनुष्य का संबंध बहुत पुराना और गहरा है। मानवजाति ने अपनी आँखें प्रकृति की गोद में खोलीं और उसी के आँचल में वह फलती–फूलती रही है। विज्ञान प्रमाणित करता है कि आज से अरबों वर्ष पहले जीवन का आदि रूप सागरों में पनपा जिसमें सूर्य की रश्मियों ने जीवन का संचार किया। यही कारण है कि भारतीय मनीषियों ने प्राकृतिक शक्तियों को देवस्वरूप माना। वैदिक ऋषि कामना करते हैं, 'सूर्यस्य संदृशे मा युयोथारू' अर्थात् जीवनदायी सूर्य से कभी हमारा वियोग न हो। सूर्य की किरणों से ऊर्जा लेकर ही वनस्पतियां अपना भोजन तैयार करती हैं और इन्हीं वनस्पतियों पर प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से अन्य जीव–जंतु तथा मानव जीवन आश्रित है।

वेदों में कहा गया है कि वायु ही प्राण बनकर शरीर में वास करती है। भारतीय संस्कृति में जल की वरुण देव के रूप में स्तुति की गई है। इतिहास साक्षी है कि हमारी आदि संस्कृतियां नदियों के किनारे ही पनपीं हैं, चाहे वह मैसोपोटामिया की सभ्यता हो, नील नदी की सभ्यता हो या फिर सिंधु घाटी या ह्वांग हो नदी के किनारे उपजी चीन की सभ्यता। मत्स्य पुराण में एक वृक्ष को सौ पुत्रों के समान माना गया है। श्रीमद्भगवतगीता में कृष्ण कहते हैं, 'वृक्षों में मैं पीपल हूं'।

प्रकृति के इसी जगत–पालक रूप के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अथर्ववेद में हम शपथ लेते हैं कि, "हे धरती माँ! जो कुछ भी तुमसे लूंगा, वह उतना ही होगा जितना तू पुनरू पैदा कर सके। तेरी जीवन शक्ति पर कभी आघात नहीं करूंगा।" लेकिन आज हम अपनी शपथ भूलकर प्राकृतिक संसाधनों की लूट–खसोट पर उतर आए हैं। प्रकृति हमारी आवश्यकताएं आज भी पूरी कर रही है लेकिन हम उसे अपनी अतिभौतिकवादिता की भेंट चढ़ा रहे हैं जिसके दुष्परिणाम अब हमारे सामने हैं। जलवायु परिवर्तन धरती के लिए भीषण खतरा बन चुका है। आंकड़े बताते हैं कि 1850 में तापमान को रिकॉर्ड करने की शुरुआत के बाद से पिछले तीन साल सबसे अधिक गर्म रहे हैं। ग्लोबल वॉर्मिंग के चलते दुनियाभर के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, समुद्री जल स्तर में लगातार वृद्धि हो रही है।

हमने प्रकृति की गोद से निकलकर मशीनों की शरण ली और अब सुरसा के मुँह की तरह बढ़ता औद्योगीकरण हमारे पर्यावरण को निगलता जा रहा है। प्रमाणित हो चुका है कि बिजलीघरों, फैक्ट्रियों तथा वाहनों में जीवाश्म ईंधनों के जलने से पैदा होने वाली ग्रीन हाउस गैसें ग्लोबल वॉर्मिंग के लिए उत्तरदायी हैं। विश्व बैंक की रिपोर्ट कहती है, "सन् 2020 तक भारत विश्व में एक ऐसा देश होगा जिसके हवा, पानी, जमीन और वनों पर औद्योगीकरण का सबसे ज्यादा दबाव होगा, वहां पर्यावरण बुरी तरह बिगड़ जाएगा, प्राकृतिक संसाधनों की सांसें टूटने लगेंगी और उसके लिए इस विकास की

कीमत को चुकाना टेढ़ी खीर होगी''। बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव अर्थव्यवस्था और विकास पर भी पड़ेगा। प्रमुख खाद्यों के उत्पादन में कमी आएगी और कुपोषण बढ़ेगा। वर्ष 2050 तक भारत में सूखे के कारण गेहूँ के उत्पादन में 50 प्रतिशत तक कमी आने की आशंका है।

आज विश्व की 92: प्रतिशत आबादी प्रदूषित हवा में सांस ले रही है। वातावरण में कार्बन–डाइ–ऑक्साइड का संकेन्द्रण पहले के मुकाबले 30 प्रतिशत ज्यादा हुआ है। ग्रीनपीस इण्डिया की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक सिर्फ वायु प्रदूषण से भारत में हर साल 12 लाख जानें चली जाती हैं। भारत के 168 शहरों में हाल ही में किए ग्रीनपीस सर्वे के अनुसार इनमें से एक भी शहर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित वायु गुणवत्ता मानकों पर खरा नहीं उतरा। बोस्टन में हाल ही में रिलीज स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर 2017 की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में ओजोन प्रदूषण के कारण होने वाली असामयिक मौतों में भारत प्रथम स्थान पर है और इसके कारण दुनियाभर में होने वाली कुल मौतों में से आधी मौतें भारत और चीन में होती हैं।

पानी सिर के पार जा चुका है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि बच्चों के घर में कैद होकर टी.वी.–मोबाइल आदि देखते रहने से उनका शारीरिक और मानसिक विकास बाधित हो रहा है। डॉ. मार्क ट्रेम्बले, ओटावा के शोध के अनुसार इस सदी के बच्चे 1980 के दशक के बच्चों के मुकाबले अधिक मोटे, वजनी और कमजोर हैं।

भारतीय दर्शन में संपूर्ण सृष्टि की रचना पंचमहाभूतों अर्थात् धरती, जल, अग्नि, आकाश और वायु से मानी गई है। यह विडम्बना ही है कि हम जिन पंचतत्त्वों से बने हैं, उन्हीं के विनाश पर आमदा हैं। आज की बेलगाम भौतिक जिन्दगी में हमने न तो पानी को साफ छोड़ा है और न ही हवा को शुद्ध। धरती को तो हम वृक्ष काटकर और रसायनों–कृत्रिम उर्वरकों के प्रयोग से लगातार बांझ बना ही रहे हैं। हम भूल गए हैं कि खेती और पशुपालन द्वारा ही आदिमानव के खानाबदोश जीवन का अंत हुआ था। आज हम अपने इन्हीं पशुमित्रों को अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए बेदर्दी से मार रहे हैं। जीव–जन्तुओं की कितनी ही प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं या होने के कगार पर हैं।

सरकारें विभिन्न नियम–कानून बनाकर और पर्यावरण दिवस, पृथ्वी दिवस आदि आयोजनों द्वारा इस मुद्दे पर जागरूकता बढ़ाने का प्रयास कर रही है पर समय आ गया है कि हम व्यक्तिगत स्तर पर पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझें। कहीं ऐसा न हो कि टी.वी. और मोबाइल में उलझी हमारी आने वाली पुश्तों को तोता, मैना और गिलहरी भी 'गूगल इमेजेज' पर ही देखने को मिलें और गाय पर पाँच पंक्तियाँ लिखने के लिए भी उसे इंटरनेट का सहारा लेना पड़े। गाय माता, बिल्ली मौसी और चंदा मामा कहीं किस्से–कहानियों का हिस्सा बनकर ही न रह जाएं। आइए, अपने आँगन में पक्षियों के लिए पानी का बर्तन रखकर प्रकृति से जुड़ने की शुरुआत करें और उसमें रोज नया पानी भरने की जिम्मेदारी अपने बच्चों को सौंपें।

और अंत में, जैसा कि थियोडोर रोएटके ने एक दफा कहा था, ''सभी फूल अपनी जड़ों की गहराइयों में प्रकाश रखते हैं,'' तो आइए प्रकृति से जुड़कर उस प्रकाश का साक्षात् करें, उसे आत्मसात् करें और अपनी आने वाली पीढ़ियों का भविष्य उज्ज्वल बनाएं।

प्रवीण कुमार झा,
सहायक महाप्रबंधक(भर्ती)
भारत संचार निगम लिमिटेड,

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन का ऐसा नायक हैं, जिनके नाम से ही लोगों मे देशप्रेम की लहरें जोश पैदा करने लगती है और लोग तन–मन–धन सब कुछ न्योछावर करने के लिए दीवाने हो जाते है। उनका जीवन संघर्ष, बलिदान और राष्ट्र सेवा की अनूठी गाथा है। उन्होने स्वतन्त्रता आंदोलन को एक नई दिशा और ऊर्जा देने में महती भूमिका निभाई। भारत माता का यह बीर सपूत भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में धूमकेतु की तरह आता है, लोगों के मन मस्तिष्क पर छा जाता है और फिर रहस्यमय ढंग से गायब हो जाता है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को ओडिशा के कटक शहर में हुआ था। उनके पिता का नाम जानकीनाथ बोस और मां का नाम प्रभावती था। उनके पिता मशहूर वकील थे। अंग्रेजी सरकार ने उन्हें रायबहादुर का खिताब दिया था।सुभाष की प्रांभिक शिक्षा प्रोटेस्टेन्ट यूरोपियन स्कूल, कटक में हुआ था। वर्ष 1909 में उन्होंने रेवनशा कौलेजियेट स्कूल में दाखिला लिया। मात्र 15 वर्ष की आयु में सुभाष ने विवेकानंद के सम्पूर्ण साहित्य का पूर्ण अध्ययन कर लिया था। 1915 में उन्होंने इंटरमीडिएट की परीक्षा बीमार होने के बावजूद द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण की। 1916 में जब वे बीए दर्शनशास्त्र (आनर्स) के छात्र थे, किसी बात पर प्रेसीडेंसी कालेज के अध्यापकों और छात्रों के बीच झगड़ा हो गया, सुभाष ने छात्रों के नेतृत्व को सम्हाला जिसके कारण उन्हें प्रेसीडेंसी कालेज से एक साल के लिए निकाल दिया गया और परीक्षा देने पर प्रतिबंध भी लगा दिया। 1919 में बीए(ऑनर्स) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। कलकाता विश्वविद्यालय में दूसरा स्थान था। पिता की इच्छा को पूरा करने हेतु तथा काफी उहापोह और बेमन से मेधावी सुभाष आईसीएस (वर्तमान आईएएस के समकक्ष) की तैयारी हेतु 15 सितंबर 1919 को इंग्लैंड चले गए। 1920 में आईसीएस चौथे स्थान प्राप्त करते हुए पास कर लिया। अंग्रेजो की गुलामी नहीं करने के अपने जिद पर अड़े सुभाष ने 22 अप्रैल, 1921 आईसीएस से त्यागपत्र दे दिया।

देशबंधु चितरंजन दास (दास बाबू) के कार्य से प्रेरित होकर सुभाष, उनके साथ काम करना चाहते थे। इंग्लैंड से उनको पत्र लिख कर उनके साथ काम करने की इच्छा प्रकट की। रविंद्रनाथ ठाकुर की सलाह के अनुसार भारत वापस आने पर महात्मा गांधी से मिले, गांधीजी ने कोलकाता जाकर दास

बाबू के साथ काम करने की सलाह दी। इसकी बाद सुभाष कोलकाता आकर दास बाबू से मिले। उन दिनों दास बाबू असहयोग आंदोलन का बंगाल में नेतृत्व कर रहे थे। सुभाष ने भी उनके साथ इस आंदोलन में सहभागी हो गए। 1922 में कांग्रेस के अंतर्गत स्वराज पार्टी की स्थापना कोलकाता महापालिका का चुनाव लड़कर जीता और दास बाबू कोलकाता के महापौर बन गए। उन्होने सुभाष को महापालिका का प्रमुख कार्यकारी अधिकारी बनाया। सुभाष अपने कार्यकाल में कोलकाता का पूरा ढांचा और काम करने के तरीके को बदल डाला। स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार और भ्रस्टाचार पर नकेल डालने की काफी बाह– वाही मिली। अपने सार्वजनिक जीवन में नेताजी को कुल 11 वार कारावास का दंड भोगना पड़ा। सबसे पहले उन्हें 16 जुलाई, 1921 में छह महीने का कारावास हुआ। 26 जनवरी 1931 को कोलकाता में राष्ट्रध्वज फहराकर सुभाष एक विशाल मोर्चे का नेतृत्व कर रहे थे, तभी पुलिस ने उनपर लाठी चलाई और घायल कर के जेल भेज दिया।

सन 1933 से लेकर 1936 तक सुभाष यूरोप में रहे, जहां अनेक नेताओं जैसे इटली के मुसोलिनी, आयरलैंड के नेता डी वलेरा से मिलकर भारत के स्वंत्रता संग्राम में सहायता के लिए वचन लिया। बाद में सुभाष यूरोप में विठ्ठल भाई पटेल के साथ मंत्रणा की जिसे पटेल–बोस विश्लेषण के नाम से प्रसिद्ध मिली। सन 1934 में जब सुभाष ऑस्ट्रिया में इलाज कराने हेतु ठहरे हुए थे, उस समय अपनी पुस्तक लिखने हेतु एक अंग्रेजी जानने वाली टाइपिस्ट की आवश्यकता हुई। एमिली शेंकल नाम की इसी टाइपिस्ट महिला से सन 1942 में बाड गस्टीन नामक स्थान पर हिंदू पद्धति से विवाह बंधन में बंध गए। वियेना में एमिली ने एक पुत्री को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम अनीता बोस रखा। नेताजी की बेटी अनीता बोस फाफ जर्मनी में रहती है तथा नेताजी से संबन्धित कार्यक्रमों में सक्रिय रहती है और उनके परिजनों से मिलने कभी–कभी भारत भी आती है।

नेताजी सन 1938 में कॉंग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित हुए। वे 1939 में दुबारा से निर्वाचित हो कॉंग्रेस के अध्यक्ष बने। 3 मई 1939 को नेताजी ने कॉंग्रेस के अंदर ही फॉरवर्ड ब्लॉक नाम से अपनी पार्टी बनाई। कुछ दिनों के बाद ही कॉंग्रेस से सुभाष को निकाल दिया गया, जिसके चलते फारवर्ड ब्लॉक अपने आप एक स्वतंत्र पार्टी बन गई। फारवर्ड ब्लॉक को स्वतन्त्रता आंदोलन में जागृति फैलाने में बड़ा योगदान है।

5 अप्रैल ,1943 को नेताजी ने सिंगापुर टाउन हाल में सेना की सलामी के वाद अपने ओजस्वी भाषण में "दिल्ली चलो" और "जय हिन्द" का नारा भी दिया। 21 अक्टूबर 1943 के दिन नेताजी ने सिंगापुर में स्वाधीन भारत की अंतरिम सरकार की स्थापना की। नेताजी आजाद हिंद फौज के प्रधान सेनापति भी बन गए। आजाद हिंद फौज में महिलाओं के लिए झांसी की रानी रेजीमेंट भी बनाई थी। उन्होंने भारतीयों को आजाद हिंद फौज में भर्ती होने और उसे आर्थिक मदद देने का आह्वान किया। उन्होंने अपने आह्वान में यह संदेश भी दिया " तुम मुझे खून दो, में तुम्हें आजादी दूंगा"।

सन 1944 में रंगून रेडियो स्टेशन से नेताजी ने भाषण के दौरान गांधी जी को "राष्ट्रपिता" कहकर संबोधित किया और उनसे अपने जीत के लिए शुभकामना और आशीर्वाद देने के लिए कहा। आजाद हिन्द फौज के चार ब्रिगेडों में एक का नाम गांधी ब्रिगेड रखा। बाकी तीन ब्रिगेड का नाम नेहरू, आजाद और बहादुर ब्रिगेड रखे। नेताजी के कुछ महत्वपूर्ण विचार, दर्शन और उनके सिद्धांत निम्नलिखित हैः–

(1) याद रखिये सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है।

(2) तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

(3) मुझे यह नहीं मालूम कि स्वतंत्रता के इस युद्ध में हममें से कौन –कौन जीवित बचेंगे, परंतु मैं यह जानता हूं कि अंत में विजय हमारी ही होगी।

(4) जो अपनी ताकत पर भरोसा करता है, वो आगे बढ़ता है और उधार की ताकत वाले घायल हो जाते हैं।

(5) राष्ट्र वाद मानवजाति के उच्च्तम आदर्श सत्य, शिव और सुंदर से प्रेरित हे।

(6) अगर संघर्ष न रहे, किसी भी भय का सामना न करना पड़े, तब जीवन का आधा स्वाद ही समाप्त हो जाता है। आजादी मिलती नहीं, बल्कि इसे छीनना पड़ता है।

(7) हमारे पास आज एक इच्छा होनी चाहिए– मरने की इच्छा , ताकि भारत जी सके। शहीद होने की इच्छा, ताकि स्व तंत्रता के मार्ग को शहीद के खून से पक्का– किया जा सके।

(8) जीवन में विशेषकर राजनीति में कोई चीज इतनी हानिकारक और खतरनाक नहीं, जितना डांवाडोल स्थिति में रहना।

(9) ये हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं। हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आजादी मिलेगी, हमारे अंदर उसकी रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए।

(10) मैं चाहता हूँ चरित्र, ज्ञान और कार्य।

कहा जाता है कि 18 अगस्त 1945 को हवाई जहाज से मंचूरिया की तरफ जाते समय हवाई दुर्घटना में निधन हो गया। उनकी मृत्यु हमेशा संदेहास्पद रही है। यह उनके जादुई और करिश्माई व्यक्तित्व और नेतृत्व का कमाल है कि तथाकथित विमान दुर्घटना के इतने सालों के बाद और तीन –तीन आयोग द्वारा जांच के बाबजूद उनकी मृत्यु पर संदेह होता रहा है और ऐसा लगता है कि शायद नेताजी अभी भी जीवित है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष पर नेताजी के पावन स्मृतियों को शत शत नमन ..... जय हिंद

प्रसून कुमार झा
सेल, राजभाषा विभाग

आजादी का अमृत महोत्सव

15 अगस्त, 2022 को देश की आजादी के 75 साल पूरे होने जा रहा हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए 12 मार्च 2021 से 15 अगस्त 2023 तक हर्षोल्लास से आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इसमें देश के सभी राज्यों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के जरिए देशभक्ति का संदेश दिया जाएगा और भारतीय संस्कृति की रंगारंग झलक दिखाई जाएगी। इस महोत्सव का विधिवत शुभारंभ प्रधानमंत्री श्री मोदी ने, आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश से ठीक 75 सप्ताह पहले अर्थात 12 मार्च 2021 को अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम से दांडी तक की पदयात्रा को झंडी दिखाकर किया। चूँकि दांडी पदयात्रा का पर्याय नमक सत्याग्रह है इसलिए इस अवसर पर उन्होंने "देश का नमक" नामक मुहावरे से अपना सम्बोधन प्रारम्भ किया और नमक को ईमानदारी, विश्वास तथा वफादारी का समानार्थी बताया। इसके साथ–साथ उन्होंने आजादी के अमृत महोत्सव को आजादी की ऊर्जा का अमृत, स्वाधीनता सेनानियों से हमें प्राप्त हुई प्रेरणाओं का अमृत, नए–नए विचारों व संकल्पों का अमृत और देश की आत्मनिर्भरता का अमृत बताया।

आजादी के 75वें वर्ष में यह महोत्सव मनाने के निर्णय का सीधा सम्बंध बीते 75 वर्षों में भारतीय सरकारों द्वारा किए गए सकारात्मक कार्यों, इन वर्षों की कार्य–योजनाओं, उपलब्धियों व संकल्पों से है जिनके आधार पर हमारा देश निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहा है और जो स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे। आजादी के अमृत महोत्सव की सफलता के लिए भारत में पॉच स्तभ बनाये गये है –

- स्वतंत्रता संग्राम,
- 75 पर विचार,
- 75 पर उपलब्धियॉं,
- 75 पर कदम और
- 75 पर संकल्प

आज से 91 वर्ष पूर्व 12 मार्च 1930 के दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने, ब्रिटिश शासन में इंग्लैंड से भारत में आने वाले नमक को बेचने के एकाधिकार के विरोधस्वरूप, साबरमती आश्रम से सूरत के

समीप दांडी तक की पदयात्रा की थी जिसे 'दांडी मार्च' की संज्ञा दी गई थी। इसी घटना को नमक सत्याग्रह के नाम से भी जाना जाता है। वस्तुतः, सन 1930 में अंग्रेजी शासन के दौरान भारतीयों को नमक बनाने का अधिकार नहीं था। उन्हें इंग्लैंड से आने वाले नमक का ही इस्तेमाल करना पड़ता था। अंग्रेजों ने इस नमक पर कई गुना कर भी लगा दिया था। लेकिन चूँकि नमक जीवन के लिए अति आवश्यक वस्तु है इसलिए इस कर को हटाने के लिए ही गांधीजी ने सत्याग्रह का मार्ग चुना था।

गांधीजी के दांडी मार्च की ही तरह, इस बार भी साबरमती आश्रम से दांडी तक का 241 मील का रास्ता, 12 मार्च 2021 से शुरु करके 05 अप्रैल 2021 को 25 दिन में तय किया गया। उसी तर्ज पर इस कार्यक्रम की शुरुआत फ्रीडम मार्च नामक पदयात्रा से की गई। साबरमती से दांडी तक की यात्रा में गांधीजी सहित 80 स्वतंत्रता सेनानियों ने भाग लिया था। इसी आधार पर इस फ्रीडम मार्च में भी विभिन्न धर्मों, वर्णों व जातियों के 80 पदयात्रियों को शामिल किया गया।

15 अगस्त 2022 को देश की आजादी के 75 साल पूरे हो जाएंगे। इसी को ध्यान में रखते हुए 75वीं वर्षगांठ से ठीक एक साल और 75 सप्ताह पहले यानी 12 मार्च 2021 से जो कि दांडी मार्च की 91वीं वर्षगाँठ है, इन कार्यक्रमों की शुरुआत की गई है। इनमें देश के लिए प्रेम, सेवा व त्याग जैसी भावनाएँ दिखाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे जिसमें संगीत, नृत्य, प्रवचन, प्रस्तावना पठन आदि शामिल हैं। युवा शक्ति को भारत के भविष्य के रूप में दिखाते हुए गायकवृंद में 75 स्वर के साथ–साथ 75 नर्तक भी होंगे। इस महोत्सव में जन–चेतना, जन–जागरण व जन–भागीदारी पर विशेष बल दिया जा रहा है।

इस आयोजन के माध्यम से 'वोकल फॉर लोकल' अभियान को बढ़ावा देने का प्रयास भी किया जा रहा है। इसे लोकप्रिय बनाने के लिए साबरमती आश्रम में मगन निवास के पास एक चरखा स्थापित किया गया है। इसके तहत यह प्रावधान किया गया है कि कोई भी व्यक्ति जब किसी भी स्थानीय उत्पाद को खरीदेगा और 'वोकल फॉर लोकल' का इस्तेमाल करते हुए अपनी एक तस्वीर सोशल मीडिया पर पोस्ट करेगा तो आत्मनिर्भरता से संबंधित प्रत्येक ट्वीट के साथ यह चरखा एक बार घूमेगा।

दांडी मार्च या यूँ कहें कि नमक सत्याग्रह की वर्षगांठ पर आजादी का अमृत महोत्सव मनाने का मूल कारण आम–जन को यह बताना है कि नमक, ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की आत्मनिर्भरता का एक प्रतीक था। अंग्रेजों ने भारत के नैतिक मूल्यों के साथ–साथ इस आत्मनिर्भरता पर भी चोट की थी। महात्मा गांधी ने देश की पीड़ा को महसूस किया और नमक सत्याग्रह के रूप में लोगों की नब्ज को समझा, इसलिए वह आंदोलन जन–जन का आंदोलन बन गया था। इसी आधार पर 12 मार्च 2021 के दिन इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई ताकि आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा हो सके और भारत के विकास से सम्पूर्ण विश्व के विकास को भी प्रोत्साहन व सकारात्मक ऊर्जा मिल सके।

इस दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की श्रंखला में से एक, 'भारतके राष्ट्रगान' के गायन से सम्बंधित था जिसके तहत जनमानस को भारत के राष्ट्रगान को गाते समय का एक वीडियो बनाकर उसे अपलोड करने के लिए आमंत्रित किया गया था ताकि अधिक से अधिक लोग इस महोत्सव से जुड़कर इसमें अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर सकें। सच पूछिए तो प्रत्येक देश के हर नागरिक से यह अपेक्षा की जाती है वह अपने राष्ट्रध्वज से निश्छल प्रेम करते हुए राष्ट्रगान को कंठस्थ करे तथा राष्ट्रीय पर्वों पर उसे सस्वर गाकर गर्व व देश–प्रेम की अनुभूति करे। निरूसंदेह,

प्रत्येक नागरिक के लिए अपनी राष्ट्रभक्ति प्रदर्शित करने का यह एक उत्तम अवसर होता है और उसे यह अवसर कदापि नहीं गँवाना चाहिए।

मेरा यह मानना है कि देश के प्रत्येक नागरिक अपने–अपने व्यवसायों व रोजगारों के प्रति ईमानदार रहें, स्वावलंबी बनें तथा देश–सेवा से सम्बंधित प्रत्येक कार्य में अपनी निष्ठायुक्त भागीदारी करें तो निरूसंदेह ईश्वर प्रत्येक दिवस भारत की जनता पर अमृत वर्षा करते रहेंगे और भारत सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व वैश्विक दृष्टि से प्रगति व समृद्धि के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान होकर यह अमृत महोत्सव सदैव मनाता रहेगा।

डॉ. हीरा मीणा

'शहीदों की अमर कथा'

विशेष आलेख

पहला जलियांवाला बाग हत्याकांड (मानगढ़ पहाड़ी) के 1500 शहीदों को नमन

17 नवम्बर,1913

आप जानते है जलियांवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल, 1919) है, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं जलियांवाला बाग जैसी घटना इससे पूर्व भी हो चुकी है जो उस घटना से 6 वर्ष पूर्व यानी 17 नवम्बर, 1913 को घटित हुई थी। जलियांवाला हत्याकांड में सरकारी दस्तावेजों में 388 लोग शहीद हुए और सैंकडो घायल हुए, लेकिन उससे भी कई गुना जघन्य था मानगढ़ हत्याकांड ! इसमें 1500 आदिवासी शहीद हुए और हजारों घायल हुए थें। इस जघन्य हत्याकांड को अंजाम दिया था अंग्रेजों और स्थानीय राजाओं, जागीरदारों, महाजनों और दिकुओं ने मिलकर दिया था। जिसमें उनके सैनिकों ने पहाडी के चारों तरफ से तोपों और बंदूकों के घेरे में लेकर निहत्थे आदिवासियों को मौत के घाट उतारा गया था। इतिहास के अनछुए पहलुओं से परिचित करवाता लेख आजादी के अमृतोत्सव पर मानगढ़ की धरती के अनाम शहीदों को नमन करते हुए याद करता हैं।

भारत के इतिहास का मानगढ़ आदिवासी हत्याकांड राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश की सीमा पर अरावली पर्वत श्रृंखला में दफन रहा है। स्थानीय रियासतों और ब्रिटिश सरकार की कारगुजारियों से आदिवासियों का बर्बर हत्याकांड आज भी मुख्यधारा और उसके इतिहास में दर्ज नहीं हुआ हैं। आजादी के 75वें (आजादी के अमृतोत्सव) साल बाद भी देश की गुलामी के खिलाफ लड़ने वालों और बलिदान देने वालों को इतिहास में ठीक से अंकित नही किया। 109 साल पुरानी आदिवासी समाज की बहुत बड़ी कुर्बानी का प्रमुख क्षेत्र मानगढ़ पहाड़ी हैं। राजस्थान के बॉसवाड़ा और कुछ गुजरात में अरावली पर्वत श्रृंखला पर स्थित है, मानगढ 1500 से भी अधिक आदिवासियों का बलिदानध्हत्याकांड स्थल हैं। जिसे मानगढ़ धाम के नाम से भी जाना जाता है।

17 नवम्बर, 1913 में राजस्थान के मानगढ़ पहाड़ी पर भील, गरारिया, मीणा, सहरिया, बंजारा आदिवासियों के शांतिपूर्ण धूणी कार्यक्रम के विशाल आयोजन पर स्थानीय रजवाड़ों के इशारों पर ब्रिटिश सरकार की फौज द्वारा गोला–बारूद, गोली–बंदूकों के द्वारा नृशंस हत्याकांड किया गया था।

इस धूणी कार्यक्रम में समाज सुधार संबंधी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आदिवासी बच्चें, स्त्रियॉ, युवा और बुजुर्गों ने हजारों की तादात में भाग लिया था। यह कार्यक्रम सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक और समाज सुधार से संबंधित था इसी कारण लोगों ने परिवार सहित भारी संख्या में भाग लिया था गोविन्द गुरू की धुणी पर लगभग 30 हजार से भी अधिक आदिवासीजन शामिल हुए थें।

17 नवम्बर,1913 को मानगढ़ पहाड़ी बांसवाड़ा, डूंगरपुर के शासक स्थानीय रजवाड़ों, जगीरदार और ब्रिटिश अधिकारियों के आदेशों पर घुडसवारों, हजारों पैदल सैनिकों आधुनिक हथियारों के साथ बंदूकें, गोला–बारूद और तोपों के साथ पहाड़ी को तीनों और से घेरकर निहत्थें आदिवासियों का नरसंहार किया गया था। इस कांड में 1500 से भी अधिक आदिवासी निर्दयता पूर्वक मारे गये थें। हजारों की संख्या में गंभीर रूप से घायल और लहुलूहान हुए थें।

समाज सुधारक गोविन्द गुरू के नेतृत्व के साथ समाज में जनजागृति कार्यक्रमों और सम्मेलनों का आयोजन होता रहता था। गॉव–गॉव में पाठशाला खोलकर बच्चों और बड़ों को शिक्षित करने के साथ प्रमुख रूप से अशिक्षा दूर करना, झूठ नहीं बोलना, चोरी नहीं करना, मांस मदिरा का सेवन त्यागना, प्रकृति धर्म और स्वच्छता को बढावा देना, बैठ बैगार, बंधुआ मजदूरी, लगान, शोषण व उत्पीडन को लेकर विचार मंथन होता था। खेती, मजदूरी करके परिवार को आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत बनाने पर विशेष जोर होता था। गोविन्द गुरू ने भीलों के बीच समाज सुधार आंदोलन 1830 के दशक में शुरू किया था। जन–जन तक इस आंदोलन को पहुँचाने के लिए हवन–धूणी का संदेश पहुँचाया जाता था। गोविंद गुरू के आंदोलन में धूणी के रूप में अग्नि देवता को प्रतीक माना था। समाज के लोगों को बुराइयों को मिटाने, व्यवसन छोड़ने और सद्विचारों के साथ जिन्दगी जीने की शपथ या प्रेरणा इसी धुणी से मिलती थी। आदिवासी समाज के लोग गोविन्द गुरू के आदर्शों और नेक नीतियों से काफी प्रभावित हो रहे थे। उनका समाज सुधार का कारवां राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात के आदिवासियों को करीब लाकर एकजुट कर रहा था।

संप सभा की स्थापना 1883 में हुई थी। भीली भाषा में संप का अर्थ होता हैं दृ 'भाईचारा, एकता और प्रेम' संप सभा के माध्यम से आदिवासी क्षेत्रों में जनजागरूकता और समाज सुधार कार्यक्रम चलाये जा रहे थे। गोविन्द गुरू ने 1903 में अपनी धुणी मानगढ़ पहाड़ी पर जमाई थी। गोविन्द गुरू के नेतृत्व में सभी आदिवासियों की दयनीय और शोषणकारी स्थिति का जायजा लेकर अंग्रेजों के सामने 33 मांगे रखीं, जिसमें मुख्य मांगें अंग्रेजों और स्थानीय रजवाड़ों द्वारा किये जा रहे शोषण, दमन और अत्याचारों के खिलाफ थी, जिसमें बैठ बैगार, बंधुआ मजदूरी, भूमि या उपज पर भारी लगान को खत्म करने की थी। आदिवासियों की जायज मांगे नहीं मानने के कारण गोविन्द गुरू ने अपने अनुयायियों के साथ मानगढ़ टेकरी पहाड़ी पर रहना शुरू कर दिया। आदिवासी संगठित होकर एक बड़ी जन शक्ति बन गये। उनका कारवां बढ़ता जा रहा था, इसी कारण स्थानीय राजपूत शासक और जागीरदारों की चूलें हिलनें लगी थी। जन चेतना और शिक्षा के प्रचार–प्रसार से स्थानीय रजवाड़ों में खौफ बैठ रहा था कि पढें–लिखें आदिवासी उनके शोषण और अत्याचारों का विरोध करेंगे और विगत इतिहास का पता चलने पर वे अपनी पुरखो के गणराज्यों को प्राप्त करने की पूरी कोशिश भी करेंगे।

धूणी कार्यक्रम से गोविन्द गुरू के सानिध्य में आदिवासियों में जन चेतना का व्यापक प्रचार–प्रसार हो रहा था। उनके साथ सभी आदिवासी संगठित होकर अपने हक अधिकारों के लिए आवाज बुलंद कर रहे थें। हजारों की संख्या में भील, सहरिया, मीणा, गरासिया, बंजारा आदि समुदायों का काफिला बढ़ता गया। स्थानीय शासन के सामंतों और रजवाड़ो ने ब्रिटिश सरकार पर दबाव बनाकर आदिवासियों के खिलाफ भड़का दिया।

15 नवम्बर को विभिन्न फौजी दस्तों के कमाण्डर मेजर वेली ने मेवाड भील कोर कमाण्डेंट जे पी स्टोक्ले, नवीं राजपूत के कमाण्डेंट कैप्टीन आइस कोह एवं जाट रेजीमेंट की कम्पनी के कमाण्डेंट से सैनिक कार्यवाही के दौरानी अपनायी जाने वाली रणनीति पर दिनभर दो सत्रों में चर्चा की। 17 नवंबर, 1913 को कैप्टीन स्टोक्ले के आदेश पर मेवाड़ भील कोर, नवीं राजपूत कंपनी, वेल्सले रायफल्स की एक कंपनी, बांसवाडा राज्य के 100 घुडसवार, स्थानीय रजवाड़े, जागीरदारों ने सुबह 3–4 बजे फौजी दस्तों के साथ आदिवासियों का निर्दयतापूर्वक नरसंहार कर दिया। ब्रिटिश सरकार द्वारा गोविन्द गुरू के शांतिपूर्ण कार्यक्रम में निहत्थे, निरापराधी लोगों को मौत के घाट उतारा गया, इसमें बच्चें, महिलां, बुजुर्ग, युवा हजारों की तादात में शामिल थें।

बड़े–बुजुर्गों की तीसरी चौथी पीढ़ी के मुख से आज भी उस हत्याकांड को लोकगीतों–लोकथाओं के माध्यम से सुना जा सकता हैं। राजस्थान गुजरात में गोविन्द गुरू के धुणी धाम आज भी जन चेतना के साथ उस दारूण महागाथा को बयां करते नजर आ रहे हैं।

गोविन्द गुरू का देशभक्ति आह्वान का लोकप्रिय जन गीत इस प्रकार है :–

'झालोद मांय मारी कुंडी है
दाहोद मांय मारो दीयो है
भूरेटिया नी मानू रे, नी मानू
गोधरा मांय मारी जाजम है,
अहमदाबाद मांय बैठक हैं।
भूरेटिया नी मानू रे, नी मानू
दिल्ली मांय मारी गादी है
बेणेश्वर मांय मारो चोपड़ो है
मानगढ़ मारी धूणी है
भूरेटिया नी मानू रे, नी मानू
जाम्बू में मारो अखाड़ो है
मानगढ़ मारो वेरा है
वेरा ने वाली ने पंचायत राज करबू है
भूरेटिया नी मानू रे, नी मानू

प्रसिद्ध वरिष्ठ आदिवासी साहित्यकार हरिराम मीणा के अनुसार

"गोविंद गुरू वागड़ प्रदेश को ही जम्बू खंड मानते थे। भूरेटिया अर्थात फिरंगियों को वे अपना असली दुश्मन मानते थे चूंकि उन्ही के कारण देसी राजाओं ने आदिवासी विरोधी नीतियां लागू की थी।

जागरती आंदोलन का प्रमुख केंद्र मानगढ़ ही बन गया था। अंग्रेजों का सत्ता केंद्र दिल्ली था इस गीत से संकेत मिलते हैं कि गोविंद गुरू का अन्तिम लक्ष्य दिल्ली की गद्दी था अर्थात अंग्रेजी राज का खात्मा। उनका सपना था भविष्य में आदिवासी पंचायत राज करें। उनकी विचारधारा का केंद्रीय भाव आदिवासियों को कष्टों से मुक्ति दिलाना था।"

यह राजस्थान के आदिवासी समाज का बहुत बड़ा हत्याकांड है जो जलियांवाला हत्याकांड (13 अप्रैल, 1919) से 6 वर्ष पूर्व 17 नवम्बर, 1913 में घटित हुआ था। जलियांवाला हत्याकांड में 400 लोगों को और मानगढ़ हत्याकांड में 1500 से भी ज्यादा लोगों को मौत के घाट उतारा गया था। सैकडों, हजारों की संख्या में लोग गंभीर रूप से जख्मी हुए थे, दोनों हत्याकांड बेहद क्रूर और अमावीय थे। प्रशासन के इशारों से अंजाम दिये गये थें। जलियांवाला हत्याकांड इतिहास और सबकी जुबान पर है, लेकिन मानगढ़ हत्याकांड (नरसंहार) के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। दोनों हत्याकांडों में देश के लोग ही मातृभूमि को बचाने के लिए कुर्बान हुए हैं। इन अनाम शहीदों को देश नमन करता हैं।

आज हम स्वतंत्र और लोकतांत्रिक देश के सात दशक देख चुकें है। अब हम सबको पूर्वजों के इतिहास को सम्मान के साथ दर्ज करके आने वाली पीढियों के लिए गौरवशाली धरोहर सहेजनी चाहिए। साहित्य समाज का दर्पण होता हैं और इतिहास उसका भूतकाल इसीलिए इतिहास को महत्व देकर हम वर्तमान और भविष्य को बेहतर गढ़ सकते है। जिस समाज का इतिहास नहीं लिखा जाता, उसकी पहचान मिट जाती है। आदिवासियों के इतिहास से आप अतीत, साहित्य, संस्कृति, परंपराओं, बोलियो, भाषाओं के साथ अपनी और आने वाली पीढियों की पहचान को संरक्षित दर्ज कर समाज की अमिट बनायेंगे।

आदिवासी समाज के नायक–नायिकाओं के संघर्षों और बलिदानों को उचित सम्मान के साथ उनकी गौरव गाथा को साहित्य, इतिहास और पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए। बच्चों और युवकों को प्रोत्साहित करने के लिए इनके नामों से पुरस्कार दिए जाने चाहिए। देश के लिए बलिदान होने वाले नायक और नायिकाओं की गौरवगाथाओं के साथ स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जानी चाहिए। उनकी जयंती और पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रमों के द्वारा उनके व्यक्तित्व, संघर्षों और बलिदानों की शौर्यगाथाओं को जन–जन तक पहुँचाना चाहिए।

आप वहॉ जाएगें तो उस घटना की गुंज आ भी लोक गीतों में, कथाओं में पाएगें। उस स्थल पर आज भी रूहानी शक्ति से महसूस करेंगे। मानगढ़ पहाडी के बीच में गोविंद गुरू का स्थल हैं पत्थर की अनेकों शिलाओं पट्टों पर ऐतिहासिक विवरण दर्ज किया है। पास ही धूणी स्थल हैं जहॉ पर कई वर्षों से आज तक प्रज्जवलित हैं। राजस्थान सरकार ने मानगढ़ पहाडी पर पैनोरमा भी बन कर तैयार हो चुका है जहॉ पर आदिवासी संग्रहालय है और इस घटना के जीवंत चित्राकृतियों की प्रस्तुति है।

आपको मानगढ़ पहाड़ी बुला रही हैं आप जरूर वहॉ जाएंगा और उन 1500 शहीदों को श्रृंद्धासमुन अर्पित कर नमन करें। हमारे आजादी के अमृतोत्सव की सार्थकता होगी।

आकांक्षा जी खोडा

उलगुलान के महानायक 'धरती आबा':

बिरसा मुंडा के बलिदान दिवस पर विशेष

जन्म – 15 नवंबर, 1875

बलिदान दिवस – 9 जून, 1900

महानायक बिरसा मुंडा के 122 वें बलिदान दिवस पर देश याद कर रहा हैं। उनकी देशभक्ति जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए विशाल बिट्रिश हुकूमत और तत्कालीन राजाओं, जागीरदारों, सरदारों, महाजनों, दिकुओं से संघर्ष की महागाथा के नायक है बिरसा मुंडा। आजादी के अमृत महोत्सव काल में आजादी के यौद्धाओं में महत्वपूर्ण भूमिका रही थी बिरसा मुंडा धरती आभा की ...

महानायक बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर, 1875 में हुआ था। छोटा नागपुर जो वर्तमान में झारखंड राज्य के खूंटी जिले के उलीहातू गॉव में हुआ था। इनकी माता का नाम करमी हातू और पिता का नाम सुगना मुंडा था। बृहस्पतिवार को जन्म लेने के कारण उनका नाम बिरसा मुंडा रखा गया। मुंडा एक आदिवासी समूह था जो छोटा नागपुर पठार में निवास करते थे। बिरसा के माता–पिता गरीबी की मार झेलने के कारण शिक्षा दिलवाना तो दूर दो वक्त की रोटी भी नहीं दे पाते थे। ऐसी अवस्था में बिरसा को उनकी मौसी अपने गांव खटंगा ले आती है। वहॉ पर बालक बिरसा भेड़–बकरियों को चराता था। जंगल में भेड़–बकरियों को चराते हुए बिरसा बहुत मधुर बांसुरी बजाया करता था। कुछ समय बाद बिरसा को सालगा गॉव में प्रारंभिक शिक्षा के लिए भेजा गया, बाद में वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल पढ़ने आये। आर्थिक अभावों को झेलने वाले बिरसा को 15 वर्ष की आयु में ही शिक्षा छोड़नी पड़ी। बचपन से ही बिरसा जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भटकता रहा। किशोरावस्था से युवावस्था में पहुँचते–पहुँचते दरिद्रता की वजह और उसका निराकरण खोजता रहा। समाज की विपन्नता का कारण बिरसा ने खोज लिया, वो था विस्थापन जिसके मुख्य कारण थें दृ वनोपज पर आदिवासियों के पुश्तैनी अधिकारों पर

पाबंदी, कृषि भूमि के उत्पाद पर लगान और अन्य प्रकार की जबरन वसूली आदि।

ब्रिटिश शासन व्यवस्था, भारतीय सामंतों, कारिंदों, जमींदारों, जागीदारों, ठेकेदारों और सेठ साहुकारों के शोषण और दमन चक्र की भट्टी में देशभर का आदिवासी समाज झुलस रहा था। देश के मूल मालिक आदिवासियों से जल, जंगल और जमीन का मालिकाना हक अधिकार छीना जा रहा था। खेत–खलिहानों, वनों और जंगलों के उत्पाद का सेठ–साहूकार बहुत कम मूल्य देते थे और मूलभूत आवश्यक वस्तुओं को ऊँचे दामों में बेचते थें। विरोध करने वाले व्यक्तियों को बहुत प्रताडित किया जाता था। बिना किसी अपराध के सरकारी कारिंदों के हवाले कर जेल की अमानवीय यातनाओं में ध केल दिया जाता था। आदिवासी महिलाओं के साथ भी दुराचार किया जाता था। इसीकारण गरीबी, शोषण, अत्याचार और कानूनी शिकंजों में फंसा आदिवासी समाज अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पा रहा था।

शोषण करने वाले बाहरी लोगों को बिरसा 'दिकू' बोलते थे। ये वो लोग थे जो आदिवासी इलाको में बाहर से आये थे या वहां के कारिंदे, जमींदार और ठेकेदार थे जो आदिवासियों को लूटते हुए उनका शोषण और अत्याचार करते रहते थे। आदिवासी समाज में शादी, उत्सव, पूजा, जन्म और मृत्यु होने पर भी टैक्स भरना पड़ता था। बिरसा को समझ में आ गया था, की इन शोषणकारी दिकू को बाहर भगाये बगैर समाज को अभावों, शोषण और दुखों से मुक्ति नहीं मिल सकती। पाखंडवाद और धर्मांतरण के तहत समाज गुलामी की बेडियों में जकड़ा जा रहा था बिरसा जान गये थे। इसीकारण जनचेतना अभियानों से लोगों में जन जागरूकता अभियान चलाया और अबुआ दिसोम रे, अबुआ राज (हमारी ध रती, हमारा राज) की घोषणा कर दी। बिरसा मुंडा और उसके साथियों ने छोटा नागपुर में भयंकर अकाल, महामारी और लगान वसूली से त्रस्त होकर 1892 में लागू वनोपज के लगान वसूल कानून का जबरदस्त विरोध करते हुए, 1894 में अंग्रेजों से लगान माफी के लिए आंदोलन किया था। आंदोलन की व्यापकता और उग्रता को देखते हुए 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी।

18 वर्ष की युवावस्था में ही जनसंघर्षों में अग्रणी भूमिका निभाने के कारण बिरसा मुंडा आदिवासी समाज के नेतृत्वकारी महानायक बन गये। जल, जंगल, जमीन पर मालिकाना हक दिलाने के लिए उन्हें 'धरती आबा' (धरती के पिता) के नाम से पुकारा जाने लगा। बिरसा मुंडा ने गुलामी के खिलाफ न केवल राजनीतिक जागृति के बारे में संकल्प लिया बल्कि समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ध ार्मिक जनजागृति पैदा करने के लिए गॉव–गॉव घुमकर अपनी भाषा, बोली और संस्कृति को बचाते हुए 'अबुआ दिशोम रे, अबुआ राज' का क्रांतिकारी बिगुल फूंक दिया।

उन्होंने सिंगबौंगा (सूर्य) और धरती को अपना आराधक घोषित किया था। बिरसा मुंडा दोहरी लड़ाई लड़ रहे थे एक तरफ पाखण्डवाद, अंधविश्वास और धर्मान्तरण से समाज को मुक्ति दिलाने के जनजागरण अभियान और दूसरी तरफ ब्रिटिश हुकूमत की गुलामी और अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे।

1897 से 1900 के दौरान मुंडाओं और ब्रिटिश सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहें। समाज हितैषी बिरसा और उनके जाबांज साथियों ने सामंतो–साहुकारों, ठेकेदारों और अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया। जीवन संगिनी माकी मुंडा के सहयोग और समर्पण से उनका उलगुलानी कारवां बढ़ता गया। उसी

दौरान जाबाज साथियों के साथ मिलकर अपने तीर कमानों से खूंटी थाने पर धावा बोल दिया था। बाद में तांगा नदी के किनारे ब्रिटिश सेना के साथ युद्ध हुआ, जिसमें अंग्रेजी सेना हार गयी थी। उसके बाद उस इलाके में सख्त कार्यवाही के दौरान आदिवासी अगुवाओं की गिरफ्तारियां की गई।

जनवरी 1900 में डुम्बारी पहाड़ पर बिरसा मुंडा जनसभा को संबोधित कर रहे थे, तभी ब्रिटिश सैनिकों ने अचानक हमला कर दिया। इसमें कई महिलां, युवा, बुजुर्ग मारें गये थें तथा सैंकडों गंभीर रूप से घायल हो गयें। बिरसा और उनके कुछ साथी बड़ी मुश्किलों से बच–बचाकर वहॉ से निकल गये थे। बिरसा के साथियों की गिरफ्तारियॉ की गई। ब्रिटिश सरकार द्वारा बिरसा की गिरफ्तारी के साथ ईनाम की घोषणा कर दी गई। समाज के धोखेबाजों की साजिशों के कारण 3 फरवरी, 1900 को चक्रधरपुर से बिरसा को गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय बिरसा मुंडा महान क्रांतिकारी और आदिवासी समाज का उलगुलान (महाविद्रोह) के नायक बन गये थे। मुंडा, हो, उरांव, कोल आदि सभी आदिवासियों का उलगुलान महानायक बिरसा मुंडा बन गया था। सबने मिलकर गुलामी की बेडियों को तोड़ने के लिए मुक्ति संग्राम की ठान ली और ऐलान कर दिया 'अबुआ राज ऐते जना, महारानी राज टुण्डु जना अर्थात हमारा राज आयेगा, महारानी का राज खत्म होगा। वर्तमान झारखंड में 'बिरसा क्रांति' व्यापक रूप में फैल चुकी थी। चारों ओर विद्रोह के स्वर उठने लगे थे। मामलें को शांत करने के लिए कोर्ट केस की तारीखें दे दी गई। सरकार प्रतिरोध को देखकर बौखला गई थी और मुकदमों की सुनवाई का वक्त भी नहीं था। 9 जून 1900 को रांची जैल में बिरसा को धीमा जहर देकर मार दिया गया और प्रचार किया गया कि वह हैजा की बीमारी से मर गया। रांची की जैल में रात को ही बिरसा की लाश को चुपचाप जला दिया गया। 25 साल के युवा क्रांतिकारी, महानायक, समाज के अगुआ, वीर यौधा बिरसा मुंडा ने आजादी की लड़ाई में अपने प्राणों का बलिदान दिया है।

देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और आदिवासी समाज के प्रमुख महानायक, क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी और अल्पायु में देश के लिए बलिदानी बिरसा के परिवारजन किस हालत में हैं किसी से छिपा नहीं हैं पिछलें वर्ष इनकी पौती जौनी मुंडा जीविकापार्जन केलिए सड़क पर सब्जियां बेच रही थी तो पौते दैनिक वेतन पर कामकाज मजदूरी कर रहे हैं। सरकार का ध्यान न इनके परिवार पर गया और ना ही इनके गॉव और घर के दयनीय हालतों पर। सरकार और आदिवासी समाज को तुरंत यथोचित सहायता करनी होगी।

वे 'धरती आबा' धरती के पिता के रूप माने जाते हैं। आदिवासी समाज के गौरवशाली व्यक्तित्व की विराट आभा सबको जल, जंगल, जमीन और देश प्रेम की प्रेरणा दे रही हैं। उलगुलान के महानायक बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर 15 नवम्बर, 2021 को केंद्र सरकार जनजातीय गौरव दिवस मनाने जा रही हैं। धरती आबा राष्ट्रीय नहीं अंतर्राष्ट्रीय प्रेरणास्रोत हैं इनकी जयंती को राष्ट्रीय स्वाभिमान दिवस के रूप में देश भर में मनाया जाना चाहिए। 25 वर्ष की अल्पायु में देश के लिए बलिदान देने वाले महानायक को भारत सरकार अविलम्ब भारत रत्न प्रदान करें। देश की संसद और राज्यों की विधान सभा में इनकी प्रतिमा स्थापित हो। केंद्र सरकार द्वारा सभी सरकारी कार्यालयों में महात्मा गांधी, बी आर अम्बेडकर की तरह फोटो लगाने की अधिसूचना जारी हो। राष्ट्रीय स्तर पर महानायक बिरसा मुंडा की जयंती पर अवकाश घोषित हो। महानायक के नाम से विश्वविद्यालय, सरकारी संस्थान, सरकारी इमारतों के नाम रखें जायें। विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में शोध केंद्र स्थापित किए जाए। आदिवासी नायकों और क्रांतियों पर मीडिया की ओर से डाक्यूमेंटरी

बनाकर प्रचारित प्रसारित की जाए जिससे आदिवासी अमर बलिदान की गाथां जन–जन तक पहुँचें। सरकार को इनके नाम से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों दिए जाने चाहिए।

देश के लिए अपने आप को बलिदान करने वाले नायक–नायिकाओं, क्रांतिकारियों, बलिदानियों, देशभक्तों आदि सभी को सच्ची और समर्पित श्रृदांजलि होगी।

डॉ. गौतम कुमार मीणा
उप प्रबंधक (राजभाषा)
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं. लि. दिल्ली

'शहीदों की अमर कथा'

30 जून पर विशेष आलेख

जल, जंगल, जमीन और अस्तित्व के लिए फिरंगियों और देशी दिकुओं से आदिवासियों के संघर्ष की महागाथा का जन आंदोलन 167 वें 'हूल दिवस'

30 जून,1855 की तारीख भारतीय इतिहास में सबसे बड़े क्रांतिकारी बलिदान की तारीख है। इस दिन फिरंगी हुकूमत के विरूद्ध झारखंड के साहिबगंज जिले के बरहैट प्रखंड के भोगनाडीह गाँव में सिद्धो–कानहु, चॉद, भैरव, फूलो, झानो के नेतृत्व में 'संथाल–हूल' एशिया का पहला जन आंदोलन हुआ। भारत के आदिवासी क्षेत्रों में 'संथाल आंदोलन' या 'हूल क्रांति' दिवस 30 जून को शहीदों की याद में मनाया जाता है। भारतीय इतिहास में स्वाधीनता संग्राम की पहली लड़ाई सन् 1857 की मानी जाती हैं, किंतु इससे पूर्व देशभर के आदिवासी राज्यों में आदिवासियों के द्वारा 1781 से 1855 तक कई विद्रोह और युद्ध जल, जंगल और जमीन को बचाने के लिए हुए हैं। जिसमें हजारों–लाखों आदिवासी जांबाज यौद्धाओं ने अपनी धरती मॉ के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया हैं। इन बलिदानियों को इतिहास में ना तो उचित स्थान दिया है, ना सम्मान मिला और ना ही शहीद का दर्जा मिला हैं।

सिद्धो तथा कान्हू दो भाइयों के नेतृत्व में 30 जून, 1855 ई. को वर्तमान साहेबगंज जिले के भोगनाडीह (बड़हैत) गांव से प्रारंभ विद्रोह के मौके पर सिद्धो ने घोषणा की थी– करो या मरो, अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ो। इसमें 60 हजार आदिवासियों ने वीरता और जाबांजी से परंपरागत अस्त्र (तीर–धनुष,

भालें, कुल्हाडी, हंसिया, गंड़ासा आदि) से अंग्रेजों के आधुनिक हथियारों (बंदूकें, तोपें, गोला, बारूद) व प्रशिक्षित सेना का सामना करते हुए 15 हजार आदिवासियों ने अपना बलिदान दिया। ब्रिटिश सेना की भी जन–धन की बहुत क्षति हुई। संथाल आंदोलन में अंग्रेजी हुकूमत ने अपने शासन काल में भारत वर्ष में पहली बार मार्शल–लॉ (फौजी कानून) लागू किया। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह क्रांति 1857 की क्रांति से भी अधिक महत्वपूर्ण थी।

संथाल परगना का पूर्व में 'जंगल तराई' नाम था इस जगह का नाम अंग्रेजों ने 1824 में 'दामिन–ए–कोह' रखा। वर्तमान में यह जगह जिले साहेबगंज के प्रखण्ड बड़हैत में भोगनाडीह है। इस श्दामिन–ए–कोहश के श्भोगनाडीहश ग्राम के परगना में चुनका मुर्मू के पुत्र सिद्धो, कान्हू, चांद व भैरव दो पुत्रियां फूलो और झानो ने हूल क्रांति का नेतृत्व किया था। इसलिए भी संताल आदिवासी पर हो रहे शोषण, उत्पीड़न और अत्याचारों को करीब से देखा था। आदिवासियों पर ब्रिटिश सरकार और महाजनों के शोषण, अमानवीय अत्याचार, जोरों–जुल्म की असहनीय पीड़ा के कारण अंग्रेजी सत्ता को संथालों ने ललकारा था। सिद्धो, कान्हू ने अपने नेतृत्व में आदिवासियों को जनचेतना से जाग्रत कर ब्रिटिश शासन को जड़ों से उखाड़ फेंकने के लिए संथाल आंदोलन का नेतृत्व किया।

सिद्धो और कान्हू दोनों भाइयों ने 1855 से 1856 तक संथाल–हूल या मुक्ति आंदोलन का नेतृत्व किया और फिरंगी साम्राज्य की जड़ों को झिंझोड़ दिया। कहा जाता है कि अंग्रेजों का यह विशाल साम्राज्य सारे विश्व में फैला हुआ था। जिसका सूरज कभी नहीं डूबता था। सिद्धो और कान्हू ने वैसे साम्राज्य को चुनौती दी थीं। संथाल विद्रोह की क्यों आवश्यकता रही इसके लिए तत्कालीन परिस्थितियॉ उत्तरदायी रही हैं।

अंग्रेजों द्वारा स्थाई बंदोबस्त नीति को लागू किया जाना, जमीन की मालगुजारी, हल–बैल की संख्या के अनुसार निर्धारित की जाने लगी। लगान की राशि भी पहले से अधिक बढ़ा दी गई। ज्यादा लगान की वसूली की जाने लगी। लगान न चुकाने पर जमीन की नीलामी और बेदखली होने लगी थी।

अपनी कूटनीतिक के तहत अंग्रेजी सरकार ने कलकत्ता से लोटा पहाड़ (संथाल परगना) तक रेल लाइन बिछाए जाने के रास्ते में जो भी जमीन आई, उनके मालिकों को जमीनों का मुआवजा दिए बिना जबरन उनके खेत, खलियान और घरों से बेदखल कर दिया। आदिवासियों की हजारों एकड़ जमीन छीन ली गई। रेल लाइन में मजदूरी करने हेतु गरीब लोगों को जबरदस्ती बेगारी के लिए कलकत्ता भेजा जाने लगा। महिलाओं की इज्जत–आबरू को सरेआम ठेकेदारों और गोरे साहबों ने लूटना शुरू कर दिया। भोगनाडीह गांव की दो जवान लड़कियां मैनो और मिरू को अंग्रेजों ने अपनी वासना का शिकार बनाया और उनका अपहरण कर उन्हें कलकत्ता भेज दिया।

संथाल परगना क्षेत्र के बाहर से लाकर बसाये गये कई जमीदारों एवं महाजनों ने संथालों पर घोर अत्याचार और अमानवीय शोषण करना शुरू कर दिया। जिनमें से निमाई मजूमदार एवं मानिकचंद जैसे सूदखोर एवं महाजनों का अत्याचार और बर्बरता सीमाएं लांघ रही थी। निमाई मजूमदार एवं मानिकचंद ने केनाराम (खरीदने का तोलमाप) और बेचाराम (बेचने का तोलमाप) नाम के बटखरे(तोलमाप) बनाकर जनता को मनमाने ढंग से लूटना शुरू कर दिया। उन्होंने अनाज को खरीदने और बेचने के लिए दो

प्रकार के बटखरे बनाएं खरीदने के लिए भारी केनाराम और बेचने के लिए हल्का यानी बेचाराम का उपयोग करके भोले–भाले आदिवासियों को सरकेआम लूटते रहें। इस प्रकार यह महाजन अनाज के रूप में कर्ज देते समय कम वजन के बटखरे को व्यवहार में लेते थे, परंतु कर्ज वापस लेते समय धर्म कांटे के नाम पर अधिक वजन के बटखरे केनाराम का प्रयोग करते थे। इस तरह संथालों द्वारा पैदा किए गए खून–पसीनें की मेहनत के अनाज को महाजन और साहूकार सरेआम लूटते थें।

इसी बीच अंग्रेजी हुकूमत ने संताल परगना के ग्रामीण क्षेत्रों की देखभाल के लिए क्रूर और अत्याचारी महेश दरोगा को नियुक्त कर दिया। वह अपनी प्रशासनिक शक्ति का उपयोग अपने स्वार्थ सिद्धि एवं घूस–उगाई हेतु करने लगा। इस तरह लोगों पर अत्याचार बढ़ते चले गए। वह महिलाओं को भी अपनी कामवासना का शिकार बनाने लगा। महेश दरोगा के पास जब कभी कोई व्यक्ति निमाई मजूमदार और मानिकचंद के काले कारनामों, जालसाजियों के खिलाफ शिकायत करने जाता तो दरोगा सूदखोर, साहूकारों का ही पक्ष लेता और उल्टे शिकायत करने वाले व्यक्ति को ही कड़ी सजा भुगतने को मजबूर करता। लोग महेश दरोगा से तंग आ चुके थे और उसके अत्याचारों से भयभीत भी थे।

महेश दरोगा के अतिरिक्त पहाड़ी इलाका एक अंग्रेज कप्तान का कार्यक्षेत्र था। लोग उसे ग्रेगरी साहब के नाम से जानते थे। वह महिलाओं का शोषण और अत्याचार करता था। जिसकी भनक सिद्धो कान्हू को लग गयी थी। उन्होंने अत्याचारों की विभिन्न घटनाओं से संबंधित शिकायतों को सूचीबद्ध किया और उनके खिलाफ विभिन्न सरकारी महकमों के उच्च पदाधिकारियों के समक्ष शिकायत पत्र भेजें। प्रशासन की ओर से शिकायत पत्रों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। कानून और प्रशासन से आदिवासियों का विश्वास उठ रहा था, जिससे घोर असंतोष फैलता गया।

सन् 1853 से ही विभिन्न अत्याचारों के खिलाफ लगातार शिकायत पत्र एवं अधिकारियों के समक्ष भेजने का कार्यक्रम चलता रहा परंतु सरकार की ओर से किसी प्रकार की सुनवाई नहीं होने एवं उपेक्षापूर्ण रवैया के कारण लोगों का असंतोष आक्रोश में बदलने लगा। सरकार के कानून और प्रशासन नाम की चीज से ही उनका विश्वास उठ गया।

अंग्रेजों ने संथालों का जीना हराम कर दिया। जमीन के गैरकानूनी विवरण एवं लगान संबंधी नए–नए कानून लागू किए जाने लगे। लगान की भारी कीमत चूकाने में असमर्थ आदिवासियों को जबरन उनके खेत–खलियानों और स्थाई निवास स्थल से बेदखल करके जमीनों को नीलाम कर दिया जाता था, विरोध करने वालों को बिना किसी जुर्म के भी जेल में अमानवीय यातनाओं से गुजरना पड़ता था। 'दामिनी–ए–कोह' के क्षेत्र में संथालों द्वारा बनाए गए खेतों को बाहर से आए हुए अन्य समुदायों में जबरन वितरित कर दिया गया। संथालों के बीच धीरे–धीरे विद्रोह की आग सुलगने लगी। अंततः उन्होंने अत्याचार से निजात पाने के लिए जन आंदोलन का रास्ता चुना।

प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक स्टीफनफ्यूक के अनुसार भोगनाडीह (बड़हैत) के मैदान में 30 जून1855 की रात को 10 हजार संथाल क्रांतिकारी योद्धा एकत्रित हुए थे। आज भी भोगनाडीह का यह मैदान विद्रोह का मुख्य गवाह बन कर खड़ा है। इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि विद्रोहियों को कई दिनों तक इस मैदान में युद्ध कौशल का प्रशिक्षण दिया गया था। क्रांतिकारी समूह को सिद्धो–कान्हू ने संबोधित किया था।

जन आंदोलन मे सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि क्रांति का नेतृत्व सिद्धो करेगें। कान्हू और चांद

को सलाहकार तथा भैरव को आंदोलन का सेनापति चुना गया। चारों भाइयों और दोनों बहिनों फूलो, झानो की सुझ–बुझ और साहसिक योगदान से यह कारवां संथाल परगाना के 400 गॉवों में फैल गया। फूलो–झानो की रणनीति से एक हजार महिला जांबाज साहसी यौद्धा इस रण में उतर गयी। महिला दल का नेतृत्व फूलो और झानो ने बड़ी मुस्तैदी से गुप्तचर व्यवस्था और रसद व्यवस्था की जिम्मेदारी को बेहतरीन तरिकें से निभाया था। इस महासंग्राम की व्यापकता और शक्ति की कारण भी वे दोनो बहिनें ही रही क्योंकि उनके साहसिक समर्पण को देखकर ही संथाल परगना के गांवों के पुरूष ही नहीं महिलाएं, युवा, बुजुर्ग और बच्चें भी शामिल हो गये थें।

30 जून 1855 को रात संथाल–हूल की शुरुआत सिद्धो कान्हू ने परंपरागत रीति से शंखनाद करके और नगाड़े बजाकर आदिवासी क्रांतिकारियों ने घोषणा की 'अब हमारे ऊपर कोई सरकार नहीं होगी, थानेदार नहीं होगा। हाकिम नहीं होगा। अब केवल संथाल राज्य होगा'। सिद्धो कान्हू ने नारा लगाया, 'हूल वायार जितकार', 'हूल सेंगेल जितकार', नारों से धरती और गगन गुंज उठा। ईस्ट इण्डिया कंपनी उनके अधिकारी और सूदखोर महाजन के खेमों में हड़कंप मच गया।

इस आंदोलन में क्रांतिकारियों ने समाज का शोषण और अत्याचार करने वाले कारिंदों को अपना निशाना बनाया। इसकी शुरूआत तत्कालीन सूदखोर महाजन निमाई मजूमदार और मानिकचंद को मार कर की गई, उसके बाद क्रूर महेश दरोगा की हत्या कर की, थॉमस और नील ठेकेदार हेनस पर भी हमला किया गया, जिससे वे दोनों घायल होकर अपनी जान बचाकर भाग निकलें।

पाकुड़ की रानी सेम सुंदरी को ईस्ट इंडिया कम्पनी की मदद न करने की सलाह दी लेकिन सेम सुंदरी ने आदिवासियों का साथ न देकर इस आंदोलन में ब्रिटिश हुकूमत का ही साथ दिया था। इसी कारण संथालों ने पाकुड़ के राजमहल पर धावा बोल दिया और उसे अपने अधीन कर लिया। बिहार से सटे हुए हिस्से बांकुड़ा, वीरभूम, मुर्शिदाबाद के विशाल अंचलों पर संथालों ने अपना अधिकार कायम कर लिया। पीर पाड़ती के मैदान में मेजर बरोज ने अपने सैनिकों के साथ विद्रोही संथालों पर हमला किया। संथालों के बुलंद हौसलों से शिकख्त खाकर मेजर बरोज हार गया और मैदान छोड़कर भाग गया। उसने पुनरू 27 जुलाई को बंदाबनी और बॉसकोली पर बारी–बारी से हमला किया, परंतु वहां भी उसे असफलता हाथ लगी। इस लड़ाई में लेफ्टिनेंट टोलमिन मारा गया तथा ब्रिगेडियर ब्राउन ड़र के मारे जान बचाकर भाग गया।

फूलो और झानो ने एक हजार आदिवासी महिलाओं का जांबाज दस्ता अपने पूर्ण समर्पण के साथ कार्य कर रहा था। ब्रिटिश सरकार को इसकी भनक भी नही पड़ी। इस महिला दस्ते की प्रत्येक महिला ने गॉव–गॉव जाकर क्रांति का आगाज किया और क्रांति की प्रतीक साल वृक्ष की टहनी को घर–घर पहुँचाया। महिलाओं ने 400 गॉवों में साल वृक्ष की क्रांति प्रतीक टहनी पहुँचाई। संथाल आदिवासियों ने भी अपनी अट्टू जीजिविषा के साथ तन, मन, धन और पूर्ण सर्मपण के साथ भाग लिया।

भागलपुर कमिश्नर ब्राउन के नेतृत्व में सरकार की ओर से विद्रोह को कुचलने के लिए बैरकपुर, बरहमपुर एवं दानापुर से सेना बुलाई गई। दुर्गम इलाकों में संथाल विद्रोह को कुचलने के लिए हाथियों का भी उपयोग लिया गया। अंग्रेजों की फौजों ने संथालों को कुटनीति से हराने का प्रयास किया। अंग्रेजों ने कई छल प्रपंच किए। सिद्धों व कान्हू को पकडने वाले के लिए 10 हजार का नकद इमान भी रखा गया। उस समय के 10 हजार रूपये आज के समय के कई करोड़ रूपये होगें। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्रांति का प्रभाव तेजी से विकराल युद्ध का रूप धारण कर रह था।

बंगाल के धनी महाजन, सूदखोर और संभ्रांत लोगों ने सरकार का साथ दिया। मुर्शिदाबाद के नवाब ने 29 हाथियों और कई घोड़ों को मुर्शिदाबाद के मजिस्ट्रेट के पास भेजा था ताकि विद्रोहियों को दबाया जा सके। संथाल–हूल के सेनानी अत्याचारी जमीदारों, महाजनों के घर को लूटते हुए लगातार आगे बढ़ते रहें। उन्होंने केवल अत्याचारियों को ही निशाना बनाया। संथाल–हूल के सेनानी 30 जून 1855 से सितंबर 1856 तक लगातार दिन–रात तेज गति और बुलंद हौसलें के साथ आगे बढ़ते गए। संथाल आदिवासी भोगनाडीह (संथाल परगना) से मुर्शिदाबाद (बंगाल प्रांत) के छोर तक पूरे जोश के साथ 'हूल बायार जितकार' के नारे बुलंद करते हुए 'दामिन–ए कोह' के पूरे क्षेत्र में छा गए।

जिस तेजी से के साथ इस आंदोलन की लहर फैली उससे भी अधिक विकराल रूप धारण कर लिया था। यह दुनिया और देश में संथाल आदिवासियों का सबसे बड़ा बेमिसाल जन युद्ध था। विद्रोह की चिंगारी एक महिने में ही (30 जुलाई 1855) तक 40 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में भड़क उठी थी।

फूलो और झानो के साहसी महिला दस्ते ने अपनी जान पर खेलकर युद्ध वीरों को रसद और हथियारों की भरपूर आपूर्ति की, इसके साथ ही वे ब्रिटिश हुकूमत की खुफिया जानकारी भी अपने नायकों तक पहुँचाती रही। अंग्रेजों से अपनी स्वायत्तता पाने के लिए इस युद्ध को सफल बनाने के लिए इन्हीं महिला लड़ाकाओं का योगदान बहुत महत्वपूर्ण था। इसमें वह सफल भी रही। इन्हीं बहादूर महिलाओं के योगदान से इस क्रांति में लुहारों से परंपरागत साजों–समान (तीर, धनुष, भालें, दराती, कुल्हाड़ी, तलवारें, हंसिया, गंडासें आदि) लगातार बनवाकर दिए। जुलाहों ने वर्दी और चर्मकार ने चमडे की युद्धोपयोगी वस्तुएं बनाकर महिला दस्तें के हाथों आदिवासी वीरों तक पहुँचाते रहे, साथ ही फूलो और झानो ने इतनी बडी संख्या में जांबाजों के लिए रसद की सुचारू व्यवस्था गॉव वालों की मदद से पूरी करती रही थीं।

भागलपुर के दंडाधिकारी एच इ रिचर्ड्सन तथा ग्रामीण क्षेत्र के सुपरिटेंडेंट श्री पोप्नेट, जो उस वक्त अर्थात 30 जून 1855 को राजमहल में तत्कालीन रेलवे इंजीनियर के आवास पर शरण लेनी पड़ी। संथालों ने उनका घर घेर लिया गया और वह तब तक घिरा रहा जब तक सैन्य दल ने आकर उसे मुक्त नहीं करवाया।

सिदो–कान्हू के नेतृत्व में संथाल विद्रोहियों के दल पूरब दिशा में बढ़ते गये। उन्होंने अंबर राजा के राजमहल पर धावा बोल दिया। 12 जुलाई 1855 को अंबर राजा के दीवान जशवंत राय ने राज महल खाली कर दिया और उस पर सिदो–कान्हू का कब्जा हो गया। यहॉ पर सरकारी अधिकारी और रेलवे

के कर्मचारियों को बचाने के लिए 20 फुट चौड़ा 30 फुट लंबा और 30 फुट ऊंचा मोर्टिलों टावर का निर्माण करवाया गया था। जिसमें राष्ट्रीय पैदल सेना के सैनिको के दल को इसमें बंदूकों के साथ मोर्टिलों टावर में रक्षा के लिए चौकस रखा। मोर्टिलो टावर में छोटी–छोटी खिडकियाँ थी इसमें से देखकर सैनिक बंदूक का निशाना लगा सकते थें।

14 जुलाई की रात को उन लोगों ने राजभवन पर धावा बोल दिया। 15 जुलाई मुर्शिदाबाद के प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी टूगुड के नेतृत्व में राष्ट्रीय पैदल सेना के सैनिकों के दल के साथ संथाल विद्रोह का मुकाबला हुआ। इस लड़ाई में सिदो–कान्हू और भैरव गोली लगने से घायल हो गए।

आदिवासियों को स्वतंत्रता आंदोलन की भारी कीमत चुकानी पड़ी। अंग्रेजों के पास भारी संख्या में सुसज्जित सेना के साथ आधुनिक हथियार बंदूकें, तोपें, गोला और बारूद था। सामंतों के पास भी प्रशिक्षित पुलिस फोर्स थी। साहूकारों के पास धन दौलत की ताकत थी। इसके मुकाबले में आदिवासियों के पास युद्ध के परंपरागत साधन तीर, कमान, भालें, परसें और गंडासें थें। आदिवासी आर्थिक रूप से कमजोर थें। संसाधनों की कमी के कारण आदिवासियों को जानमाल की भारी क्षति उठानी पड़ी। फिर भी मुकाबला जबरदस्त था, इसी करण ईस्ट इंडिया कम्पनी के कई सैनिक और अधिकारी भी मारे गए। आदिवासियों के बढ़ते मनोबल को देखकर अंत में पूरे क्षेत्र को सेना को सुपुर्द करके मार्शल–लॉ (फौजी कानून) लागू कर दिया गया। अब सेना को क्रांतिकारियों को देखते ही तुरंत गोली मारने के आदेश दिए गए। ब्रिटिश हुकूमत के भारत में दो सौ वर्ष के शासनकाल में सबसे कठोर कानून इसी विद्रोह को कुचलने के लिए लागू किया गया था। देसी राजे–रजवाडों, सूदखोर, साहूकारों और ब्रितानी हुकूमत ने संथाल आदिवासियों का सरेआम जन नरसंहार किया। गॉव के गॉव जला दिये गयें। गॉव में और खेत–खलियानों में लाशों के अंबार लग गयें। धरती मॉ रक्तरंजित हो गयी।

तत्कालीन वायसराय ने संताल–हूल को दबाने के लिए हजारों की संख्या में अंग्रेजी फौजियों की बटालियन एवं कंपनी भेजी। उन्होंने संथाल परगना एवं आसपास के इलाकों में मार्शल–लॉ (सैनिक कानून) लागू कर दिया। इस मार्शल–लॉ के तहत अंग्रेजों ने समस्त जन–समुदायों के हर उम्र के लोगों पर अमानुषिक अत्याचार किए। विडंबना यह है कि इतिहास के पन्नों में इस मार्शल ला के दौरान किए गए नृशंस हत्याकांड के संबंध में कहीं कोई जिक्र नहीं मिलता जबकि मार्शल–लॉ के तहत लोगों पर हुए बेतहाशा शोषण और प्रताड़नाओं के जुल्मों–सितम के नासूरों का दर्द आज भी संथाली पुरखा गीतों में गुंज रहे हैं।

महेशपुर में पराजय होने के पश्चात सिद्धो कान्हू अपने सैन्य दल के साथ पुनरू बड़हैत की तरफ बढ़े। ब्रह्मपुर के दंडाधिकारी टुगुड संतालों का पीछा करते आ रहे थे। रास्ते में रघुनाथपुर और दोराई के विद्रोहियों का सामना टुगुड की फौजों से हुआ। लड़ाई में काफी संख्या में संथाल लड़ाका हताहत हुए। दंडाधिकारी टुगुड की जीत हुई। फिर उन्होंने संतालों के सुदृढ़ केंद्र बड़हैत पर आक्रमण किया तथा 24 जुलाई 1855 को अपने कब्जे में ले लिया। तत्पश्चात सिद्धो कान्हू का गांव जला दिया गया और आदिवासी समाज को भारी नरसंहार का सामना करना पड़ा।

6 अगस्त 1855 को तत्कालीन आयुक्त ब्राउन को हटाकर बिडवेल को विशेष आयुक्त नियुक्त किया गया। उन्होंने 17 अगस्त 1855 को विद्रोहियों को समर्पण करने की घोषणा की। इस घोषणा की अनदेखी और उल्लंघन ही संतालो के लिए क्रूर और नृशंस अत्याचार का कारण बना। अंग्रेजों के

प्रशंसकों ने भयाक्रांत होकर आंदोलन दबाने के लिए कठोर कदम उठाने की सलाह दी। 'फ्रेंड्स ऑफ इंडिया' के लेखक ने यहां तक सुझाव दिया कि क्रांति प्रभावित समस्त संताल विद्रोहियों को बर्मा भेज दिया जाए।

संतालियों को कुचलने के लिए बड़े ही निष्ठुर तरीके अपनाए गए। उनका पीछा किया जाता और फिर घायल कर मार दिया जाता। जिन्दा लोगों को गिरफ्तार किया जाता और कारागार की बेड़ियों में जकड़ कर अमानवीय यातनाओं से प्रताडित कर मार दिया जाता था। संताल बस्तियों को जला दिया जाता। स्त्रियां भी ऐसी सजा से मुक्त नहीं थी। उन्हें भी अमानुषिक कठोर दंड दिया जाता था।

संथाल–हूल क्रांति का दमन करने के लिए ब्रिटिश हुकूमत ने फरमान जारी किए कि 'जमीदारों को अपनी पूरी ताकत से विद्रोह का दमन करने के लिए कहा गया। बिहार और बंगाल के कार्यपालिका पदाधिकारियों को सरकार की संथाल परगना में सहायता करने का आदेश मिला'।

विद्रोह की बढ़त दामोदर घाटी और जीटी रोड के दक्षिण में होने की आशंका से उन्हें रोकने के लिए रामगढ़ लाइट हार्स 37 वीं रेजीमेंट के सैनिकों को रखा गया। इसके अलावा मुर्शिदाबाद की सरहद पर सातवीं और 31 वीं रेजिमेंट के सैनिक तैनात किए गए।

भागलपुर और कहलगांव की हिफाजत के लिए हिल रेंजर्स तथा 13वीं, 40 वीं और 42वीं रेजिमेंट के सैनिक तैनात किए गए।

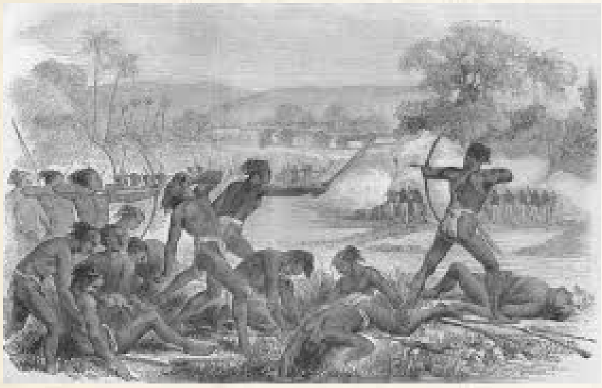

1 अगस्त 1855 को बौंसी (भागलपुर) की चुना कोठी में दत्ता पोखर के निकट एक मैदान में कैप्टन फ्रांसिस का मुकाबला संताल विद्रोहियों के साथ हुआ। इसमें अनेक संताल मारे गए। उनके गांवों को भी तहस–नहस किया गया। कान्हू के बारे में कहा जाता है कि हूल नायकों में सबसे खौफनाक व्यक्ति था चॉद और भैरव लड़ाई में शहीद हो चुके थे, लेकिन कान्हू ने हूल की कमान को अंत तक संभाले रखा।

विद्रोह का दमन करने के लिए जघन्य नरसंहार का परिणाम इस बात से मिलता है कि कमांडर मेजर जरबीस, जो संथाल विद्रोह के दमन करने की कमान संभाले हुए थे, के शब्दों में 'समूची लड़ाई के दौरान संताल कभी पीछे नहीं हटे, न ही कभी पीठ दिखाई। उनका राष्ट्रीय नगाड़ा तब तक बजता रहा जब तक हमने गोली मारकर उन्हें गिरा नहीं दिया। ऐसा नहीं है कि वह झुकने का अर्थ नहीं जानते थे। जब तक उनका राष्ट्रीय नगाड़ा बजता रहा, तब तक उनका पूरा का पूरा दल खड़ा रहता, मुकाबला करता और गोलियां खाता रहता। उनके तीरों से प्रायः हमारे लोग घायल हो जाते थे, मर जाते थे। इसलिए जब तक वह खड़े रहते, हम उन पर गोलियां बरसाते रहे थे, फिर उनके नगाड़े बजना बंद हो जाते। कोई एक चौथाई मील की दूरी पर फिर शुरू हो जाता और चुपचाप खड़े हो जाते। हम फिर उन पर गोलियों की बौछार करना शुरू कर देते। 'हमारी सेना में एक भी सिपाही ऐसा नहीं था। जो खुद पर शर्मसार ना हुआ हो। दमन के लिए अपनाए गए इस बर्बरता पूर्ण तरीके पर गौर करने के पश्चात हर कोई इस बात से सहमत होगा'।

सिदो–कान्हू को गिरफ्तार करने की जिम्मेदारी टुगुड को दी गई थी लेकिन प्रत्यक्ष रुप से आमने–सामने की लड़ाई में उन्हें गिरफ्तार करना आसान नहीं था, अतः उन्हें गिरफ्तार करने के लिए कई कूटनीतिक चालें चली गई। सिदो–कान्हू को पकडने या पता बताने वाले को 10 हजार की इनामी राशि देने की घोषणा का प्रचार सारे संथाल परगने में किया गया था। अंततः कुछ ही दिनों के पश्चात सिद्धो इस षड़यंत्र का शिकार हो गये और उनके अनुयायियों द्वारा भागलपुर के खोजी दस्ते के हाथ सौंप दिये गए। कई महीनों तक उन्हें कारागार में रखा गया। सिदो–कान्हू को कारगार से मुक्ति दिलाने के लिये उनकी दिलेर बहिनों के साथ महिला दल गुप्तचरी करके वहाॅ तक पहुँचने में कामयाबी हासिल कर ली और रात के समय फूलो और झानो सधे हुए पावों से कारगार में पहुँची गयी। कारगार में घनघोर अंधकार था अचानक अंग्रेज सैनिकों को आभास हो गया की कोई वहाॅ है उसने तुरंत हमलें की तैयार की, दोनों बहिनों ने वीरता और पराक्रम के साथ कुल्हाडी से खतरनाक वारों से उसी अंधकार में तेजी से ताबड़तोड वार करते हुए 21 सैनिकों को ढेर कर दिया। जांबाज फूलो, झानो ने अपने प्राण सिदो–कान्हू को बचाने में न्यौछावर कर दियें थें। वीर साहसी आदिवासी बेटियाॅ और उनकी सखियां कारागार में शहीद हो गयी। घटना के कुछ दिन बाद कान्हू को कारागार में फांसी दी गयी।

सिदो को फरवरी 1856 में उन्हें पुनः बड़हैत लाया गया तथा भारी भीड़ के सामने सरेआम फांसी दे दी गई। फांसी की तिथि 5 फरवरी 1856 बताई गई, लेकिन आधिकारिक तौर पर इसकी पुष्टि नहीं हो पाई है। जनश्रुति के आधार पर कानून को झिलीमिली मैदान में एक महुआ के पेड़ पर सरेआम फांसी दी गई थी। संथाल परगना गजेटियर में उल्लेख है कि जब उन्हें फांसी दी गई थी, तो उन्होंने कहा कि मरने के बाद शीघ्र ही वह नायक के रूप में प्रकट होंगे। सिर्फ उनकी इस भविष्यवाणी से अंग्रेज शासक इतना आतंकित हो गए थे कि उन्होंने सभी संवेदनशील स्थानों जैसे राज महल, रामपुर, हाट, सिउडी, भागलपुर आदि में कई सैनिक टुकडियाॅ तैनात कर दी थी। बुजुर्गों से यह जानकारी भी मिलती थी कि सिद्धो को फांसी से उतारने की बजाय वही जला दिया गया था और उनकी राख ईस्ट इडिया कंपनी के अधिकारी अपने साथ ले गए थे।

जिस क्रूरता के साथ हूल विद्रोह का दमन किया गया था। ब्रिटिश शासन काल के इतिहास में शायद ही ऐसा कोई उदाहरण होगा। जिसका उल्लेख बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तक बिहार में 1857 संथाल परगना गजट 1965 एल एल एल द्वारा लिखित बंगाल गजट में इस प्रकार मिलता है।

संथाल परगना की भूमि, खेतों एवं खलियानों में लाशों के ढेर बिछ गए। खून की बूंदों से धरती की परतें लाल हो गई। तोपों और बारूद की गूंज से संथाल परगना की धरती कॉप उठी। मार्शल–लॉ के दौरान हजारों संथाल–हूल के सेनानियों ने प्राण न्योछावर कर दिए। चांद और भैरव भी अन्य साथियों के साथ शहीद हो गए।

मार्शल–लॉ के समय युद्ध में पकड़े गये योद्धाओं को अंग्रेजों ने अंत में गोली का निशाना बनाया। आज भी उनकी अमर गाथा झारखंड के गिरि–कंदराहों में गूँजती है वह जन–जन के हृदय पर अंकित है गोदना में गुदी है और गीतों में पिरोंई गई हैं।

देशभर के आदिवासियों ने अंग्रेजो के खिलाफ अपनी स्वायत्तता की लड़ाई अलग–अलग लड़ी जो आगे चलकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की आधारशिला बनी। भारत के राष्ट्रीय आंदोलन को खड़ा करने में आदिवासी आंदोलनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही जिसे भारतीय इतिहासकारों ने नजरअंदाज

किया है। इस क्रांति में लगभग 60 हजार आदिवासी योद्धा हूल–संथाल क्रांति में भाग लियें थे। जिसमें 15 हजार वीर जाबांज आदिवासी योद्धाओं के शहीद होने के प्रमाण मिलते है जबकि देशभर में लाखों आदिवासियों ने स्वयत्तता बनाये रखने के लिए अपने प्राणों का अमर बलिदान दिया है। इस धरती के प्रथम नागरिक और मूल वाशिंदों के योगदान और बलिदान पर आज भी भारत का इतिहास मौन है। जो कहते है कि आजादी की पहली लडाई 1857 को मंगलपाण्डे से शुरू हुई लेकिन आप सभी को पता होना चाहिए कि मंगल पाण्डे ईस्ट इंडिया कंपनी का सैनिक था और वो अपने ही देश के स्थानीय लोगों को पीड़ित और प्रताड़ित करने को ही तैनात था। वह ब्रिटिश हुकूमत का स्वयं सरकारी नौकर था तो राष्ट्रीय आंदोलन में उसका क्या योगदान रहा और क्या बलिदान रहा ? जिसे इतिहास में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नायक के रूप में तथाकथित सभ्य मुख्यधारा के इतिहासकारों ने दर्ज किया है। यह अन्यायपूर्ण है। एशिया के सबसे बड़े जन आंदोलन हूल संथाल क्रांति के जांबाज योद्धाओं के योगदान और बलिदान को इतिहासकारों ने दर्ज क्यो नहीं किया ?

चुनका मुर्मू के वीर पुत्रो (सिदो, कान्हू, चॉंद, भैरव) पुत्रियॉं (फूलो और झालो) तथा 15 हजार आदिवासियों की शहादत को कभी ना सम्मान दिया गया, ना उन्हें शहीद का दर्जा। ऐसे में भारतीय इतिहास पर भी प्रश्न चिन्ह लग गए हैं। परंतु आज आवश्यकता है आदिवासियों की स्वतंत्रता आंदोलन में किए गए योगदान और बलिदान को उचित स्थान, सम्मान देने और प्रेरणा लेने की के साथ–साथ सार्वजनिक स्थलों पर आदिवासी शहीदों के स्मारक बनाये जाए। विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में शोध केंद्र स्थापित किए जाए। आदिवासी नायकों और क्रांतियों पर मीडिया की ओर से डाक्यूमेंटरी बनाकर प्रचारित प्रसारित की जाए जिससे आदिवासी अमर बलिदान की गाथां जन–जन तक पहुँचें।

हूल जोहार !! जय आदिवासी !! जय जोहार !!

गोकुलनन्दा बेहेरा,
वरि. प्रशासनिक अधिकारी,
प्रमाण और प्रायोगिक संस्थान

तकदीर

तकदीर के हर फैसले को
कब तक मैं चुपचाप सहूँ।
मैं बुद्ध नहीं जो संसार त्याग
जीवन के सत्य की खोज करूँ।
मैं कृष्ण नहीं जो प्रेम भूल कर
कर्म युद्ध में सारथी बनूँ।
मैं राधा नहीं जो हँसकर
विरह का हर दर्द सहूँ।
मैं मीरा नहीं जो भक्ति मार्ग पर
दुनिया के बंधन तज दूँ।
अर्जुन नहीं जो मोह छोड़ कर
गीता का ज्ञान समझ सकूँ।
अभिमन्यु नहीं जो चक्रव्यूह में
अंतिम सांस तक लड़ सकूँ।
मैं सुंदर, साधारण, जीवन
सुख दुख का मंथन करूँ।
कष्ट जब सहन न हो पायें
क्यों न मैं रब से प्रश्न करूँ।

शाश्वत ऊर्जा
इरेडा IREDA
एक बार इरेडा सदैव इरेडा

गिरीश चन्द्र शर्मा,
उप प्रबंधक,
इंडियन ऑइल कॉर्पोरेशन लि.

बदलाव

नंगे पांव रेड कार्पेट पे गरीब आया है,,।
'निश्चित ही मेरे देश में बदलाव आया है,।।'

अभी तक बन्द थे दरवाजे सत्ता के शीश महलों के,,।
आज एक आदिवासी आया है राष्ट्रपति भवन बिना चप्पलों के।।
गरीब आदिवासी महिला के समक्ष प्रधानमंत्री ने शीश नवाया है।
निश्चित ही मेरे देश में बदलाव आया है,,।।

एसी कमरों में बैठकर बुद्धिजीवी मजदूर का दर्द लिखता था,,।
बदाम चबाकर भूख पे लिखने वालो को पुरुस्कार मिलता था।।
बस स्टेंड पर संतरे बेचने वाले ने भी पद्म श्री सम्मान पाया है।
निश्चित ही मेरे देश में बदलाव आया है,,।।

गरीब किसान के दर्द का सब रोना रोते थे,,।
किसानहित की योजनाओं पे अफसर तकिया लगाकर सोते थे।।
आज किसान निधि में सीधे किसानों के खाते में पैसा आया है।
निश्चित ही मेरे देश में बदलाव आया है,,।।
बॉर्डर पर दुश्मन भेड़ियों के हाथों जवानों के सिर कट जाते थे,,।
और हम संयुक्त राष्ट्र संघ में शांति की रट लगाते थे,,।।
आज अभिनन्दन को सर झुकाकर पाक ने वापस लौटाया है।
निश्चित ही मेरे देश में बदलाव आया है,,।।

विदेशी सम्मेलनों के मंच पर हमारे पैर उखड़ जाते थे,,।
संयुक्त राष्ट्र में हम पुर्तगाल का भाषण पढ़ आते थे,,।।
आज अमेरिका रूस ने भी भारत के आगे सिर झुकाया है।
निश्चित ही मेरे देश में बदलाव आया है,,।।

हर दिवाली बॉर्डर पर खड़ा सिपाही खुद को अकेला पाता है।
आज प्रधानमंत्री खुद दिवाली मनाने बॉर्डर पर जाता हैं,,।।
प्रधानमंत्री के साथ दिवाली मनाकर सैनिकों का दिल मुस्कुराया है।
निश्चित ही मेरे देश में बदलाव आया है,,।।

जितेन्द्र मिश्रा

पिता

'पिता जो ठहरे, बस मुस्कुराते है'

जो थके ना कभी जो रुके ना कभी,
जो चिंताओं के आगे झुके ना कभी।

संतान का अंबर संतान का संबल,
संतान की खुशियां संतान का बल।

मुश्किलों का पहाड़ भी एक पिता के आगे खुद को छोटा पाता है,
कम तनख्वाह में हर जरूरत को पूरा करने का हुनर पिता को ही आता है।

सपनों का बस एक ठिकाना रहता पिता के पास में,
पालन–पोषण, स्नेह, सुरक्षा सब पिता जी के पास में।

बच्चों को बर्फी भी मिलती और दवाई भी है पास में,
मॉ की बिंदिया का पता रहता है पिता के पास में।

सारे रिश्ते पिता निभाते बिना थके वो दौड़े जाते,
सबकी खातिर कुछ ना कुछ रहता है पिता के पास में।

कभी कभी दिल की कहते कहते वो रुक जाते हैं,
वो भी भावुक होना चाहते हैं लेकिन पिता जो ठहरे, बस मुस्कुराते हैं, बस मुस्कराते है ....

प्रतीक साव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
एमएसटीसी लिमिटेड
(उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय)

आजादी के अमृत महोत्सव में राजभाषा

आज जब हम आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत के स्वतंत्रत तथा विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र होने का गौरव प्राप्त कर रहे है, तो ऐसे समय में भारत की अखण्डता और एकता के लिए एक भाषा नीति की अनिवार्यता बढ़ जाती है। जिससे पूरी भारतीय संस्कृति को एक धागे में पिरोया जा सके। ऐसे में फिर से वही भाषिक समस्या हमारे सामने खड़ी हो जाती है जिसके लिए कई वर्षों से हम प्रयास कर रहे हैं। मैं स्पष्ट इशारा करना चाहता हूँ– "राजभाषा" की ओर

आज आजादी के अमृत महोत्सव में हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा जो हमारी अंतरराष्ट्रीय पहचान और हमारे एक भारत श्रेष्ठ भारत के सपने को साकार कर सकती है। भाषिक आधार पर कई बार ऐसे नियम बनाए जाते रहे हैं। जिससे की राजभाषा का विकास हो सके परंतु इस बार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा एक ऐसे वैज्ञानिक तथा सैद्धांतिक मनोवैज्ञानिक उपाय को खोजा गया है जिसके द्वारा राजभाषा का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है तथा भारत सरकार एवं उसके उपक्रमों में तथा इकाइयों में कार्यरत कर्मियों में हिंदी के प्रति प्रेम भाव को जागृत कर बिना किसी दबाव के उन्हें हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है जिसे हम 12 "प्र" का सिद्धांत कहते हैं।

माननीय प्रधानमंत्री "श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी" जी के स्मृति विज्ञान से प्रभावित होकर माननीय गृहमंत्री के सफल मार्गदर्शन तथा माननीय राज्यमंत्री "श्री नित्यानंद राय" जी के प्रेरणा से राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय ने 12 "प्र" की कल्पना की है। उनकी यह धारणा है कि इन 12 "प्र" से राजभाषा का सफल विकास हो सकता है। इन 12 "प्र" को हम निम्नलिखित शीर्षकों में देख सकते हैं–

1. प्रेरणा 2. प्रोत्साहन 3. प्रेम 4. प्राइस अर्थात पुरस्कार 5. प्रशिक्षण 6. प्रयोग 7. प्रचार 8. प्रसार 9. प्रबंध 10. प्रमोशन अर्थात पदोन्नति 11. प्रतिबद्धता 12. प्रयास

राजभाषा अर्थात् राजकाज की भाषा होती है। अर्थात् वह भाषा जिसका प्रयोग सरकार आम जनता के लिए करती है। संविधान सभा ने 14 अगस्त 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया है। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार

के कार्यालयों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग किया जा सके। तब से आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में यह संस्था हिंदी को बढ़ावा देने का कार्य कर रही है। परंतु वर्ष 2021 में हिंदी राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए जिन 12 "प्र" की कल्पना की गई है, वह सराहनीय है। इन 12 "प्र" में से पहला ष्प्रष् ष्प्रेरणाष् है "प्रेरणा" कहने का तात्पर्य किसी कार्य को करने के लिए अपने अंदर एक दिव्य शक्ति उत्पन्न करना है। "प्रेरणा" के फलस्वरुप हम किसी कार्य को करने के लिए अपने अंदर एक प्रकार की चुनौती को पैदा करते हैं। राजभाषा विभाग को ऐसा लगता है कि यदि हम हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित हो तो हिंदी राजभाषा का मार्ग प्रशस्त होगा साथ ही साथ कार्यालयों के उच्च अधिकारी भी हिंदी में काम करें, ताकि उसे उन्हें देखकर अन्य अधिकारी और कर्मचारी भी हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित हो।

इस क्रम में दूसरा "प्र" "प्रोत्साहन" से है। मानव स्वभाव की विशेषता है कि उसे समय–समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी में काम करने के लिए भी यदि निरंतर प्रोत्साहन मिलते रहे, तो यह निश्चित है कि अधिकारी कर्मचारी उस भाषा में काम करना चाहेंगे, जिससे उनका मनोबल तो ऊँचा होगा ही कार्य करने की क्षमता भी बढ़ती जाएगी।

इस क्रम में तीसरा "प्र" "प्रेम" से संबंध रखता है। संसार में जीवन का मूल आधार ही प्रेम है, जैसा कि हम जानते हैं कि मनुष्य पशु नहीं है उसे मारपीट कर उससे जोर–जबरदस्ती कोई कार्य नहीं करवाया जा सकता है जबकि मारपीट और प्रताड़ना के स्थान पर यदि उसे प्रेम मिले और उसे प्रेम भाव से यह कहा जाए कि वह कार्यालय में हिंदी में काम करें तो उसका मनोबल भी दृढ़ होगा और वह नई ऊर्जा के साथ कार्यालय में काम करेगा। आज पूरे विश्व में हिंदी को प्रेम के नजर से देख रहा है, ऐसी स्थिति में हिंदी की उन्नति के लिए नितांत आवश्यक है कि हिंदी के प्रति प्रेम का भाव कार्यालय में भी रहे जिससे राजभाषा का कार्यान्वयन और सरल हो पाएगा।

इस क्रम में चौथा "प्र" "प्राइस" अर्थात "पुरस्कार" से संबंध रखता है, जैसा कि हम जानते हैं कि मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसके हृदय के किसी न किसी कोने में हमेशा लालसा व्याप्त रहती है। अतः वह लालच के फलस्वरुप कार्यालय में हिंदी का कार्य जरूर करेगा। अतः गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा कृति पुरस्कार राजभाषा गौरव पुरस्कार जैसे कई अन्य पुरस्कार दिए जाते हैं। जिन पुरस्कारों से प्रभावित होकर अधिकारी और कर्मचारी हिंदी में काम करते हैं।

पाँचवा "प्र" "प्रशिक्षण" से संबंध रखता है। कार्यालय की एक समस्या यह भी है कि कार्यालय में काम करने वाले बहुत से अधिकारी कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान ही नहीं है। अतः ऐसी स्थिति में वह हिंदी में काम करने में वे असमर्थ है। फलस्वरुप ऐसी स्थिति में उन लोगों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है और आत्मनिर्भर भारत की ओर भारत मुखर हो ऐसा प्रयास किया जा रहा है।

इस क्रम में छठे "प्र" का अर्थ "प्रयोग" से लिया जाता है। प्रशिक्षण मिलने के बाद प्रशिक्षण तब तक सफल नहीं हो पाता जब तक कि हम प्रशिक्षण का प्रयोग नहीं कर लेते। अतः भारत सरकार गृह मंत्रालय का हिंदी प्रशिक्षण विभाग इस तरह से हिंदी का प्रशिक्षण दे रहा है कि उस हिंदी का प्रयोग सामान्य कार्यालय कार्यों में होता रहे। फलस्वरुप बार–बार प्रयोग में आने के कारण शब्द याद रहते हैं और लंबे समय तक स्मृति में रहेंगे।

सातवें "प्र" का संबंध "प्रचार" से है। संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व

सौंपा है। जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृहमंत्री जी राजभाषा के ब्रांड एंबेसडर के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश–विदेश के मंचों पर हिंदी का प्रयोग कर वे राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा रहे हैं। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीति सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रचलन प्रबल था। क्योंकि इसका अंतर प्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले से होता आ रहा है और आगे भी होता रहना चाहिए।

इस क्रम में आठवाँ "प्र" "प्रसार" से जुड़ा हुआ है। राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों की जिम्मेवारी है। सभी संस्थाओं का यह दायित्व है कि वह संविधान द्वारा दिए गए दायित्व का पालन करते हुए राजभाषा का प्रचार प्रसार करें जिससे आने वाले कुछ वर्षों के अंदर राजभाषा अपने पूर्ण दायित्व को प्राप्त कर लें और शत–प्रतिशत कार्यालयों के कार्य केवल मात्र हिंदी भाषा में ही हो। इस सफलता को पाने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा उनकी वेबसाइट पर कई सारी प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है। जिससे राजभाषा का प्रसार हो सके।

इस क्रम में नवां "प्र" "प्रबंधन" से संबंध रखता है। इस आधार पर कोई भी चीज कितने दिन चलेगी या उसकी आयु कितनी होगी यह उसके प्रबंधन पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊंचाइयों तक ले जाता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजभाषा के लिए अनेक नियम, अधिनियम एवं संवैधानिक प्रावधानों की व्यवस्था की गई है। जिससे राजभाषा को प्रबंधन प्राप्त हो सके।

इस संबंध में दसवां "प्र" "प्रमोशन" या "पदोन्नति" से संबंधित है। राजभाषा के कार्यो में तभी लोग अधिक ऊर्जावान होकर भाग लेंगे जब निश्चित रूप से केंद्र सरकार के कर्मचारी और अधिकारियों को राजभाषा के पद पर रहते हुए निरंतर और निश्चित समयावधि में पदोन्नति या प्रमोशन मिलता रहे। समय–समय पर प्रमोशन पदोन्नति मिलने पर निश्चित रूप से उनका मनोबल बढ़ेगा और इच्छाशक्ति में वृद्धि होगी जिससे वह अपना कार्य लगन और परिश्रम से कर पाएंगे।

ग्यारहवां "प्र" "प्रतिबद्धता" से संबंधित है। राजभाषा हिंदी को और बल देने के लिए मंत्रालय के शीर्ष नेतृत्व (माननीय मंत्री महोदय, सचिव, संयुक्त सचिव, अध्यक्ष और महाप्रबंधक) की प्रतिबद्धता परम आवश्यक होती है। माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सुझाव अनुसार और राजभाषा विभाग के अनुभव से यह पता चलता है कि जब शीर्ष नेतृत्व हिंदी के प्रगामी प्रयोग में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, तो उसे देखकर अन्य लोग भी उदाहरण स्वरूप उसे अपनाते हैं। साथ ही साथ लोगों को अपने कार्यों के प्रति प्रतिबद्ध भी होनी चाहिए हमें पूर्ण रूप से यह निश्चित कर लेना चाहिए कि हम केवल मात्र हिंदी में ही कार्य करेंगे अन्य किसी सहायक भाषा में नहीं। ऐसा करने पर निश्चित ही हिंदी का विकास होगा।

इस क्रम में अंतिम तथा 12 वां "प्र" "प्रयास" है। राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक सफल बनाने के लिए प्रयास अत्यधिक जरूरी है।

"लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।"

यदि हम लगातार राजभाषा को अपने उत्कर्ष तक पहुँचाने के लिए प्रयास करते रहेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब राजभाषा अपने उपेक्षित सफलताओं को प्राप्त करके कार्यालय में शत–प्रतिशत प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा में शामिल हो जाएगी।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा यह संवैधानिक दायित्व होता है कि राजभाषा संबंधी सभी अनुदेशकों का पालन करते हुए हम राजभाषा का सम्मान करें तथा यह सुनिश्चित करें कि राजभाषा का प्रयोग ठीक ढंग से होता रहे। मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि यदि हम इन 12 "प्र" का प्रयोग करेंगे तो राजभाषा कार्यान्वयन और अधिक प्रभावी और सफल होगा। देश को सही दिशा और दशा देने के लिए तथा एक भारत श्रेष्ठ भारत, सुदृढ़ भारत, आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए राजभाषा का सुदृढ़ होना अति आवश्यक है।

रमेश चंद
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

गर्व

आज राहुल बहुत खुश था। सुबह सवेरे बहुत जल्दी खुद से उठकर, नहा धोकर तैयार भी हो गया था नहीं तो हमारी श्रीमती जी को उसे स्कूल के लिए तैयार करने में पसीने छूट जाते थे। श्रीमती जी भी खुश थी कि आज उन्हें राहुल को स्कूल के लिए तैयार करते समय होने वाली परेशानियों से मुक्ति मिल गई थी। आज राहुल की स्कूल में पीटीएम थी। आज उसको स्कूल यूनिफार्म के बजाय रंग बिरंगे परिधान पहनने को मिले थे। आज उसका मन खुब हिचकोले मार रहा था। राहुल मन ही मन सोच रहा था कि पीटीएम के बाद पापा को कह के कैंटीन से समोसे खाएगा, आईसक्रीम भी खाएगा और पढनें से छुट्टी मिलेगी सो अलग। हमारी श्रीमती जी भी बहुत समय लगाकर तैयार हो रही थी। वह तय नही कर पा रही थी कि आज वो कौन सी साड़ी पहने। रोज–रोज घर पर ही रहना होता है, कभी भी साड़ियों को पहनने का अवसर ही नही आता था। दिल की हसरत दिल में ही रह जाती थी। आज सारे अरमान पूरे करने को आतुर हो रही थी। सब अपने में मगन थे। किसी को हमारा कुछ ख्याल नही था। आखिर में हम सब स्कूल जाने के लिए घर से निकल गये। आज स्कूल बस में न जाकर राहुल अपने पापा की कार से जा रहा था। बहुत खुश हो रहा था कि आज उसे अपने सहपाठियों के ऊपर रौब जमाने का अवसर जो मिला था। सबको बताएगा कि वो आज अपने पापा की कार से स्कूल आया है। कितनी सुंदर कार है, कितना प्यारा उसका रंग है। सीट पर बैठो तो महसूस होता है कि मखमली गद्दे पर बैठे हो। इसकी हर चीज उसको बहुत प्यारी लग रही थी। धीरे धीरे हम स्कूल के पास आ रहे थे। हमें स्कूल के पास गाड़ी खड़ी करने के लिए जगह नही मिली। जैसे–तैसे कहीं स्कूल के पास ही गाड़ी को लगाना चाहा कि स्कूल के गार्ड ने बड़े ही सख्त लहजे में हमें वहाँ गाड़ी खड़ी न करने के लिए कहा। अब हमारे पास कोई और चारा न था बल्कि हमें अपनी गाड़ी स्कूल से काफी दूर लगानी पड़ी। राहुल का चेहरा उतर गया। दोस्तों पर गाड़ी का धौंस जमाने का मौका अपने हाथ से फिसलता हुआ उसे साफ दिख रहा था। गाड़ी पार्क करके स्कूल तक आने में राहुल के जूते जो कि आज उसने खुद से खुशी–खुशी खुब चमकाए थे, धूल से भर गये थे। गर्मी के कारण श्रीमती जी भी पसीना–पसीना हो रही थी। उसको भी हमारा गाड़ी दूर खड़ी करना अच्छा नही लगा। तब उन्होंने देखा कि ज्यादातर लोग अपने बच्चों और फैमिलि को स्कूल के पास उतारकर खुद गाड़ी पार्क करके आ रहे थे। राहुल और उसकी मम्मी को हमसे गिला–शिकवा करने

का अच्छा मौका मिल गया। राहुल ने कहा क्या पापा आप की वजह से मेरे जूते धूल से भर गये और मम्मी को देखो कितना पसीना आ रहा है। आपके दिमाग में इतनी सी बात नहीं आई कि हमें गेट के पास उतार देते। राहुल की खुशी को एक और चोट लगी जब उसने देखा कि जिन बच्चों पर वो रौब जमाने की सोच रहा था वो बच्चे उनसे भी बड़ी गाड़ी से उतर रहे थे। कितनी सुंदर, कितनी बड़ी और चमचमाती गाड़ियों से ज्यादातर बच्चे आ रहे थे। राहुल का मन रोने को हो आया। घर से चला था कितना खुश था, बालमन भी कैसा होता है। उसको अपने पापा की गाड़ी ही सबसे अच्छी है का भ्रम टूट गया था।

स्कूल गेट पर रजिस्टर में एंट्री करने के बाद वो सब स्कूल के अंदर दाखिल हुए। राहुल बड़े ध्यान से पापा को देख रहा था जब वो उसके स्कूल के गेट रजिस्टर में एंट्री कर रहे थे। हिन्दी में अपना नाम, घर का पता, राहुल की कक्षा और अंत में अपने हस्ताक्षर भी उन्होंने हिन्दी में ही किये थे। पूरे पेज पर राहुल को अपने पापा द्वारा भरा गया डाटा ही दिख रहा था, जो कि हिन्दी में था बाकि सबने अंग्रेजी में पूरी डिटेल भरी थी। उसके पापा के द्वारा डिटेल भरने के तुरंत बाद उसकी कक्षा का ही विनोद अपने पापा–मम्मी के साथ आया और उसके पापा ने उनकी और विनोद की डिटेल गेट रजिस्टर में उनकी एंट्री के बाद भरनी शुरू की। राहुल को तो काटो खून नही। विनोद उसके पापा द्वारा हिन्दी में डिटेल भरने की बाद पूरी कक्षा को बताएगा। सब उसकी हंसी उडाएंगे। राहुल के मन में हीन भावना घर करने लगी। पहले ही वह गाड़ी के कारण असहज था और उसपर अब यह उसके पापा द्वारा हिन्दी में डिटेल भरना। उसका मन अब पीटीएम में जाने के लिए उत्सुक नहीं था। वहाँ से कहीं दूर भाग जाऊ ऐसा उसके मन में बार–बार ख्याल आ रहा था। लेकिन उसके पापा और मम्मी आगे–आगे जा रहे थे। उन्होंने देखा कि राहुल पीछे छूट गया है तो उन्होंने मुड़कर राहुल को जल्दी–जल्दी आने को कहा।

राहुल की कक्षा के बाहर अभिभावकों की टीचर्स से मिलने के लिए कतार लगी थी। राहुल भी अपने पापा–मम्मी के साथ खड़ा हो गया। अब वो अपने पापा–मम्मी के साथ होकर भी उनके साथ नहीं था। वो अपने पापा–मम्मी की और बच्चों के पापा–मम्मी से तुलना करने में लग गया। विनोद के पापा ने कितनी सुंदर घड़ी पहनी है, दिनेश की मम्मी के गले का हार देखों सबसे अलग ही दिख रहा है, लाखों का तो होगा ही और एक मेरी मम्मी है कि मामूली सा काले मोतियों का हार पहन कर आई है। ओह! राधा के पापा–मम्मी भी खड़े है। राधा के पापा कैसे हीरो लग रहे है, काला चश्मा, क्लीन शेव, हीरो के जैसे कपड़े और राधा की मम्मी भी बिल्कुल हिरोईन लग रही है, कैसे कंधे तक कटे हुए बाल कितने चमक रहे हैं और मेरी मम्मी कितना बालों में तेल लगा कर आई है कि सारे बाल चिपके से लग रहे है। अभी जाने वो और कितने ही सहपाठियों के पापा–मम्मी से अपने पापा–मम्मी की तुलना कर देता, उससे पहले ही टीचर ने उनको बुला लिया और उन्हें थोड़ा इंतजार करने को कहा क्योंकि उनसे पहले विनोद के पापा–मम्मी अभी टीचर के साथ व्यस्त थे। राहुल ने देखा कैसे विनोद के पापा और मम्मी टीचर से अंग्रेजी में बाते कर रहे थे और साथ बैठा विनोद राहुल को देख कर मुस्करा रहा था मानों कह रहा हो कि देखो मेरे पापा–मम्मी हमारी टीचर से अंग्रेजी में बात कर रहे हैं और अब आपके पापा को देखूंगा कि कैसे बात करते है। फिर सोचा कि देखना क्या है उन्होंने तो गेट रजिस्टर में सारी डिटेल हिन्दी में भरी है तो यहाँ क्या खाक अंग्रेजी बोलेंगे। राहुल चाह रहा था कि जब उसके पापा–मम्मी टीचर से बातें करे तो विनोद और उसके पापा–मम्मी वहाँ से चले जाएं। जैसे ही राहुल अपने पापा–मम्मी के साथ टीचर के सामने बैठा तो टीचर विनोद से बोल बैठी

कि अभी आप अपने पापा–मम्मी के साथ यहीं पास वाले बेंच पर बैठ जाए। हमसे बातचीत होने के बाद वो विनोद के पापा–मम्मी से कुछ और बात करना चाहती है। राहुल जो सोचे बैठा था कि यह बाहर चले जाएंगे तो कितना अच्छा होगा। उसके पापा–मम्मी ने टीचर से कैसे बात की है उसको पता नहीं चलेगा और बाद में वो उन्हें बताएगा कि उसके पापा–मम्मी ने टीचर से खूब अंग्रेजी में बात की। लेकिन यहाँ तो बिल्कुल उल्टा ही हो गया। खैर जैसे कि उसने सोचा था, बिल्कुल वैसा ही हुआ। उसके पापा–मम्मी ने टीचर को प्रणाम किया और हिन्दी में ही सारा वार्तालाप किया। राहुल ने देखा कि उसकी टीचर उसके पापा से बात करते हुए बहुत खुश लग रही थी और बाते करते–करते वो मुस्करा भी रही थी। मेरे पापा–मम्मी और टीचर बाते करते हुए बहुत सहज लग रहे थे। तभी अचानक हमारे स्कूल का चपरासी भागता हुआ आया और हमारी टीचर को बुलाया और कुछ कहा। हमारी टीचर हमारे पापा–मम्मी से क्षमा याचना करते हुए प्रिंसिपल के पास चली गई। हम वहीं बैठे रह गए। हमारे साथ–साथ विनोद भी अपने पापा–मम्मी के साथ वहीं पास के बेंच पर बैठा था। विनोद राहुल को घूर रहा था और मंद–मंद मुस्करा रहा था जैसे कि कह रहा हो कि देखो मेरे पापा कितनी अच्छी अंग्रेजी बोलते हैं और तुम्हारे पापा गुड मार्निंग भी नही बोल पाए। राहुल ने इरादा कर लिया था कि आगे से वो अपने पापा–मम्मी को बताएगा ही नही कि उसके स्कूल में पीटीएम है और उन्हें आना है। राहुल अभी ऐसा कुछ सोच ही रहा था कि उसकी टीचर भागी–भागी कक्षा में आई। उसके हाथ में 25–30 पेज थे। राहुल ने देखा कि उन सब पर अंग्रेजी में कुछ लिखा हुआ था। टीचर को यह ध्यान भी नही रहा कि हम लोग अभी भी कमरे में बैठे हैं। बस वो उन पन्नों को घूरती जा रही थी। विनोद के पापा बोल बैठे कि टीचर कोई परेशानी है तो बताएं। हम इसका समाधान खोज लेंगे। राहुल यहाँ भी अपने पापा पर खीज गया। क्या वो पहले हमारी टीचर से यह सब नही पुछ सकते थे। हमेशा पीछे ही रहते हैं। देखो टीचर विनोद के पापा को कितना अच्छा समझेगी और मेरे पापा, अब मैं उनकी क्या बात करूं। राहुल ने देखा कि विनोद के पापा कैसे उन अंग्रेजी के पन्नों को देख रहे थे और जैसे कह रहे हो कि मैं टीचर की समस्या का हल चुटकियों में कर दूंगा। राहुल के पापा कुछ बोल पाते कि टीचर ने ही बोलना शुरू कर दिया। वो बहुत परेशान लग रही थी जैसे मानों उनपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पडा हो। उन्होंने बताया कि उनके स्कूल का उच्च अधिकारियों द्वारा आज शाम को निरीक्षण होना तय हो गया है। इसकी सूचना तो प्रिंसिपल को दो दिन पहले ही भिजवा दी गई थी। चूंकि वो छुट्टी पर थी और आज ही ज्वाईन किया था तो पता चला। प्रिंसिपल ने राहुल की टीचर को यह 25–30 पन्नों का अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करने के लिए कहा। आज ही हिन्दी टीचर भी छुट्टी पर है। सो अब राहुल की टीचर तय नहीं कर पा रही हैं कि वो इसको कैसे करें। आज शाम को निरीक्षण के दौरान यह अनुवाद निरीक्षण करने वाले उच्च अधिकारियों को दिखाना है। उनके लिए स्वागत भाषण भी प्रिंसिपल की तरफ से राहुल की टीचर को ही तैयार करना है।

राहुल ने देखा कि उसकी टीचर का चेहरा उतर गया था। ऐसा लगता था कि मानों अभी रो देगी। टीचर ने विनोद के पापा को बड़ी हसरत भरी निगाहों से देखा कि शायद वो उनकी कुछ मदद कर पाए क्योंकि पीटीएम के दौरान वो बहुत बड़ी–बड़ी हॉक रहे थे जिससे राहुल बहुत प्रभावित था। विनोद के पापा ने अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करने में अपनी असमर्थता जताई। राहुल के पापा बहुत बारीकी से सब देख रहे थे। विनोद के पापा टीचर से औपचारिक विदा लेकर बाहर चले गए। टीचर भूल गई कि उन्होंने तो विनोद के पापा को कुछ बताने के लिए रोका था। टीचर को कुछ समझ नहीं आ रहा था। जाने क्या सोच कर टीचर राहुल के पापा से हेल्प के लिए नही कह पाई। राहुल सोचने

लगा कि पापा तो सिर्फ हिन्दी बोल रहे थे इसिलिए शायद टीचर सोच रही होंगी कि यह क्या अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद कर पाएंगे। अच्छा हुआ कि टीचर ने पापा को नही कहा अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करने के लिए, वर्ना यहाँ भी हमें शर्मिंदा होना पडता। राहुल ने देखा कि उसके पापा खड़े हुए और टीचर के पास जाकर बोले कि क्या वो उन पन्नों को देख सकते है। राहुल सोच रहा था कि आज तो यह अपनी और हम सबकी बेइज्जती करवा कर ही रहेंगे। हिन्दी बोलने वाले क्या अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करेंगे। टीचर ने वो पन्ने राहुल के पापा को दे दिए। राहुल के पापा ने उनको ध्यान से देखा और सोचने लगे। राहुल ने मन ही मन सोचा कि क्या जरूरत थी बैठे बिठाए मुसीबत मोल लेने की। वो सोच रहा था कि उसके पापा भी अभी उसकी टीचर को इस काम के लिए मना कर देंगे। राहुल के लिए यह घोर आश्चर्य था कि उसके पापा ने उसकी टीचर को कहा कि आप चिंता न करें। बस उनको कुछ समय दे दें। टीचर की तो जैसे जान में जान आ गई। उन्होंने राहुल के पापा को एक कंप्यूटर दिलवा दिया ताकि वो उस पर अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद कर सकें। राहुल के पापा ने टीचर से पूछा कि क्या इन पन्नों पर जो भी लिखा है, वह सब भी कंप्यूटर में टाईप है या नहीं। टीचर ने बताया कि यह तो उन्हें इसी प्रकार मिला है। अब राहुल के पापा ने कंप्यूटर पर अंग्रेजी में ही टाईप करना शुरू कर दिया। राहुल, राहुल की मम्मी और टीचर सभी परेशान थे कि हमें तो इसका हिन्दी अनुवाद करना है और ये तो अंग्रेजी में ही टाईप कर रहे है। राहुल के पापा ने कहा आप चिंता न करें आपका काम हो जाएगा। टीचर ने राहुल के पापा–मम्मी एवं राहुल के लिए भी चाय और समोसे मंगवा लिए। अब राहुल बहुत खुश था कि टीचर उसके पापा को कितना मान दे रही है और कितनी मधुरता से बात कर रही है। राहुल के पापा को वो 25–30 पेज टाईप करने में करीब 2 घंटे लग गए। थकान उनके चेहरे पर देखी जा सकती थी फिर भी वो टीचर की मदद कर रहे थे। राहुल जो सोच कर आया था सब उससे उल्टा हो रहा था। आखिर राहुल के पापा ने वो सब पेज अंग्रेजी में टाईप कर दिए। टीचर और राहुल सोच रहे थे कि इसको टाईप करने में 2 घंटे लग गए और हिन्दी करने में तो ज्यादा समय लगेगा। तभी उन्होंने देखा कि उसके पापा जो अंग्रेजी में टाईप किया था उसको काला करने लगे। वो सब हैरान कि इतनी मेहनत से तो टाईप किया था और अब उसे काला कर रहे हैं। टीचर फिर से परेशान दिख रही थी। सबकी हैरानी का ठिकाना न रहा जब उसी अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी लिखा हुआ देखा। इसी प्रकार राहुल ने देखा कि उसके पापा ने सभी पन्नों को काला करके हिन्दी बना दिया। राहुल सोच रहा था कि उसके पापा तो जादूगर है। जिन 25–30 पन्नों को टाईप करने में उनको 2 घंटे लगे थे, उनको काला जादू करके राहुल के पापा ने 15–20 मिनट के अंदर हिन्दी का कर दिया था। राहुल की टीचर की तो खुशी का कोई ठिकाना न था। राहुल के पापा ने सभी पन्नों का प्रिंट निकाल कर टीचर को दे दिया तथा कहा कि वो एक बार सब को ध्यान से पढ लें तथा कोई त्रुटि होने पर उनको बता दें। टीचर जितना हिन्दी अनुवाद को पढ़ती जा रही थी उतनी ही हैरान भी होती जा रही थी कि राहुल के पापा ने यह जादू कैसे कर दिया। राहुल के पापा ने टीचर से कहा कि वो निरीक्षण में आने वाले उच्च अधिकारियों के नाम भी बता दें ताकि वो उनको उनके लिए स्वागत भाषण भी बना कर दे दें। राहुल के पापा अभी स्वागत भाषण बना ही रहे थे कि टीचर जल्दी से कमरे से बाहर चली गई। थोड़ी देर बाद टीचर वापिस आई तो उनके साथ राहुल के स्कूल की प्रिंसिपल भी थी तथा कुछ और टीचर्स भी थी। राहुल के पापा ने उनके लिए स्वागत भाषण भी तैयार कर दिया था। सभी ने राहुल के पापा का तालियों से स्वागत किया तथा प्रिंसिपल ने सभी के सामने राहुल के पापा की तारीफ की तथा आभार व्यक्त किया और उनके द्वारा किए गए

इस सहयोग को अमूल्य बताया। फिर उन्होंने पूछा कि उन्होंने अंग्रेजी से हिन्दी कैसे किया। राहुल के पापा ने बताया कि यह उन्होंने गूगल ट्रांसलेट की मदद से किया। उनके अनुरोध करने पर राहुल के पापा ने सबको इसकी जानकारी दी। उन्होंने राहुल के पापा से वायदा लिया कि वो एक दिन अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद पर उनके स्कूल में सभी टीचर्स के लिए एक सत्र लें जिसे राहुल के पापा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। अब राहुल अपने पापा–मम्मी के साथ घर वापिस आ गया। अब राहुल को सभी टीचर्स और बच्चे बहुत प्यार देने लगे। प्रिंसिपल भी राहुल से उसके पापा के बारे में पूछती रहती थी।

समय बीतता गया। फिर से स्कूल में पीटीएम थी। आज राहुल को कार का भी लालच नहीं था, जूते चमकाने की भी जरूरत महसूस नहीं की उसने। राहुल की मम्मी भी बहुत उत्सुक नहीं थी कि कोई अच्छी सी साड़ी पहने क्योंकि गाड़ी तो दूर ही खड़ी करनी पड़ेगी, राहुल के जूते धूल से भर जाएंगे और राहुल की मम्मी पसीने से तर–बतर हो जाएंगी। फिर भी वो सब तैयार होकर स्कूल को गये। जैसे ही वो लोग स्कूल के गेट तक पहूंचे तो स्कूल के गार्ड ने उसके पापा को सैल्यूट किया और कहा कि वो अपनी कार को स्कूल के गेट के पास ही खड़ी करें। स्कूल की प्रिंसिपल ने उनके लिए कार पार्किंग की जगह खाली रखने के लिए कहा था। गाड़ी पार्क करके जैसे ही वो लोग गेट के अंदर आए तो स्कूल की प्रिंसिपल और सारा स्टाफ उनके स्वागत के लिए खड़ा था। उनके लिए स्कूल बैंड तैयार था। उनपर फूलों की बरसात की गई और फूलमालाओं से उनका स्वागत किया गया। स्कूल बैंड ने बैंड बजाकर उनका स्वागत किया। स्कूल की प्रिंसिपल उनको एक हाल में ले गई जहाँ स्कूल के सारे छात्र एवं शिक्षक मौजूद थे। राहुल के पापा–मम्मी को चीफ गेस्ट की तरह ऊपर स्टेज पर ले जाया गया। जहाँ फिर से उनका स्वागत किया गया। प्रिंसिपल ने वहाँ मौजूद सभी को राहुल के पापा के द्वारा पिछले पीटीएम के दौरान की गई सहायता के बारे में बताया। सभी ने तालियाँ बजाकर अपना आभार व्यक्त किया। प्रिंसिपल ने बताया कि उसी मदद के कारण उनके स्कूल को बेस्ट स्कूल ऑफ द ईयर का खिताब दिया गया है और पूरे शहर के 50 स्कूलों में से उनके स्कूल को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है क्योंकि उच्च अधिकारियों ने वही 25–30 पेज सभी स्कूलों को दिए थे अनुवाद के लिए। सबसे सही और अच्छा अनुवाद उन्हीं के स्कूल का था। तब उन्होंने राहुल के पापा से अनुरोध किया कि वो अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद पर सबके लिए सत्र लें जिसकी व्यवस्था उन्होंने इसी हाल में कर रखी है। एक तरफ बड़ी सी स्क्रीन लगी थी जिसे एक कंप्यूटर से जोडा गया था। राहुल के पापा आज अपने साथ एक पैन ड्राईव लाए थे जिसे उन्होंने कंप्यूटर से जोड़ दिया तथा अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद पर सत्र लेना शुरू किया और तभी राहुल ने देखा कि स्क्रीन पर ई–टूल्स लिखा हुआ आया जो कि उसके पापा कंप्यूटर के द्वारा भेज रहे थे। राहुल के पापा बहुत अच्छी अंग्रेजी भी बोल रहे थे और हिन्दी अनुवाद भी बता रहे थे। राहुल ने पापा को इतनी अच्छी अंग्रेजी बोलते आज पहली बार सुना था। ऐसा राहुल ने पहले कभी नही देखा था कि कंप्यूटर से स्क्रीन पर भी कुछ भेजा जा सकता है। राहुल के पापा ने वहाँ उपस्थित सभी को ई–टूल्स के महत्व के बारे में बताया और विभिन्न प्रकार के ई–टूल्स के बारे में जानकारी भी दी। उन्होंने हिन्दी में बोलकर उसे स्क्रीन पर उभरता हुआ भी दिखाया। यह हिन्दी में बोलकर टाईप करना था। उसी प्रकार उन्होंने अंग्रेजी में छंउेंजम लिखा जो कि हिन्दी का नमस्ते बन गया। सभी यह जानकर बहुत हैरान थे कि ऐसा भी हो जाता है। अंत में प्रिसिंपल ने राहुल के पापा का मंच पर उपहार देकर स्वागत किया। उसके बाद सभी पीटीएम के लिए चले गए। पीटीएम के दौरान राहुल की टीचर तो बहुत ही खुश थी क्योंकि उन्होंने बताया कि प्रिसिंपल ने उनको पदोन्नति दी है और यह सब राहुल के पापा के कारण था।

आज पीटीएम से आते हुए राहुल बहुत गर्व महसूस कर रहा था क्योंकि उसके पापा आज उसके लिए सबसे बड़े हीरो थे। पूरे हाल में सब उसके पापा को ही देख रहे थे। कितने ध्यान से उनके सत्र को सुन रहे थे और उनके द्वारा अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के नये–नये तरीके देख कर अचंभित हो रहे थे। आज राहुल को उनके अंग्रेजी के बजाय हिन्दी में बात करना ज्यादा अच्छा लग रहा था। राहुल को समझ आ गया था कि मातृभाषा ही सबसे अच्छी भाषा है। उसने भी सोच लिया था कि अब वो अनावश्यक ही अंग्रेजी नहीं बोलेगा क्योंकि वो अंग्रेजी को सिर्फ रौब डालने वाली भाषा समझता था जो कि आज उसका मिथ्या दूर हो गया था। आज वो बड़े गर्व के साथ अपना सीना चौड़ा किए अपने पापा–मम्मी के साथ घर को वापिस जा रहा था।

मनीष कुमार देव
प्रबंधक
निजी ऊर्जा एवं प्रकिया संयत्र

"मित्रता" - एक अनमोल "रतन"

"मित्रता" एक अनमोल "रतन", तोल न पाए कोई धन।
ऊंच–नीच का भाव न जिसमें, निज–मन देखे शुभ पर–मन।
रिश्ते–नाते सारे जग के , कुछ झूठे, कुछ तो हैं सच्चे।
पर मित्रता की बात जुदा है, रिश्तों मे वह, शीर्ष खड़ा है।
शुभ मित्रता न छलके ऊपर, छुपी रहे यह उर के भीतर।
यह शीतल निर्झर के जैसा, जीवन में खुशियाँ दे जाता।
मित्रता की है एक ही भाषा, बिन बोले, हो प्रकट अभिलाषा।
पर मित्रता की कड़ी कसौटी, न चल पाए, मुद्रा खोटी।
मित्र ही मित्र का साथ निभाए, पाए दोष, कटु–वचन सुनाए,
पथ भ्रमित, शुभ राह दिखाए, विकट–काल हर फर्ज निभाए।
मित्र सुदामा–कृष्ण सरीखे, कपि–सुग्रीव श्रीराम के जैसे।
मित्र बिना हर शाम अधूरा, जीवन का आयाम अधूरा ,
मित्र बिना यह जीवन ऐसा, बिना रंग के चित्र हो जैसा।
"मित्रता" एक अनमोल "रतन", शुभ–मन पाये ऐसा "धन"।

ज्ञान प्रकाश रंजन
मुख्य मानव संसाधन
हिंदुस्तान प्रीफब लिमिटेड

गर्मियों के मौसम के डाइट

गर्मी के मौसम मे हमे संतुलित भोजन करना चाहिए। इस मौसम मे न तो अधिक खाना चाइए न ही कम। गरमियों मे अधिक खाने से अपच की शिकायत होती है। मौसम बदलने से खानपान मे भी बदलाव लाते रहना चाहिए। इससे मौसमी बीमारियों से बचाव किया जा सकता है। समर वेजीटेबल के अलावा अन्य बातों को ध्यान में रखें।

करेलाः करेले मे प्रोटीन , फास्फोरस, कैल्सियम आदि पाये जाते है। इसलिए गर्मी मे इसके काफी फायदे है।

- दस्त , हैजा आदि होने पर करेले के जूस में थोड़ा पनि और काला नमक मिलाकर सेवन करने से तुरंत लाभ मिलता है।
- अस्थमा के मरीजों को बिना मसाले के करेले का सेवन करने से तुरंत लाभ मिलता है।

लौकीः लौकी का सेवन करने से कब्ज दूर हो जाता है।

- हैजा होने पर लौकी के जूस में नीबू का रस मिलाकर पीना चाहिए।
- लौकी को उबालकर उसमे हल्के मसाले मिलकर पीने से काफी फायदेमंद होता है।
- डायरिया होने पर लौकी के जूस मे नमक और शक्कर मिलाकर पीने से काफी लाभ होता है।

परवलः परवल मे प्रचुर मात्रा मे विटामिन व मिनेरल्स पाया जाता है।

- परवल के सेवन से शरीर की जलन व गर्मी दूर होती है।
- परवल की सब्जी खाने से पेट की सूजन दूर होती है।
- पित्त के कारण होने वाले बुखार मे परवल और जौ का काढ़ा पीने से तुरंत आराम मिलता है।
- परवल में फाइबर होता है। इसका सेवन करने से लिवर की समस्या दूर हो जाती है।

पुदीनाः पुदीना मे प्रचुर मात्रा मे विटामिन ए पाया जाता है।

- हैजे व दस्त के कारण जब अधिक कष्ट हो तो पुदीने का सेवन करने से अधिक लाभ मिलता है।
- पुदीना और तुलसी का काढ़ा बनाकर पीने से मौसमी बुखार दूर हो जाता है।

ककढ़ीः गर्मी के मौसम मे इसका सेवन करने से शरीर की गर्मी दूर हो जाती है।

- गर्मी के कारण अगर त्वचा लाल हो गई हो या उसमें जलन महसूस हो रही हो तो इसे खाने से या पीसकर लगाने से तुरंत राहत मिलती है।

- ककड़ी के बीज को पीसकर इसका सेवन करने से गर्मी से राहत मिलती है। साथ ही थकान भी दूर होती है।
- इसको पीसकर शक्कर के साथ मिलाकर पीने से एनेर्जी लेवेल बढ़ता है।

नीबू: गर्मी के मौसम मे इसका शर्बत बनाकर पीने से तुरंत ठंडक मिलती है।

- नीबू का सेवन करने से शरीर की गर्मी शांत होती है। भोजन की रुचि बढ़ती है व पाचन मे मदद मिलती है।
- नीबू का सेवन करने से अन्य बीमारियों से बचाव किया जा सकता है।

इरेडा
IREDA

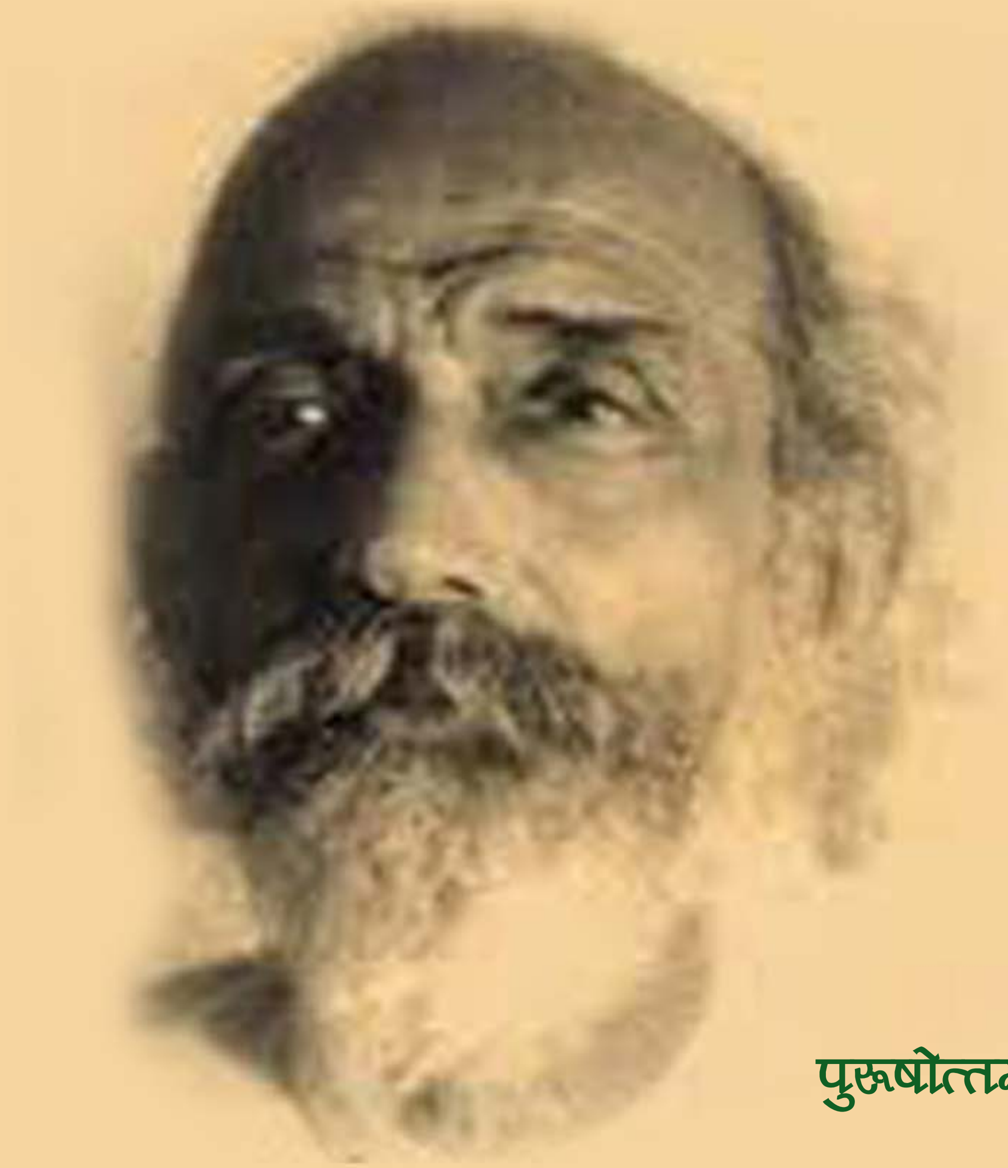

पुरूषोत्तम दास टंडन

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।

वर्तमान हरित पावर के प्रोत्साहन से
भारत का कल होगा ऊर्जावान

शाश्वत ऊर्जा
ENERGY FOR EVER

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा सदैव इरेडा

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
Indian Renewable Energy Development Agency Ltd.
(**भारत सरकार का प्रतिष्ठान**/A Govt. of India Enterprise)